- जीएसटी युक्तिसंगत बनाने से खपत में तेजी
- 12

- कमजोर प्रवासन नीतियां राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा : ट्रंप
- 13

- भारत-इंडोनेशिया मुक्त, शांतिपूर्ण व समृद्ध हिन्द प्रशांत के लिए प्रतिबद्ध
- 13

- दीप्ति शर्मा तीन करोड़ 20 लाख रुपये में यूपी वारियर्स में लौटी
- 14

6th वार्षिकोत्सव विशेषांक
मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

अमृत विचार

मुरादाबाद

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण
लखनऊ बरेली कानपुर
मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष अष्टमी 12:15 उपरांत नवमी विक्रम संवत 2082

शुक्रवार, 28 नवंबर 2025, वर्ष 6, अंक 241, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

विश्व विजेता बेटियों को सम्मान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को हाल ही में पहला टी-20 विश्वकप जीतने वाली भारतीय महिला दृष्टिबाधित क्रिकेट टीम की सदस्यों से मिले। इस दौरान मोदी ने उन्हें मिठाई खिलाकर बधाई दी और उनके लिए एक गेंद पर हस्ताक्षर भी किए।

अंतरिक्ष क्षेत्र में उम्मीदें जगा रहे हैं 300 से ज्यादा स्टार्टअप

मोदी ने स्काईरूट के रॉकेट का अनावरण किया, नई प्रौद्योगिकी तैयार करने के लिए जेन जी को सराहा

हैदराबाद, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बृहस्पतिवार को अंतरिक्ष स्टार्टअप स्काईरूट के पहले ऑर्बिटल रॉकेट का अनावरण किया और नई प्रौद्योगिकियां तैयार करने के लिए जेन जी पेशेवरों की तारीफ की। प्रधानमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से हैदराबाद में 'स्काईरूट इन्फिनिटी कैंपस' का उद्घाटन किया। कंपनी का 'आर्बिटल रॉकेट विक्रम-1' उपग्रहों को कक्षा में स्थापित कर सकेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जेन जी इंजीनियर, डिजाइनर, कोडर और वैज्ञानिक नई प्रौद्योगिकियां तैयार कर रहे हैं। मोदी ने अपने संबोधन में सरकार के ऐतिहासिक अंतरिक्ष सुधारों को रेखांकित करते हुए कहा कि अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए खोलने के परिणामस्वरूप स्काईरूट और अन्य इकाइयां इस तरह के नवाचारों के साथ सामने आई हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि वर्तमान में भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी क्षेत्र तेजी से उभर रहा है। 300 से ज्यादा अंतरिक्ष स्टार्टअप इस क्षेत्र को नई उम्मीदें दे रहे हैं। उन्होंने कहा, इन्फिनिटी कैंपस भारत की नई सोच, नवाचार और विशाल युवा शक्ति का प्रतिबिंब है। युवाओं का नवाचार, जोखिम उठाने की क्षमता और उद्यमिता नई ऊंचाइयों को छू रही है।

मोदी ने कहा, भारत की निजी अंतरिक्ष प्रतिभा दुनिया में अलग पहचान बना रही है। भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षण बन रहा है। दुनिया में छोटे उपग्रहों की मांग तेजी से बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि साइकिल पर रॉकेट के पुर्जे ढोने से लेकर दुनिया के सबसे विश्वसनीय प्रक्षेपण यान विकसित करने तक भारत ने साबित किया है कि सपनों की ऊंचाई संसाधनों से नहीं बल्कि दृढ़ संकल्प से तय होती है।

अंतरिक्ष में रॉकेट लॉन्च करने वाली पहली भारतीय निजी कंपनी है स्काईरूट

स्काईरूट इन्फिनिटी कैंपस एक अत्याधुनिक केंद्र है, जिसमें लगभग 2,00,000 वर्ग फुट का कार्यक्षेत्र है और बहु-प्रक्षेपण यान के डिजाइन, विकास, एकीकरण और परीक्षण के लिए हर महीने एक आर्बिटल रॉकेट बनाने में सक्षम है। स्काईरूट भारत की अग्रणी निजी अंतरिक्ष कंपनी है, जिसकी स्थापना पवन चंदना और भरत ढाका ने की है, जो भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) के पूर्व-छात्र, इसरो के पूर्व वैज्ञानिक और अब उद्यमी हैं। नवंबर 2022 में, स्काईरूट ने अपना सब-ऑर्बिटल रॉकेट, विक्रम-एस का प्रक्षेपण किया, जिससे वह अंतरिक्ष में रॉकेट लॉन्च करने वाली पहली भारतीय निजी कंपनी बन गई।

ब्रीफ न्यूज

वारपोरा में जामिया इस्लामिया इंस्टीट्यूट पर पुलिस का छापा

श्रीनगर। प्रतिबंधित संगठन जमात-ए-इस्लामी से जुड़े सदस्यों और संगठनों के खिलाफ गुरुवार को की गई कार्रवाई के तहत हंदवारा पुलिस ने वारपोरा में जामिया इस्लामिया इंस्टीट्यूट पर छापा मारा। पुलिस के मुताबिक तलाशी के दौरान कई इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस, दस्तावेज और रिकॉर्ड जब्त किए गए हैं। ऑपरेशन का मकसद संस्थान के कार्यों की जांच करना और प्रतिबंधित जमात से इसके संभावित जुड़ाव की पुष्टि करना है। पुलिस ने कहा, आतंकवाद के तंत्र को तोड़ने के लिए भविष्य में भी ऐसे अभियान जारी रहेंगे।

दिल्ली विस्फोट: मुख्य आरोपी बिलाल वानी 7 दिन की रिमांड पर

श्रीनगर। एनआईए ने गुरुवार को दिल्ली कार बम विस्फोट के मुख्य आरोपी जसीर बिलाल वानी को सात दिन की रिमांड पर ले लिया। दिल्ली की एक स्पेशल कोर्ट ने वानी को सात दिन की हिरासत में भेजने का फैसला किया। दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले के काजीगुंड के रहने वाले वानी को एनआईए ने 17 नवंबर को श्रीनगर से गिरफ्तार किया था। एजेंसी का दावा है कि वानी ने आतंकवादी गतिविधियों के लिए ड्रोन में टेक्निकल बदलाव किए और रॉकेट बनाने की भी कोशिश की ताकि उनका इस्तेमाल हमलों में किया जा सके।

दिव्यांगों का अपमान रोकने को एससी-एसटी जैसा सख्त कानून बनाने पर विचार करे केंद्र

शीर्ष कोर्ट ने दिया निर्देश, सूचना प्रसारण मंत्रालय ने दिया जल्द ही नियम बनाने का आश्वासन

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने दिव्यांगजनों की गरिमा की रक्षा के लिए एक सख्त कानून की आवश्यकता पर जोर दिया और बृहस्पतिवार को केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि वह दिव्यांगजनों के खिलाफ उनका मजाक उड़ाने वाले और अपमानजनक बयान देने वालों के खिलाफ एससी/एसटी एक्ट जैसा दंडनीय कानून बनाने पर विचार करे।

एससी/एसटी एक्ट, 1989 अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों के लोगों के खिलाफ किए जाने वाले जातिसूचक अपशब्दों, भेदभाव, अपमान और हिंसा को अपराध मानता है तथा इस कानून के तहत ऐसे मामले गैरजमानती होते हैं। सीजेआई सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने केंद्र की ओर से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से कहा, एससी-एसटी अधिनियम में जातिसूचक टिप्पणियों को अपराध माना गया है और सजा का प्रावधान है, उसी तरह का कठोर कानून आप दिव्यांग लोगों के लिए क्यों नहीं ला सकते। मेहता ने भी कोर्ट की इस टिप्पणी की सराहना की।

पीठ को सूचना प्रसारण मंत्रालय ने बताया कि दिव्यांगों के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियों और उनका मजाक उड़ाने जैसे मामलों से निपटने के लिए कुछ दिशा-निर्देश तैयार किए जा रहे हैं। पीठ ने मंत्रालय से कहा कि वह इन्हें चर्चा के लिए सार्वजनिक करे। अगली सुनवाई चार सप्ताह बाद की जाएगी। सुप्रीम कोर्ट दुर्लभ 'स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी' रोग से पीड़ितों के लिए काम करने वाले 'मेसर्स एसएमए क्योर फाउंडेशन' की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमें 'इंडियाज गॉट लेटेंट' के होस्ट समय रैना और उसके सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर साथियों की ओर से किए गए मजाकिया बयानों को उठाया गया है।

दंड : दिव्यांगों की सफलता पर करने होंगे प्रोग्राम

पीठ ने हास्य कलाकार रैना और अन्य को भविष्य में आचरण के प्रति सावधान रहने का निर्देश देते हुए दिव्यांगजनों की सफलता की कहानियों के बारे में हर महीने दो कार्यक्रम

आयोजित करने का निर्देश दिया, ताकि दिव्यांगों, विशेषकर एसएमए से पीड़ित लोगों के उपचार के लिए धन जुटाया जा सके। पीठ ने कहा कि यह सामाजिक दंड का हिस्सा है और उन्हें अन्य दंडात्मक उपायों से छूट दी गई है। उन्हें दिव्यांगों के बारे में उनके असंवेदनशील चुटकुलों के लिए क्षतिपूर्ति के रूप में ऐसा करने के लिए कहा गया है। सीजेआई ने कहा कि इन्फ्लुएंसर्स एसएमए जैसी दुर्लभ बीमारियों के पीड़ितों को समय पर उपचार प्रदान करने के मकसद से धन जुटाने के लिए अपने मंचों पर सक्षम व्यक्तियों को आमंत्रित कर सकते हैं।

एसआईआर पर कोर्ट ने पूछा सवाल...

क्या आधार रखने वाले घुसपैठियों को भी वोट देने का अधिकार मिलना चाहिए

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एसआईआर प्रक्रिया की संवैधानिक वैधता पर सुनवाई के दौरान गुरुवार को पूछा, क्या ऐसे लोग जो गैरकानूनी तरीके से भारत में आए हैं और जिनके पास कल्याणकारी योजनाओं के लाभों को लेने के लिए आधार कार्ड हैं, उन्हें भी वोट देने का हक होना चाहिए। सीजेआई सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने अलग-अलग राज्यों की याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए यह बात कही।

यह टिप्पणी पश्चिम बंगाल और केरल की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल के इस तर्क के बाद आई कि आधार कार्ड होने के बावजूद मतदाताओं को बाहर रखा जा रहा है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने साफ किया कि आधार का मकसद इसे बनाने वाले कानून के तहत योजनाओं का लाभ पाने तक सीमित है। उन्होंने पूछा, मान लीजिए कि पड़ोसी देशों से लोग यहां आते हैं और यहां रिक्शा चलाने या मजदूरी करने लगते हैं। अगर आप आधार कार्ड इसलिए जारी करते हैं ताकि उन्हें सब्सिडी वाला राशन मिल सके, तो यह हमारे संवैधानिक मूल्यों के हिसाब से है। लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि क्योंकि उन्हें यह फायदा दिया गया है तो अब उन्हें वोटर भी बना देना चाहिए।

बिहार में मतदाता सूची से नाम हटाने को लेकर जताई गई चिंताओं पर सीजेआई ने कहा कि बड़े पैमाने पर मीडिया कवरेज ने एसआईआर प्रक्रिया को पूरे राज्य में मशहूर कर दिया है। अगर दूरदराज के इलाकों के लोगों को जानकारी थी कि नई लिस्ट आ रही है तो क्या कोई कह सकता है कि उन्हें पता नहीं था। अधिवक्ता सिब्बल की इस बात पर कि एसआईआर प्रक्रिया का बोझ मतदाताओं पर नहीं पड़ना चाहिए और सॉफ्टवेयर फर्जी मतदाताओं का असरदार तरीके से पता लगा सकता है, न्यायमूर्ति बागची ने कहा कि तकनीकी उपकरण मृत मतदाताओं की पहचान नहीं कर सकते।

कार-पिकअप की टक्कर में महिला और बेटा-बेटी समेत छह की मौत

कार्यालय संवाददाता,संभल

अमृत विचार: निर्माणाधीन गंगा एक्सप्रेसवे पर कार और सब्जी से भरी एक पिकअप की भिड़ंत में छह लोगों की मौत हो गई। इनमें एक महिला और उसके बेटा-बेटी शामिल हैं। महिला का पति और दूसरा बेटा भी गंभीर रूप से घायल हो गए। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार के परखचे उड़ गए और उसमें सवार लोग फंस गए। पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से घायलों को निकालकर अस्पताल भेजा।

अमरोहा के कस्बा आदमपुर आदमपुर के रहने वाले रोहित के भतीजे डेविड का नामकरण बहजोई के गांव बिसारु में था। रोहित के परिवार के लोग इस कार्यक्रम में शामिल होकर कार से लौट रहे थे। जल्दी गांव पहुंचने के लिए उन्होंने बहजोई से निर्माणाधीन गंगा एक्सप्रेस वे का रास्ता चुना। धतरा गांव के निकट सामने से गलत साइड पर तेज रफ्तार आ रही सब्जी से लदी पिकअप ने कार को जोरदार टक्कर मार दी। दुर्घटना में कार चकनाचूर हो गई। जानकारी मिलते ही अपर पुलिस अधीक्षक कुलदीप सिंह के साथ आसपास थानों का पुलिस बल पहुंच गया। पुलिस ने ग्रामीणों के साथ कार में फंसे लोगों को निकालकर जिला अस्पताल पहुंचाया जहां रोहित की 32 वर्षीय पत्नी रेनू, 9 साल के बेटे भास्कर और 7 साल की बेटी रिया के साथ 29 साल की भाभी गीता पत्नी सुनील, 12 साल के भांजे कपिल पुत्र किशन पाल निवासी चंदौसी तथा 34 वर्षीय देववती पत्नी सत्यपाल को मृत घोषित कर दिया गया। रोहित और दूसरा पुत्र जय भी गंभीर घायल हुए जिन्हें दोनों को हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। डीएम डॉ. राजेंद्र पैंसिया भी घटनास्थल पर पहुंचे। (संबंधित पेज-8)

हादसे के बाद बुरी तरह क्षतिग्रस्त कार।

- पति और दूसरे बेटे की भी हालत गंभीर, हायर सेंटर रेफर किया गया
- नामकरण संस्कार में शामिल होकर लौट रहा था अमरोहा का परिवार

मेडिकल कॉलेजों से जुड़े रिश्वतखोरी मामले में 10 राज्यों में ईडी के छापे

नई दिल्ली, एजेंसी

- राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग और स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों पर हैं रिश्वतखोरी के आरोप

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बृहस्पतिवार को देश के कुछ मेडिकल कॉलेजों से जुड़े रिश्वतखोरी और नियामक ढांचे में हेरफेर के मामले में धनशोधन जांच के तहत दस राज्यों में एक साथ छापेमारी की। अधिकारियों के मुताबिक जिन स्थानों पर छापे मारे गए हैं, उनमें मेडिकल कॉलेजों के सात परिसर और कुछ निजी लोगों के ठिकानें शामिल हैं। मामला राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय समेत कई सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देने के आरोपों से संबंधित है।

ईडी की टीमों ने बृहस्पतिवार को आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में लगभग 15 स्थानों पर एक साथ छापे मारे और तलाशी लेना शुरू किया। अधिकारियों ने बताया कि यह कार्रवाई धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत की जा रही है। इसी मामले में सीबीआई ने 30 जून को प्राथमिकी दर्ज की थी, जिसमें आरोप था कि मेडिकल कॉलेजों के निरीक्षण से संबंधित गोपनीय जानकारी मेडिकल कॉलेजों से संबंधित प्रमुख प्रबंधकीय व्यक्तियों और बिचौलियों को देने के बदले में राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) के अधिकारियों सहित कई सरकारी अधिकारियों को रिश्वत दी गई थी। इससे उन्हें मापदंडों में हेरफेर करने और मेडिकल कॉलेजों में शैक्षणिक पाठ्यक्रम चलाने के लिए अनुमोदन प्राप्त करने में मदद मिली।

विंजो के दो संस्थापकों को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली/बेंगलुरु। ईडी ने ऑनलाइन गेमिंग मंच विंजो की संस्थापक सौम्या सिंह राठौर और पावन नंदा को धनशोधन के आरोप में गिरफ्तार किया है। एजेंसी के जोनल कार्यालय में बुधवार को पूछताछ के बाद उन्हें बेंगलुरु में गिरफ्तार किया गया। उन्हें उसी रात बेंगलुरु की एक अदालत में पेश किया गया जहां से उन्हें एक दिन की हिरासत में भेज दिया गया। ईडी की ओर से सोमवार को जारी एक बयान में कहा गया था कि कंपनी ने 43 करोड़ रुपये अपने पास रखे थे, जिसे आदर्श रूप से 'गेमर्स' को वापस किया जाना चाहिए था क्योंकि भारत ने हाल ही में वास्तविक धन वाले गेमिंग (आरएमजी) पर प्रतिबंध लगा दिया था।

असम में बहुविवाह पर प्रतिबंध का रास्ता साफ

गुवाहाटी, एजेंसी

- विधानसभा में पारित हुआ विधेयक, एसटी व छठी अनुसूची में आने वाले क्षेत्र दायरे में नहीं

असम विधानसभा ने बहुविवाह पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक विधेयक बृहस्पतिवार को पारित किया, जिसके तहत इसे अपराध माना जाएगा और कुछ अपवादों को छोड़कर इसके लिए अधिकतम 10 वर्ष की कैद हो सकती है। विधेयक में अनुसूचित जनजाति (एसटी) श्रेणी के लोगों और छठी अनुसूची के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों को कानून के दायरे से बाहर रखा गया है।

असम बहुविवाह निषेध विधेयक, 2025 के पारित किए जाने के दौरान मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि यह कानून धर्म से परे है और इस्लाम के खिलाफ नहीं है जैसा कि एक वर्ग द्वारा माना जा रहा है। शर्मा के पास गृह और राजनीतिक विभागों का भी प्रभार है। उन्होंने कहा, हिंदू भी बहुविवाह से मुक्त नहीं हैं। यह हमारी भी जिम्मेदारी है। इस विधेयक के दायरे में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और सभी अन्य समाजों के लोग आएंगे। मुख्यमंत्री द्वारा सभी विपक्षी सदस्यों से अपने-अपने संशोधन वापस लेने का अनुरोध किया गया ताकि सदन में यह संदेश जाए कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए विधेयक सर्वसम्मति से पारित हो गया है। शर्मा के अनुरोध के बावजूद ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (एआईयूडीएफ) और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) ने अपने संशोधन सुझाव आगे बढ़ाए, जिन्हें ध्वनि मत से खारिज कर दिया गया।

86,000 पर पहली बार सेंसेक्स

मुंबई, एजेंसी

आईटी, निजी बैंकिंग और वित्तीय कंपनियों में लिवाली से गुरुवार को घरेलू शेयर बाजारों में लगातार दूसरे दिन तेजी रही। इस दौरान बीएसई के सेंसेक्स पहली बार 86,000 अंक के अपने शिखर तक पहुंचा। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी-50 सूचकांक पहली बार 26,300 अंक तक पहुंचने में कामयाब रहा।

बाजार की शुरुआत गुरुवार को बढ़त के साथ हुई और बीच कारोबार में एक समय सेंसेक्स 446 अंक उछलकर 86,055.86 अंक पर पहुंच गया था। अंत में यह 110.87 अंक की बढ़त में 85,720.38 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी-50 सूचकांक भी बीच 105 अंक चढ़कर 26,310.45 अंक पर पहुंचा, लेकिन अंत में 10.25 अंक ऊपर 26,215.55 अंक पर बंद हुआ।

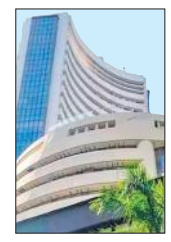

- निफ्टी भी पहली बार 26,300 के अंक तक पहुंचने में कामयाब
- आखिर में सेंसेक्स 85,720 और निफ्टी 26,215 पर हुआ बंद

- दोनों सूचकांकों के लिए ये दूसरे सबसे ऊंचे बंद स्तर हैं। इससे पहले इनका ऐतिहासिक उच्चतम स्तर 24 सितंबर 2024 को दर्ज किया गया था।

उद्गार

मुख्यमंत्री योगी ने गाजियाबाद के तरुण सागरम् तीर्थ मुरादनगर में गुफा मंदिर का किया शुभारंभ

भारत की परंपरा संतों-महापुरुषों के त्याग-बलिदान की गाथा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- बोले- राम मंदिर में पूरी दुनिया ने भारत के सनातन वैभव को देखा

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत की परंपरा संतों, ऋषि-मुनियों व महापुरुषों के त्याग-बलिदान की महागाथा है। भारत के अंदर आज भी पवित्र उपासना विधियां श्रद्धाभाव के साथ कार्य करते हुए इस व्यवस्था को बढ़ा रही हैं।

कहा, तीन दिन पहले अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण कार्य को पूरा करने के महायज्ञ की पूर्णाहुति कार्यक्रम के साथ भगवा ध्वज का आरोहण संपन्न हुआ। देश के साथ पूरी दुनिया ने भारत के इस सनातन वैभव को देखा और अनुभव किया।

सीएम योगी गुरुवार को तरुण सागरम् तीर्थ, मुरादनगर (गाजियाबाद) पहुंचे। उन्होंने यहां पंचकल्याणक महामहोत्सव के अंतर्गत 100 दिन में निर्मित गुफा मंदिर का उद्घाटन किया। योगी ने भगवान पार्श्वनाथ जी और संत तरुण सागर जी महाराज का स्मरण किया। सीएम ने 'मेरी बिटिया' व 'अंतर्मना दिव्य मंगल पाठ' पुस्तक का विमोचन भी किया। योगी ने कहा कि ऋषि-मुनि परंपरा ने जो संदेश दिया है, हम उसे आत्मसात करते हैं तो यह विश्व मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने कहा कि आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज व उपाध्याय मुनि पीयूष सागर जी महाराज की दिनचर्या को देखा। 557 दिन की कठोर साधना, 496 दिन का निर्जल उपवास, तप, अनुशासन व आत्मसंयम का अद्भुत उदाहरण देखने को मिला है। यह चीजें दिखाती हैं कि यदि हम संकल्प ले लें तो जो कुछ हमें बाहर दिखाई दे रहा है, वह सब कुछ इस शरीर में अनुभव होते हुए भी दिखाई देगा। प्रसन्न सागर जी महाराज की साधना के माध्यम से यह देखने व अनुभव करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तरुण सागरम् तीर्थ में गुफा मंदिर का किया शुभारंभ।

सिक्योरिटी क्लियरेंस लेकर उद्घाटन की तैयारी करें

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को गौतम बुद्ध नगर के जेवर में निर्माणाधीन नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का निरीक्षण किया। इसके बाद उन्होंने शीघ्रातिशीघ्र सिक्योरिटी क्लियरेंस प्राप्त करने के साथ संबंधित एजेंसियों को उद्घाटन समारोह की तैयारियां पूरी करने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने पाया कि एयरपोर्ट को अभी तक एयरोड्रम लाइसेंस प्राप्त नहीं हुआ है। उन्होंने निर्देश दिया कि ब्यूरो आफ सिविल एविएशन सिक्योरिटी और सीआईएसएफ अधिकारियों के साथ समन्वय बनाकर सभी सुरक्षा मानकों को तत्काल पूरा किया जाए और शीघ्रातिशीघ्र सिक्योरिटी क्लियरेंस प्राप्त करने की प्रक्रिया पूरी की जाए।

- नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के निर्माण कार्यों की समीक्षा

अमृत विचार

मुरादाबाद , शुक्रवार, 28 नवंबर 2025

आज का मौसम

22.0⁰ अधिकतम तापमान

13.0⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.39

सूर्यास्त 05.16

न्यूज ब्रीफ

25 दिसंबर तक बनेंगे आयुष्मान कार्ड

मुरादाबाद, अमृत विचार : आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत जिले में 25 नवंबर से 70 वर्ष की उम्र से अधिक के लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाए जाने का विशेष अभियान शुरू हो गया है। यह अभियान 25 दिसंबर तक चलाया जाएगा। इस अवधि में उन सभी पात्र लोगों के आयुष्मान कार्ड तैयार किए जाएंगे, जिनके कार्ड अब तक नहीं बन पाए हैं। अभियान को ब्लॉक वार और ग्राम वार तरीके से संचालित किया जा रहा है। ताकि, अधिक से अधिक लोगों को योजना का लाभ मिल सके। सीएमओ डॉ. कुलदीप सिंह के अनुसार आशा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, फील्ड लेवल वर्कर, कोटेदार, पंचायत सहायक, स्वयं सेवक और सेल्फ हेल्प ग्रुप में जुड़े लोग अभियान में सक्रिय रूप से हिस्सा ले रहे हैं। टीमें जानकारी लोगों तक पहुंचाएंगी।

लीगल-डिफेंस काउंसिल में होगी दो पदों पर भर्ती

रामपुर, अमृत विचार : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश कुलदीप सिंह लीगल एंड डिफेंस काउंसिल में पूर्व में स्वीकृत पदों के अलावा एक डिप्टी एलएडीपी एवं 1 असिस्टेंट एलएडीसी की नियुक्त की जानी है। बताया कि इस मामले में अधिक जानकारी जनपद न्यायालय की वेबसाइट पर देख सकते हैं।

मिट्टी खनन बेखौफ जारी, ग्रामीण परेशान

ठाकुरद्वारा, अमृत विचार : क्षेत्र के करीब आधा दर्जन गांवों में इन दिनों अवैध मिट्टी खनन धड़ल्ले से जारी है। ग्रामीणों के विरोध और शिकायतों के बावजूद खनन माफिया बेखौफ होकर रोजाना जेसीबी और ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के माध्यम से मिट्टी निकाल रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि पुलिस की मिलीभगत के चलते खनन पर कोई रोक नहीं लग पा रही है। जमरावाला उर्फ फैजुल्लागंज, गैझाड़ा आलम,, फैजुल्लागंज, नन्हूवाला, अस्लेमपुर, निर्मलपुर, वैजनाथपुर सहित कई गांवों में खुलेआम खनन का खेल चल रहा है। भाकियू के राजेंद्र चौधरी, हरीराज सिंह, मनसा सिंह यादव ने उच्च अधिकारियों से जल्द रोक लगाने की मांग की है।

निर्माणाधीन नाले में भरे पानी में गिरकर बच्चे की मौत

कार्यालय संवाददाता, संभल

- ठेकेदार की लापरवाही से अधूरा पड़ा था नाला

अमृत विचार : बहजोई थाना क्षेत्र में जिला पंचायत द्वारा बनाए जा रहे निर्माणाधीन नाले में गिरकर तीन साल के बच्चे की मौत हो गई।

मृतक बच्चा।

गांव करीमपुर में जिला पंचायत ने प्रधान लाल सिंह के प्रस्ताव पर तीन वर्ष पहले नाले का निर्माण शुरू कराया था। ठेकेदार ने लापरवाही के चलते काम अधूरा छोड़ दिया। निर्माणाधीन नाले में पानी भरा था। गांव निवासी बिरलेश यादव का तीन साल का बेटा आदित्य यादव सुबह करीब नौ बजे खेलते-खेलते घर से बाहर निकल आया और निर्माणाधीन नाले में गिर गया। डूबने से उसकी मौत हो गई। काफी देर तक दिखाई नहीं दिया तो परिवार के लोगों ने तलाशना शुरू किया। बच्चा नाले में पड़ा दिखाई दिया तो उसे निकालकर जिंदगी की आस में डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर ने बच्चे को मृत घोषित कर दिया। बच्चे की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। मृतक बच्चे की दादी प्रेमवती देवी ब्लॉक पंवासा क्षेत्र के करीमपुर वार्ड की क्षेत्र पंचायत सदस्य हैं। परिजनों व ग्रामीणों ने जिला पंचायत ठेकेदार को मौत का जिम्मेदार बताया है। हालांकि कानूनी कार्रवाई नहीं की गई। इंस्पेक्टर संत कुमार ने बताया कि शिकायत मिलती है तो जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

रोजी रोटी पर संकट, श्रमिक संगठन मुखर

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार: लाकड़ी फाजलपुर स्थित एक फर्म में प्रबंधन द्वारा कर्मचारियों पर अवैध रूप से छंटनी और जबरन त्यागपत्र लेने के आरोप सामने आए हैं। कर्मचारियों और श्रमिक संगठनों ने जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर जल्द हस्तक्षेप की मांग की है।

गुरुवार को मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट पर पहुंचे कर्मचारियों का कहना है कि प्रतिष्ठान में 6000 से अधिक श्रमिक लंबे समय से कार्यरत हैं, लेकिन पिछले 10-15 दिनों से मैनेजर (एचआर) द्वारा लगातार दबाव डाला जा रहा है कि वे स्वेच्छा से त्यागपत्र दे दें, अन्यथा 20 नवंबर से उनकी सेवाएं समाप्त मान ली जाएंगी। श्रमिकों का आरोप है कि कंपनी के पास पर्याप्त एक्सपोर्ट ऑर्डर

कार्यालय में उपश्रम आयुक्त से वार्ता करते श्रमिक संगठनों के कार्यकर्ता व श्रमिक।

- प्रबंधन पर जबरन त्यागपत्र लेने का दबाव बनाने का आरोप, जिला प्रशासन को सौंपा ज्ञापन

मौजूद हैं और कर्मचारी रात दिन मेहनत कर उत्पादन में लगे हुए हैं, इसके बावजूद प्रबंधन छंटनी की तैयारी कर रहा है। आरोप यह भी है कि सेवायोजक ने छंटनी संबंधी अनुमति न तो शासन से ली है और न ही किसी प्रकार का नोटिस जारी किया है, जबकि श्रम कानून के अनुसार छंटनी से पहले नोटिस एवं कोरम-वार्ता अनिवार्य है। कर्मचारियों ने बताया कि बिना किसी पूर्व सूचना के छंटनी की तैयारी से मजदूरों में भय, रोष और असंतोष बढ़ रहा है।

कारखानों के मानक पूरे नहीं...मिल गई बिजली

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार: बिजली विभाग द्वारा नियम-कानून दरकिनार कर सैकड़ों ई-कचरा एवं सिल्ली गलाने वाले अवैध कारखानों को पावर सप्लाई कनेक्शन देने का मामला सामने आया है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की छापेमारी में यह खुलासा हुआ कि इन कारखानों को बिना रजिस्ट्री और बिना किरायानामा के ही विभाग के द्वारा विद्युत कनेक्शन दे दिए गए हैं।

रामगंगा नदी के किनारे विस्तृत नदी क्षेत्रफल में बने कई अवैध कारखाने और असंगठित यूनिट, जिनके पास न तो भवन की रजिस्ट्री है और न ही किसी प्रकार की स्वीकृत नक्शा स्वीकृत है, फिर भी इनको बिजली विभाग के

> कहीं ऐसे कनेक्शन दिए गए है तो उन्हें बिजली सप्लाई नहीं दी जाएगी जब तक वह प्रक्रिया पूरी न कर लें। कनेक्शन काटे जाएंगे पूर्व में दिए कनेक्शन में अब प्रक्रिया नहीं चल सकेगी।
> – प्रशांत कुमार, अधीक्षण अभियंता नगरीय

- प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की छापेमारी में बिजली विभाग की लापरवाही आई सामने

अधिकारियों की ओर से बिजली कनेक्शन जारी कर दिए गए। जबकि सामान्य नागरिक बिना रजिस्ट्री, किरायानामा या भूमि के संपूर्ण दस्तावेजों के बिना घरेलू या छोटे व्यावसायिक कनेक्शन के लिए आवेदन करते हैं तो उन्हें नियम-कानून और लंबी प्रक्रिया का हवाला देकर परेशान किया जाता है।

अंडे को रंग कर देसी बनाने का भंडाफोड़, गोदाम सील

खाद्य सुरक्षा विभाग ने 3,89,772 रुपये के अंडे जब्त किए

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : सहायक आयुक्त खाद्य सुरक्षा राजवंश प्रकाश श्रीवास्तव के निर्देशन व मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा अधिकारी की टीम ने काशीपुर रोड निकट रामपुर तिराहा बरवाड़ा मजरा स्थित अल्लाह खां के अंडा गोदाम पर छापेमारी की। यहां सफेद अंडे को रंग कर उसे देसी अंडा बनाने के कारोबार का भंडाफोड़ हुआ। टीम ने 3,89,772 रुपए मूल्य का अंडा जब्त कर गोदाम को सील कर दिया। पुलिस आगे कारवाई के लिए टीम ने थाने में तहरीर दी।

सहायक आयुक्त खाद्य सुरक्षा राजवंश प्रकाश श्रीवास्तव की मौजूदगी में विभाग की टीम ने पुलिस बल और खाद्य सुरक्षा अधिकारी केके यादव और प्रजन सिंह के साथ बुधवार की देर रात में काशीपुर रोड निकट रामपुर तिराहा बरवाड़ा मजरा

गोदाम में कार्रवाई करती खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम। ● अमृत विचार

- काशीपुर रोड निकट रामपुर तिराहा बरवाड़ा मजरा स्थित अल्लाह खां के अंडा गोदाम पर हुई कारवाई

स्थित अल्लाह खां के अंडा गोदाम पर छापेमारी की। वहां पर सफेद अंडे को आर्टिफिशियल कलर द्वारा रंग कर देसी अंडे के रंग का बनाया जा रहा था। पुलिस दल के साथ छापेमारी में कुल अंडा मूल्य लगभग 3,89,772 रुपये के 45,360 रंगीन और 35,640 सफ़ेद अंडे जो रंगने के लिए रखे गए थे सीज कर दिए गए ऐसाथ में एडलट्रेंट को जब्त करते हुए अंडे के गोदाम को सील कर दिया। सहायक आयुक्त खाद्य सुरक्षा ने बताया कि छापेमारी की कारवाई रात तीन बजे तक चली। इसके बाद कटघर थाने में कारोबारी के खिलाफ तहरीर दी गई।

छात्रवृत्ति आवेदन की तिथियां बदलीं, 13 दिसंबर तक चलेंगी प्रक्रियाएं

मुरादाबाद, अमृत विचार: जिला समाज कल्याण अधिकारी पंखुरी जैन ने बताया कि शैक्षिक सत्र 2025-26 के लिए पूर्वदशम (कक्षा 9-10) तथा दशमोत्तर (कक्षा 11-12) छात्रवृत्ति योजनाओं में विभिन्न वर्गों एससी, एसटी, ओबीसी, सामान्य एवं अल्पसंख्यक के छात्रों हेतु आवेदन की संशोधित तिथियां निर्धारित की गई हैं।

उन्होंने बताया कि प्रदेश के सभी मान्यता प्राप्त विद्यालयों को मास्टर डेटा बेस में शामिल होने के लिए आवेदन तथा आवश्यक दस्तावेज जिला विद्यालय निरीक्षक के समक्ष प्रस्तुत करने होंगे। मास्टर डाटा में सूचनाएं भरने, अपलोड करने और प्रमाणित करने की अंतिम तिथि एक दिसम्बर तय की गई है। छात्रों के लिए ऑनलाइन पंजीकरण एवं आवेदन की अंतिम तिथि 6 दिसंबर निर्धारित की गई है।विद्यालयों द्वारा आवेदन पत्रों की हार्ड कॉपी व संलग्न अभिलेखों का मिलान, अपात्र छात्रों के आवेदन निरस्त करने तथा पात्र छात्रों के आवेदन को ऑनलाइन सत्यापित कर अग्रसारित करने की अंतिम तिथि 13 दिसंबर रहेगी। समाज कल्याण अधिकारी ने अपील की है कि छात्रवृत्ति प्रक्रिया समय पर पूरी कराने हेतु निर्धारित तिथियों का पालन करें।

विधायक ने मिनी स्टेडियम व खेल मैदान का मुद्दा उठाया

बैठक में मौजूद सभापति राजीव सिंह उर्फ बब्बू भैया, कुंदरकी विधायक रामवीर सिंह व अन्य।

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- प्रतिनिहित विधायन समिति के सभापति की अध्यक्षता में हुई युवा एवं खेल विभाग से संबंधित बैठक

अमृत विचार : लखनऊ में प्रतिनिहित विधायन समिति के सभापति राजीव सिंह उर्फ बब्बू भैया की अध्यक्षता में आयोजित युवा एवं खेल विभाग से संबंधित बैठक में कुंदरकी के भाजपा विधायक रामवीर सिंह भी शामिल हुए। उन्होंने कुंदरकी विधानसभा के रतनपुर कलां में बन रहे मिनी स्टेडियम और कुंदरकी के खेल मैदान की चर्चा की।

कुंदरकी विधायक ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता और समय से पूर्ण करने को कहा। विधायक ने बताया कि कुंदरकी विधानसभा में खेल प्रतिभाओं को खेल मैदान मिलने से आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा। अभ्यास के लिए पूर्ण सुविधा और अच्छे कोच आवश्यक है। सरकार ने 2018 से युवाओं के शारीरिक और मानसिक विकास को बढ़ावा देने के लिए यह खेल सामग्री वितरण योजना शुरू की है। विधायक ने युवक और महिला मंगल दलों को वर्तमान में वितरित की जाने वाली किटों में और अधिक खेलो से संबंधित सामग्री बढ़ाने की मांग की। बैठक में खेल एवं युवा विभाग के अधिकारियों ने निर्माण समय से पूर्ण होने का आश्वासन दिया। बैठक में समिति के सभी सदस्य और खेल एवं युवा कल्याण विभाग के आधिकारी उपस्थित रहे।

कोचिंग सेंटर में शिक्षक के गाली देने पर हंगामा

मुरादाबाद, अमृत विचार : कांठ रोड स्थित एक निजी कोचिंग सेंटर में छात्रों को पढ़ाते समय अध्यापक द्वारा गाली-गलौज करने का मामला सामने आने के बाद गुरुवार को जमकर हंगामा हो गया। अध्यापक के इस व्यवहार से नाराज अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में कोचिंग सेंटर पहुंच गए और विरोध प्रदर्शन किया।

एबीवीपी छात्र नेताओं ने आरोप लगाया कि संबंधित अध्यापक लंबे समय से बच्चों के साथ अभद्र व्यवहार कर रहा था। सोशल मीडिया पर घटना का वीडियो सामने आने के बाद छात्र संगठन आक्रोशित हो गया और मौके पर पहुंचकर कोचिंग प्रबंधन से जवाब तलब किया।सूचना पर पुलिस टीम भी मौके पर पहुंची, लेकिन तब तक आरोपित अध्यापक सेंटर से फरार हो चुका था। पुलिस ने छात्रों को शांत करा जांच का आश्वासन दिया। छात्र नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि तीन दिन के भीतर अध्यापक सार्वजनिक रूप से माफी नहीं मांगता और उसके खिलाफ कार्रवाई नहीं होती,तो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद व्यापक आंदोलन शुरू करेगी। कोचिंग सेंटर प्रबंधन ने भी मामले की गंभीरता को देखते हुए आंतरिक जांच शुरू करने की बात कही है।

पश्चिम बंगाल से ट्रैक्टर चोरी कर ला रहे चार आरोपियों को भेजा गया जेल

संवाददाता, पाकबड़ा

अमृत विचार: बुधवार को चोरी कर चार ट्रैक्टर एवं दो इंजन कैंटर में भरकर ला रहे चार लोगों को एसटीएफ बरेली ने पकड़ लिया था। गुरुवार को चारों को कोर्ट में पेश किया जहां से उन्हें भेज दिया गया।

पश्चिम बंगाल, उड़ीसा एवं असम से ट्रैक्टर चोरी कर ला रहे चार लोगों को चार ट्रैक्टर दो इंजन एवं एक कैंटर समेत एसटीएफ बरेली टीम के प्रभारी अमित कुमार अगवानपुर बाईपास स्थित हकीमपुर चौकी के पास से पकड़कर थाने लाए थे। कासिम पुत्र लईक निवासी चौधरपुर, मुस्तकीम पुत्र रफीक हुसैन, जाने आलम पुत्र मोहम्मद अतीक निवासी मिलक गौसपुर थाना डिडोली जनपद अमरोहा, शेरपाल पुत्र फूल सिंह निवासी मकान नंबर 776 होलीवे पब्लिक स्कूल के पास नुकरुद्दीन सराय थाना नखासा जनपद संभल पकड़े गए चारों लोगों के खिलाफ

पुलिस गिरफ्त में ट्रैक्टर चोरी के आरोपी। ● अमृत विचार

- एसटीएफ बरेली ने बुधवार को पकड़े थे आरोपी

मुकदमा पंजीकृत कर पुलिस ने कोर्ट में पेश किया जहां से जेल भेज दिया गया। कासिम ने बताया कि वह असम, उड़ीसा व पश्चिम बंगाल से पुराने चोरी के ट्रैक्टर खरीद कर वहां से कैंटर द्वारा लाकर पेंट कर चेचिस नंबर मार्का, प्लेट बदल बेचता है। कैंटर चालक शेरपाल ने बताया कि वह अलग-अलग कंपनियों का माल असम, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार झारखंड राज्यों में ले जाता है। वापसी में कासिम के खरीदे ट्रैक्टर इंजन टायर का अन्य पार्ट्स लोड कर कर ले आता है। कैंटर मालिक कुंदरकी के समसुल हसन के बताने पर ही खड़कपुर से ट्रैक्टर में इंजन लोड कराए थे। 23 नवंबर को जब वह खड़कपुर पश्चिम बंगाल में था, तो कासिम ने उससे संपर्क किया था। कहा कि खड़कपुर से दो ट्रैक्टर, दो इंजन लोड कर कर ले आना। बेल्दा पश्चिम बंगाल निवासी अली ने इंजन व ट्रैक्टर लोड कर कर भेजे थे। इन ट्रैक्टरों में इंजन की डिलीवरी लेने के लिए कासिम ने बुलाया था।

घुमंतू समाज को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए सरकार प्रतिबद्ध

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : घुमंतू समाज आभार सम्मेलन में उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण मंत्री असीम अरुण ने कहा कि मुख्यमंत्री घुमंतू समाज को मुख्यधारा से जोड़कर समाज का विकास करने लिए प्रतिबद्ध हैं।

सम्मेलन के आयोजकों ने समाज कल्याण मंत्री के साथ अन्य मंचासीन नेताओं का विशाल माला पहना कर स्वागत किया। इस दौरान उनके साथ भाजपा जिलाध्यक्ष, नगर विधायक और कार्यक्रम आयोजक और आरएलडी के जिलाध्यक्ष मौजूद रहे। इसके बाद उन्होंने सर्किट हाउस में पत्रकारों से बातचीत करते हुए सरकार की योजनाओं और हालिया निर्णयों पर विस्तार से जानकारी दी।

गुरुवार को समर वैली स्कूल के सामने राष्ट्रीय बहेलिया जनजाति विकास मंच द्वारा नगर पंचायत

सम्मेलन में मंत्री असीम अरुण का स्वागत करते पदाधिकारी व कार्यकर्ता।

- घुमंतू समाज के आभार सम्मेलन में पहुंचे मंत्री असीम अरुण
- एसआईआर प्रक्रिया व डिटेंशन सेंटर पर विपक्ष को घेरा

अगवानपुर में आयोजित घुमंतु समाज आभार सम्मेलन में उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण मंत्री असीम अरुण ने सहभागिता की। उनके साथ मंच बहेलिया समाज राष्ट्रीय अध्यक्ष नेम सिंह बहेलिया, प्रदेश अध्यक्ष संदुर लाल बहेलिया मौजूद रहे। समाज कल्याण मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार समाज की मांग पर घुमंतू समाज के लिए एक घुमंतू समाज का बोर्ड गठित कर उन्हें योजना से जोड़ने की ठोस पहल की है।

प्रदेश भर में घुमंतू परिवार जहां शरण लिए है वहां सरकार की ओर से कैंप लगा कर घुमंतू परिवार को प्रमाणित किया जाएगा। सरकार मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है। सम्मेलन में उपस्थित घुमंतु समाज की ऊर्जावान जनता का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समाज के बच्चों के उत्थान लिए शिक्षा, सुरक्षा से जोड़ने के लिए कई ठोस कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को सुरक्षा देने और पूरे समाज को सम्मान व अधिकार दिलाने के लिए संचालित योजनाओं का लाभ दिया जाएगा। सरकार का संकल्प स्पष्ट है कि घुमंतु समाज का सम्मान बढ़ाना, उनकी आवाज को बुलंद करना और उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाना है।

कार्यक्रम में नगर विधायक रितेश गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष आकाश पाल, राष्ट्रीय लोक दल के जिला अध्यक्ष मनोज चौधरी भी मंच पर मौजूद रहे।

आलोचना बेबुनियाद क्योंकि फर्जी वोट डालने की सुविधा हो रही समाप्त

सर्किट हाउस में पत्रकारों से वार्ता करते हुए मंत्री असीम अरुण ने कहा कि कि सरकार द्वारा घुमंतू समाज के जरूरतमंद परिवारों को जमीन, आवास, बच्चों की शिक्षा एवं आवश्यक दस्तावेज की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि वोटर लिस्ट शुद्धिकरण के लिए चल रही एसआईआर प्रक्रिया की विपक्ष अनायास आलोचना कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह प्रक्रिया पूरी तरह स्वागत योग्य और आवश्यक है। कई वर्षों से मतदाता सूची की शुद्धता पर सवाल रहे हैं। मृतकों तक के नाम सूची में दर्ज हैं। चुनाव आयोग इस गड़बड़ी को दूर कर रहा है। विपक्ष की आलोचना बेबुनियाद है क्योंकि अब फर्जी वोट डालने की उनकी सुविधा समाप्त हो रही है। मुख्यमंत्री द्वारा प्रदेश में डिटेंशन सेंटर बनाए जाने के निर्णय पर बोले कि यह कदम विदेशी नागरिकों के प्रबंधन के लिए कानूनी रूप से जरूरी है।

रामपुर के दो जीएसटी बकायेदारों की कुर्की, प्रतिष्ठान किए गए सीज

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार: संयुक्त आयुक्त कार्यपालक संभाग -बी मुरादाबाद शैलेंद्र उपाध्याय ने रामपुर के राज्य कर अधिकारियों के साथ मिलकर जीएसटी के बड़े बकायेदारों के खिलाफ कार्रवाई की है। गुरुवार को कार्रवाई के दौरान फर्म इब्राहीम सलीम एंड जनरल ऑर्डर सप्लायर, पीला तालाब रोड, मोहल्ला झंडा, रामपुर द्वारा 41.19 लाख रुपये का बकाया जमा न किए जाने पर राजस्व विभाग ने कुर्की कर व्यापार स्थल को सीज कर दिया।

इसी प्रकार फर्म एन.पी. एंटरप्राइजेज, फैजुल्ला नगर मोदी पुर, तहसील सदर, रामपुर द्वारा 46.38 लाख रुपये की बकाया जीएसटी राशि

- राज्य कर विभाग ने तैयार की बड़े बकायेदारों की चल एवं अचल संपत्तियों की सूची

जमा न करने पर विभाग ने व्यापारिक प्रतिष्ठान को सीज कर कार्रवाई की। राज्य कर विभाग ने बताया कि बड़े बकायेदारों की चल एवं अचल संपत्तियों की सूची तैयार कर ली गई है और शीघ्र ही अन्य बकायेदारों पर भी इसी प्रकार की कुर्की की कार्रवाई शुरू की जाएगी। सरकार को किसी हाल चूना नहीं लगाने दिया जाएगा। कार्रवाई के दौरान संयुक्त आयुक्त शैलेंद्र उपाध्याय के साथ उपायुक्त सन्देश कुमार जैन, अनीता सिंह, उदय प्रताप सिंह, सहायक आयुक्त राधेश्याम यादव एवं प्रदीप कुमार उपस्थित रहे।

कार्यक्रम | संत कबीर राज्य हथकरघा पुरस्कार योजना के अंतर्गत बुनकरों ने लगाई प्रदर्शनी

मुरादाबाद की नाजरा प्रथम, बिजनौर की खुशमुदा द्वितीय

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : परिक्षेत्र स्तरीय संत कबीर राज्य हथकरघा पुरस्कार योजना के अंतर्गत बुनकरों ने कलेक्ट्रेट सभागार में प्रदर्शनी लगाई। इसमें हथकरघा बुनकरों द्वारा तैयार 30 हथकरघा नमूनों का प्रदर्शन किया गया।

संत कबीर राज्य हथकरघा पुरस्कार योजना के लिए मुरादाबाद परिक्षेत्र स्तर पर सैंपलों का चयन डीएम अनुज सिंह की अध्यक्षता में गठित समिति ने किया। प्रथम स्थान नाजरा खातून निवासी मोहल्ला मनिहारन भोजपुर, जिला मुरादाबाद, द्वितीय स्थान खुशमुदा निवासी शिवालाकलां जनपद

प्रदर्शनी में बुनकरों के वस्त्र का नमूना देखते डीएम अनुज सिंह। ● अमृत विचार

बिजनौर और तृतीय स्थान गुलशन बेगम निवासी टाण्डा जनपद रामपुर का रहा। अधिकारियों ने प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाया।

संत कबीर हथकरघा पुरस्कार योजना 2009 में शुरू हुई थी। जिसका उद्देश्य भारतीय हथकरघा परंपराओं के पोषण में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिल्पकारों को मान्यता देना है।

- रामपुर की गुलशन तीसरे स्थान पर रही, अधिकारियों ने बढ़ाया प्रतिभागियों का उत्साह
- पुरस्कार योजना के लिए मुरादाबाद, बिजनौर और रामपुर के वस्त्रों के नमूने चयनित

सहायक आयुक्त हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग अश्वनी कुमार सिंह ने बताया कि परिक्षेत्र स्तर पर चयनित इन सैंपलों को राज्य स्तरीय पुरस्कार में प्रतिभाग करने के लिए निदेशालय कानपुर को भेजा जाएगा। इस दौरान संयुक्त आयुक्त उद्योग योगेश कुमार, परियोजना अधिकारी राज्य हथकरघा निगम, उपनिदेशक बुनकर सेवा केंद्र मेरठ के प्रतिनिधि सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

दो पासपोर्ट प्रकरण: 5 दिसंबर को आ सकता है कोर्ट का फैसला

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

- एमपी-एमएलए मजिस्ट्रेट कोर्ट में हो रही सुनवाई

अमृत विचार : सपा नेता आजम खां के बेटे पूर्व विधायक अब्दुल्ला के खिलाफ पासपोर्ट मामले में अंतिम बहस गुरुवार को पूरी हो गई। अधिवक्ता संदीप सक्सेना ने बताया कि इस मामले में 5 दिसंबर को फैसला आ सकता है। एमपी-एमएलए मजिस्ट्रेट कोर्ट में सुनवाई हो रही है।

अब्दुल्ला पर भाजपा विधायक आकाश सक्सेना ने सिविल लाइंस कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराई थी, जिसमें अब्दुल्ला पर अलग अलग जन्मतिथि से दो पासपोर्ट बनवाने का आरोप लगाया था। दस्तावेजों के आधार पर पासपोर्ट बनवाया गया था। एक पासपोर्ट में जन्मतिथि पहली जनवरी 1993 है, दूसरे पासपोर्ट में जन्मतिथि 30 सितंबर 1990 दर्ज है। गलत जानकारी देकर बनवाने पर उनका यह पासपोर्ट जब्त हो चुका है। इस मुकदमे में पुलिस ने जांच पूरी कर अब्दुल्ला के खिलाफ आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल कर दिए थे। पुलिस द्वारा न्यायालय में दाखिल आरोप पत्र में अकेले अब्दुल्ला नामजद हैं। इस मामले की सुनवाई एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट (मजिस्ट्रेट ट्रायल) में चल रही है। अधिवक्ता संदीप सक्सेना ने बताया कि 5 दिसंबर को इसमें फैसला आ सकता है। इसके अलावा अमर सिंह पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने में आज फैसला आ सकता है।

शहर में आज

☞अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा द्वारा डीएम को कलेक्ट्रेट में ज्ञापन 11:30 बजे

☞लालबाग स्थित काली मंदिर में सायंकालीन आरती 7:00 बजे

न्यूज ब्रीफ

दूसरा विवाह करने व उत्पीड़न के मामले में रिपोर्ट दर्ज

छजलैट, अमृत विचार : एक विवाहिता ने पति पर दूसरी शादी करने और सभी ससुराल वालों पर 5 लाख नकद मांगने का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी। पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में अभियोग पंजीकृत कर मामले की विवेचना शुरू कर दी है। छजलैट थाना क्षेत्र के गांव भीकनपुर निवासी रोशन पुत्री जफर की शादी 5 वर्ष पूर्व इकरार पुत्र सरवर निवासी हरथला नयागांव थाना सिविल लाइन के साथ हुई थी। विवाहिता का आरोप है कि उसके पति ने बिना उसकी मर्जी के दूसरी शादी किसी हिना नाम की महिला से कर ली है। तभी से इकरार हिना जेठ शाहनवाज, देवर नन्हे, नंदोई आसिफ ग्राम हरिया वाली थाना कोतवाली जिला बिजनौर गुलफाम निवासी हैदरपुर अफसाना, शबाना, यूनुस आदि ने मारपीट की और 500000 दहेज में मांगे रुपये न देने पर बदतमीजी की। पुलिस ने तहरीर के आधार पर सभी आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में अभियोग पंजीकृत कर मामले की विवेचना शुरू कर दी है।

पुलिस ने गुमशुदा महिला को परिजनों से मिलाया

भगतपुर, अमृत विचार : भगतपुर क्षेत्र में एक महिला घूमती देख ग्रामीणों ने भगतपुर पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने महिला से उसके नाम व पते के बारे में जानकारी की। महिला नाम व पता नहीं बता पा रही थी। भगतपुर पुलिस ने सोशल मीडिया एवं विभिन्न प्रयासों से महिला की पहचान जनपद आगरा के थाना एत्मादपुर क्षेत्र के एक गांव निवासी के रूप में की। इसके बाद परिजन थाना भगतपुर पहुंचे व महिला को अपने साथ ले गए। परिजनों के अनुसार महिला मंदबुद्धि है और कुछ दिन पहले घर से चली गई थी। इसके बाद से परिजन उसे तलाश कर रहे थे। पुलिस के इस सराहनीय कार्य पर परिजनों व क्षेत्रवासियों ने काफी प्रशंसा की है।

एसआईआर में दिक्कतें, सौंपा ज्ञापन

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

सूची में गड़बड़ी को लेकर कलेक्ट्रेट पर मौजूद एआईएमआईएम के कार्यकर्ता।

- एआईएमआईएम के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने की तिथि बढ़ाने की मांग

अमृत विचार : मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में गड़बड़ियों और तकनीकी दिक्कतों को लेकर एआईएमआईएम के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने गुरुवार को डीएम कार्यालय पहुंचकर मुख्य चुनाव आयुक्त को संबोधित ज्ञापन सौंपा। एसआईआर प्रक्रिया की अंतिम तिथि 4 दिसंबर से बढ़ाकर 4 जनवरी 2026 करने की मांग की है।

संगठन के महानगर अध्यक्ष वकी रशीद एडवोकेट ने ज्ञापन के माध्यम से बताया कि बीएलओ पर अत्यधिक कार्यभार डाल दिया गया है और अभी तक केवल 35 से 40 प्रतिशत गणना फार्म ही ऑनलाइन हो सके हैं। कई राज्यों से बीएलओ की मौत, हार्ट अटैक और आत्महत्या की खबरें भी आ रही हैं। इसे गंभीर मुद्दा मानते हुए कहा कि इसकी समय सीमा बढ़ाई जाए क्योंकि सीमित समय में प्रक्रिया पारदर्शी और त्रुटिरहित नहीं हो सकती है। संबंधियों की मैपिंग के लिए केवल चार विकल्प-माता, पिता, दादा, दादी-ही उपलब्ध हैं, जबकि चुनाव आयोग ने नाना-नानी समेत अन्य संबंधियों को मैपिंग में शामिल करने की बात कही थी। कई बीएलओ चार विकल्प से अधिक संबंधियों के नाम स्वीकार नहीं कर रहे, जिससे वैध नाम कटने का खतरा है। दूसरे जनपदों से मुरादाबाद आई विवाहिताओं-विशेषकर स्वार, टांडा (रामपुर) और चंदौसी (संभल) क्षेत्र की महिलाओं के आवेदन ऑनलाइन मैपिंग में अटक रहे हैं। ज्ञापन देने वालों में जिला अध्यक्ष अतीकुर्रहमान, एडवोकेट मोहिद फरगानी, युवा जिला अध्यक्ष मुहम्मद फहीम, तालिब मलिक सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

वन विभाग ने डीएम को भेजे पत्र में बताया बंदर पकड़ना उनका काम नहीं

बंदर पकड़ने को रस्साकसी, जिम्मेदारी से बच रहे विभाग

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- शिकायत करने पर वन विभाग का रास्ता दिखाते हैं नगर निगम व नगर पंचायतों के अफसर

अमृत विचार : महानगर के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में भी बंदर के उत्पात से लोग परेशान हैं। घरों की छतों पर रखे सामान को तोड़ने के अलावा बालकनी व छत पर बागवानी के लिए रखे गमले भी बंदर तोड़ रहे हैं। वहीं मंदिरों में आने वाले श्रद्धालुओं का प्रसाद व बाजार में खाने की सामग्री पर भी बंदर छपट्टा मारकर लोगों को चोटिल कर रहे हैं। इन्हें पकड़ने के लिए वन विभाग व नगर निकायों की ओर से एक दूसरे के पाले में जिम्मेदारी फेंकी जा रही है।

महानगर के लगभग सभी कॉलोनियों में आए दिन बंदरों के उत्पात से लोगों को नुकसान हो रहा है। बाजार व मंदिर में आने जाने वालों की थैली व प्रसाद आदि पर छपट्टा मारकर बंदर उसे छीन ले रहे हैं। यहां तक कि सड़क पर बंदरों के झुंड के अचानक दौड़ लगाने से बाइक सवार असंतुलित होकर चोटिल भी हो रहे हैं। उत्पाती बंदरों पर अंकुश के लिए लोग नगर निगम व ग्रामीण क्षेत्र में नगर पंचायतों से शिकायत व गुहार लगाते हैं तो उन्हें वन विभाग का रास्ता दिखाया जाता है। यहां तक की आईजीआरएस पोर्टल पर भी बंदरों के उत्पात पर अंकुश लगाने के लिए शिकायतें भी आ रही हैं। जिसे वन विभाग को प्रशासनिक अधिकारी संदर्भित कर देते हैं। लेकिन अब वन विभाग के स्थानीय अधिकारी भी अपने विभाग के उच्चाधिकारियों के आदेश का हवाला देकर कहा कि बंदरों को पकड़ने का काम उनका नहीं नगर निगम व अन्य नगर निकायों का है।

पीडब्ल्यूडी कार्यालय के गेट पर बैठा बंदर।

4 नवंबर को प्रभागीय निदेशक सामाजिक वानिकी प्रभाग मुरादाबाद अविनाश पांडेय ने डीएम को पत्र लिखकर आईजीआरएस पोर्टल पर आने वाली शिकायतों के लिए नगर निगम व अन्य नगर निकायों को संदर्भित करने का अनुरोध किया। उन्होंने विशेष सचिव पर्यायवरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग द्वारा प्रधान मुख्य वन संरक्षक व विभागाध्यक्षों को लिखे पत्र का संदर्भ देकर बंदरों को पकड़ने का कार्य वन विभाग का न होकर नगर निगम, नगर निकाय व ग्राम पंचायतों की होने की जानकारी दी। उनके पत्र में यह उल्लेख किया गया है कि भारत के राजपत्र द्वारा वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट-1972 की अनुसूचित सूची से बंदर को वन्य जीव की श्रेणी से हटा दिया गया है।

कृषि विशेषज्ञों ने खेती में उत्पादन और आय में बढ़ोत्तरी के टिप्स दिए

कृषक जागरुकता और कृषि सूचना तंत्र के सुदृढ़ीकरण के लिए हुआ कार्यक्रम

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

किसान को ट्रैक्टर की प्रतीकात्मक चाबी देतीं जिपं अध्यक्ष डॉ शेफाली चौहान, उप निदेशक कृषि संतोष कुमार द्विवेदी व मौजूद अन्य। ● अमृत विचार

- किसानों को दी गई सरकारी योजनाओं और प्राकृतिक खेती की जानकारी

अमृत विचार : कृषि विभाग द्वारा कृषक जागरुकता और कृषि सूचना तंत्र के सुदृढ़ीकरण के लिए गुरुवार को कंपनी बाग स्थित जिगर मंच पर तहसील स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. शैफाली सिंह चौहान ने फीता काटकर व दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती पूजा के साथ कार्यक्रम का आरंभ किया।

किसानों के लिए कृषि से संबंधित विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉल लगाए गए। जिसका निरीक्षण जिला पंचायत अध्यक्ष ने करते हुए किसानों से संवाद भी किया। फार्म मशीनरी बैंक के तहत प्रेम सिंह को ट्रैक्टर और अन्य कृषि यंत्रों की प्रतीकात्मक चाबी प्रदान की गई, जिसमें सरकार की ओर से 80 प्रतिशत अनुदान शामिल था। उप निदेशक कृषि संतोष कुमार द्विवेदी ने पीएम कुसुम योजना के तहत सोलर पंप की ऑनलाइन बुकिंग और अन्य कृषि योजनाओं की जानकारी दी। किसानों को बताया कि गेंहू के बीज, सरसों एवं मटर के मिनी किट्स मुफ्त उपलब्ध हैं और खाद एवं बीज की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की गई है। कृषि वैज्ञानिकों ने रबी फसलों, गन्ना, दलहनी और तिलहनी फसलों के लिए तकनीकी मार्गदर्शन, मृदा स्वास्थ्य कार्ड और प्राकृतिक खेती के उपायों की जानकारी प्रदान की।

रजिस्ट्री करवाने की अपील

किसानों से पराली व गन्ने की पत्तियों को जलाने से बचने और उन्हें खाद में परिवर्तित करने का आग्रह किया गया। साथ ही किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के लिए रजिस्ट्री करवाने की अपील की। गन्ना समिति कांठ के डायरेक्टर गौरव कुमार ने सह फसली खेती के लाभ साझा किए और किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने की प्रेरणा दी।

सर्दी में बढ़ा लकवा का खतरा, सावधानी बरतें लोग

मुरादाबाद, अमृत विचार : ठंड के मौसम में लकवा का खतरा बढ़ गया है। जिला अस्पताल की ओपीडी में एक सप्ताह में आठ लोग इस परेशानी को लेकर पहुंचे हैं। मरीजों के साथ ही तीमारदारों को भी डॉक्टर इलाज के साथ ही सावधानी बरतने की सलाह दे रहे हैं।

जनरल फिजिशियन डॉ. आशीष कुमार सिंह ने बताया कि सर्दियों में हाई बीपी रोगियों को लकवे का खतरा अधिक है। बताया कि बढ़ा हुआ कोलेस्ट्रॉल, डायबिटीज, हार्ट समस्या, धूम्रपान और शराब का अधिक सेवन लकवे का खतरा बढ़ाता है। ठंड में खून गाढ़ा हो जाता है, जो ब्रेन स्ट्रोक का खतरा बढ़ा देता है। अचानक किसी अंग या शरीर के हिस्से को हिलाने में असमर्थता, सुन्नपन, झनझनाहट लकके के ही प्रमुख लक्षण हैं। उन्होंने बताया कि इस मौसम में जरूरी है कि शरीर को गर्म रखा जाए। मेवा, मौसमी सब्जियों का सेवन बहुत जरूरी है। वहीं, बाहर का खाना, पेय पदार्थ से दूरी बनाना बहुत जरूरी है। इससे लोगों को जरूरी प्रोटीन, विटामिन और अन्य पोषक तत्व मिलते रहते हैं।

आधुनिक कौशल प्रशिक्षण को सीडीओ ने सराहा

कौशलम केंद्र में निरीक्षण के दौरान जानकारी लेतीं सीडीओ मृणाली अविनाश जोशी।

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : मुख्य विकास अधिकारी मृणाली अविनाश जोशी ने गुरुवार को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) परिसर में टीटीएल के सहयोग से संचालित नवनिर्मित कौशलम केंद्र का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने संस्थान में स्थापित अत्याधुनिक मशीनों एवं उपकरणों पर दिए जा रहे प्रशिक्षण की जानकारी ली।

मुख्य विकास अधिकारी को निरीक्षण के दौरान आईटीआई के प्रधानाचार्य संजीव कुमार एवं अमर कौशल ने बताया कि वर्तमान में कौशलम केंद्र में तीन आधुनिक व्यवसाय-एडवांस सीएनसी, रोबोटिक्स एवं मैकेनिक मोटर व्हीकल-में प्रशिक्षार्थियों को उच्च तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। सीडीओ ने प्रथम सत्र के बाद उत्तीर्ण हुए परीक्षार्थियों से जानकारी ली। वहीं प्रशिक्षणरत छात्रों से उनके अनुभव और प्रशिक्षण की गुणवत्ता के बारे में फीडबैक प्राप्त किया। अंत में सीडीओ ने प्रधानाचार्य को निर्देश दिया कि टीटीएल सहयोग से विकसित नवनिर्मित आधुनिक कार्यशाला का उपयोग संस्थान में संचालित अन्य व्यवसायों के प्रयोगात्मक प्रशिक्षण के लिए भी किया जाए, जिससे अधिक से अधिक प्रशिक्षार्थी आधुनिक तकनीक का लाभ उठा सकें।

बेटियों के सशक्तिकरण के लिए उठाए कदम प्रेरणादायक और अनुकरणीय

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

केंद्र का आरंभ करते मुख्य अतिथि मंडलायुक्त आन्जनेय कुमार सिंह व उपस्थित अन्य लोग।

- उड़ान कौशल कला केंद्र के उद्घाटन पर बोले मंडलायुक्त

अमृत विचार : सेव गर्ल ट्रस्ट एवं कृष्णा बाल विद्या मंदिर के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को उड़ान कौशल कला केंद्र का आरंभ मुख्य अतिथि मंडलायुक्त आन्जनेय कुमार सिंह ने किया। इस केंद्र में क्षेत्र की बेटियों को सिलाई-कढ़ाई, सेल्फ डिफेंस तथा ब्यूटीशियन का निशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि मंडलायुक्त आन्जनेय कुमार सिंह ने विधि-विधान से सिलाई हॉल के उद्घाटन के साथ किया। उन्होंने ट्रस्ट की प्रशंसा करते हुए कहा कि सेव गर्ल ट्रस्ट ने बेटियों के सशक्तिकरण के क्षेत्र में जो कदम उठाए हैं, वे अत्यंत प्रेरणादायक और अनुकरणीय हैं। समाज में बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे प्रयास न केवल प्रशंसा के योग्य हैं, बल्कि यह पहल आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक मजबूत आधार तैयार करेगी। उड़ान कौशल कला केंद्र जैसी पहल बेटियों को कौशल, सुरक्षा और सम्मान प्रदान करती है।

कृष्णा बाल विद्या मन्दिर के निदेशक ओम प्रकाश ने कहा कि बेटियों को सशक्त बनाने के लिए यह कार्य सराहनीय है। ट्रस्ट की अध्यक्ष प्रिया अग्रवाल ने बेटियों के उत्थान और आत्मनिर्भरता पर जोर देते हुए कहा कि हमारी बेटियां केवल घर की जिम्मेदारियां ही नहीं निभातीं, बल्कि समाज और देश के विकास की सबसे मजबूत कड़ी भी हैं। बताया कि केंद्र में निधि गुप्ता ब्यूटीशियन, सुरेंद्र एवं राधा सिलाई और अंकुर कौशिक सेल्फ डिफेन्स की ट्रेनिंग देंगे।

कार्यक्रम में विनीत लोहिया, विनोद सक्सेना, सतीश अरोड़ा, अनुपेंद्र सिंह, गजेंद्र चौधरी, सचिन चौधरी, कपिल देव, अमन शर्मा, निधि गुप्ता, पूजा अग्रवाल, रीना मल्होत्रा, रुपाली अग्रवाल, श्वेता बंसल, रिचा अग्रवाल, दिव्य अग्रवाल, रेखा मदान, ज्योति बंसल, हिमानी भटनागर सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

अभद्र टिप्पणी के विरोध में ब्राह्मण महासभा ने दिया ज्ञापन

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा की ओर से गुरुवार को डीएम अनुज सिंह के माध्यम से भोपाल के मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपा गया। मध्य प्रदेश के आईएएस संतोष वर्मा द्वारा ब्राह्मण बेटियों पर अभद्र टिप्पणी का विरोध किया गया। महासभा के पदाधिकारियों ने मांग की कि अभद्र टिप्पणी करने वाले अधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई की जाए जिससे भविष्य में इस प्रकार की अनर्गल बातें करने की किसी की हिम्मत ना हो। ज्ञापन की प्रति गृहमंत्री और मध्य प्रदेश के राज्यपाल को भी भेजी गई है। ज्ञापन देने वालों में डॉ. प्रदीप शर्मा, अनिल कुमार शर्मा, सुनील कुमार शर्मा, सुशील कुमार शर्मा, राकेश कुमार शर्मा, संजय स्वामी, अनिमेष शर्मा, दिनेश कुमार शर्मा, प्रेम प्रकाश शर्मा, अमित शर्मा, राजू, राघव शर्मा आदि शामिल रहे।

डीएम अनुज सिंह का ज्ञापन देने पहुंचे ब्राह्मण महासभा के पदाधिकारी। ● अमृत विचार

संविधान शपथ राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- टीएमयू के विधि के विद्यार्थियों को दिलाई गई संविधान के पालन की शपथ
- संविधान दिवस पर लिया न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों को अपनाने का संकल्प

संविधान की शपथ दिलाते विधान परिषद सदस्य डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त व मौजूद अन्य।

अमृत विचार : संविधान दिवस के उपलक्ष्य में तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के कॉलेज ऑफ लॉ एंड लीगल स्टडीज की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विधान परिषद सदस्य डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त और सत्यपाल सैनी की मौजूदगी रही।

विधान परिषद सदस्य डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त ने संविधान के उद्देश्यों, नागरिक अधिकारों, कर्तव्यों, भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की बारीकियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने विधि के विद्यार्थियों को संविधान की शपथ दिलाई। कहा कि संविधान की शपथ केवल औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति एक जीवंत प्रतिबद्धता है। उन्होंने युवा पीढ़ी को संवैधानिक आदर्शों को जीवन में उतारने का आह्वान किया। एमएलसी सत्यपाल सैनी ने कहा कि संविधान केवल परीक्षा का विषय नहीं, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र की धड़कन है, जिसे समझना और संरक्षित करना हर नागरिक का कर्तव्य है।

कार्यक्रम में शामिल शामिल अतिथियों और प्रतिभागियों ने एकस्वर में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया।

लॉ कॉलेज के डीन प्रो. हरबंश दीक्षित ने कहा कि भारत का संविधान एक जीवित और विकसित होता हुआ दस्तावेज है। संविधान केवल अध्ययन की वस्तु नहीं, यह नागरिक आचरण का मार्गदर्शक है। विधि छात्र होने के नाते संवैधानिक मूल्य जीना ही सच्ची विधि-शिक्षा है। इस दौरान लॉ कॉलेज के प्राचार्य प्रो. सुशील कुमार सिंह, डॉ. अमित वर्मा, डॉ. डाल चंद गौतम, डॉ. कृष्ण मोहन मालवीय, डॉ. सुशीम शुक्ला, डॉ बिशनानंद दुबे, डॉ. सौरभ बटार, डॉ. योगेश गुप्ता सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

महिला परिचालक भर्ती के लिए रोजगार मेला 5 को

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

इन अभ्यर्थियों को मिलेगा वेटेज

उप्र राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन, एनसीसी बी प्रमाण पत्र, एनएसएस और स्काउट-गाइड।

अमृत विचार : महिला सशक्तिकरण अभियान को गति देने के लिए उत्तर प्रदेश परिवहन निगम महिला संविदा परिचालकों की सीधी भर्ती करेगा। परिवहन निगम मुख्यालय लखनऊ द्वारा जारी आदेश के अनुसार महिला अभ्यर्थियों को अनुबंध के आधार पर संविदा परिचालक पद पर नियुक्त किया जाएगा तथा तैनाती उन्हीं के गृह जनपद के डिपो, यूनिट में दी जाएगी।

गुरुवार को क्षेत्रीय प्रबंधक मुरादाबाद परिक्षेत्र अनुराग यादव ने बताया कि संविदा परिचालक के पद पर भर्ती के लिए 5 दिसंबर को रोजगार मेला आयोजित किया जाएगा। सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालय, लाजपत नगर, नया बस स्टैंड के पीछे भर्ती के आवेदन लिए जाएंगे। उन्होंने बताया कि निगम की ओर से जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार अभ्यर्थी का इंटरमीडिएट उत्तीर्ण होना अनिवार्य है, साथ ही केंद्र या राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त संस्थान का सीसीसी कंप्यूटर प्रमाणपत्र भी जरूरी है। भर्ती की मेरिट इंटर में प्राप्त अंकों के आधार पर निर्धारित होगी।

एनसीसी-बी व स्काउट-गाइड के राज्य, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रमाणपत्र धारकों तथा एनएसएस अभ्यर्थियों को इंटर अंकों पर 5 प्रतिशत वरीयता दिया जाएगा।

मोबाइल रिपेयरिंग को लेकर विवाद भाइयों से मारपीट

छजलैट, अमृत विचार : थाना क्षेत्र में मोबाइल रिपेयरिंग को लेकर हुए झगड़े में दो भाइयों को मारपीट कर घायल कर दिया।

छजलैट थाना क्षेत्र के ग्राम संदलीपुर निवासी फारुख पुत्र कल्लू का छोटा भाई उस्मान ग्राम मानपुर में मोबाइल ठीक करने की दुकान करता है। 25 नवंबर की सुबह करीब 8 बजे इसी गांव का इस्माइल पुत्र मशीन खान अपना मोबाइल ठीक करने के लिए आया था। इसी बात को लेकर गालियां देकर भुगतने की धमकी देकर चला गया। थोड़ी देर बाद उस्मान और फारुख शिकायत लेकर उसके घर पहुंचे तो इस्माइल, इब्राहिम, समीर, युसूफ आदि ने दोनों भाइयों को मारपीट कर घायल कर दिया। उनकी बाइक भी क्षतिग्रस्त कर दी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर अभियोग पंजीकृत कर मामले की विवेचना शुरू कर दी है।

बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में डीएम की अध्यक्षता में हुई जिला सैनिक बंधु की बैठक, सैनिकों ने बताई समस्याएं

सेवानिवृत्त सैनिकों की 2 शिकायतें मौके पर निस्तारित

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

बैठक में मौजूद डीएम अनुज सिंह, साथ में अपर जिलाधिकारी नगर ज्योति सिंह व अन्य।

अमृत विचार : डीएम अनुज सिंह की अध्यक्षता में गुरुवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला सैनिक बंधु की बैठक हुई। इसमें आई 2 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया।

सेवानिवृत्त सैनिकों ने अपनी शिकायतें और समस्याएं रखी। डीएम ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ समस्याएं निस्तारित करने का निर्देश दिया। सेवानिवृत्त सैनिक द्वारा खतौनी में दर्ज अपने नाम को दुरुस्त कराने के बारे में बताया कि राजस्व अभिलेखों में लतूर सिंह के स्थान पर लतूरी सिंह हो गया है। इसे संशोधित कराने के लिए उन्होंने कई बार तहसील में संपर्क किया लेकिन अब तक समाधान नहीं हुआ। इस पर डीएम ने तहसीलदार को फोन कर तत्काल नाम दुरुस्त कराकर संशोधित खतौनी भेजने के लिए निर्देश दिए। इसी प्रकार एक अन्य सेवानिवृत्त सैनिक ने बताया कि नगर निगम में हाउस टैक्स के विवरण में उनका नाम गलत दर्ज है जिसकी वजह से उन्हें दिक्कतें हो रही हैं। वह कई बार निगम कार्यालय का चक्कर लगा चुके हैं। लेकिन काम नहीं हो रहा है। इस पर डीएम ने अपर नगर आयुक्त को फोन कर प्रकरण को तत्काल निस्तारित करने के लिए निर्देश दिया। डीएम ने कहा कि भूतपूर्व सैनिकों की हर समस्या का समाधान प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ज्ञान स्वरूप को सभी शिकायतों और समस्याओं के निस्तारण की स्थिति की रिपोर्ट भी तैयार करने के लिए निर्देश दिया। बैठक में अपर जिलाधिकारी नगर ज्योति सिंह भी मौजूद रहीं।

लापरवाही पर कार्मिक के विरुद्ध कार्रवाई करें

सेवानिवृत्त सैनिक की पत्नी ने अपने जमीन के विवाद का मुद्दा रखा। जिस पर उन्होंने क्षेत्राधिकारी पुलिस और तहसीलदार को प्राथमिकता से निस्तारण कराने के लिए कहा। राजस्व अभिलेखों के अनुसार मौके पर जमीन उपलब्ध न कराने के संबंध में शिकायत पर उन्होंने एसओसी चकबंदी को प्रकरण का संज्ञान लेकर तत्काल निस्तारित करने का निर्देश दिया। कहा कि लापरवाही बरतने वाले कार्मिक के विरुद्ध कार्रवाई करें।

हाउस टैक्स माफ करने की मांग

बैठक के दौरान सेवानिवृत्त सैनिकों ने कहा कि प्रदेश के कुछ अन्य नगर निगम क्षेत्र में सेवानिवृत्त सैनिकों के लिए हाउस टैक्स माफ कर दिया गया है। मुरादाबाद में भी सेवानिवृत्त सैनिकों का हाउस टैक्स माफ किया जाए। इस पर डीएम ने कहा कि इस संबंध में लिखित पत्र दें जिससे नगर निगम को नियमानुसार कार्रवाई के लिए भेजा जा सके।

न्यूज ब्रीफ

चोर गिरफ्तार, चोरी की बैट्री बरामद

ठाकुरद्वारा, अमृत विचार : नगर के वार्ड नंबर 23 निवासी मोहम्मद अलमास की काशीपुर रोड पर दुकान है। 25 नवंबर को अज्ञात चोरों ने उनकी दुकान से बैट्री चोरी कर ली थी। मुखबिर से मिली सूचना पर कोतवाली पुलिस ने कमालपुरी मार्ग पर कुड़का नदी के पास स्थित एक आम के बाग में घेराबंदी की। पुलिस ने मौके से आरोपी को गिरफ्तार कर उसके पास से चोरी की बैट्री बरामद कर ली। पूछताछ में आरोपी ने अपना नाम नीरज उर्फ धीरज पुत्र चंद्रपाल सिंह बताया। वह कमालपुरी खालसा, थाना ठाकुरद्वारा का निवासी है। बुधवार को पुलिस ने आरोपी को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। आरोपी को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में उपनिरीक्षक बलराम दीक्षित, कॉन्स्टेबल मोहित कुमार और कॉन्स्टेबल गौरव कुमार शामिल थे।

आटा चक्की से दिनदहाड़े बैटरी चोरी

छजलैट, अमृत विचार : आटा चक्की से अज्ञात चोर दिन दहाड़े एक बैटरी चुराकर फरार हो गए। पीड़ित ने थाने में प्रार्थना पत्र देकर रिपोर्ट दर्ज करने की मांग की है। थाना क्षेत्र के ग्राम अलीपुर खालसा निवासी सुमित कुमार पुत्र हुकुम सिंह ने गांव में आटा चक्की लगा रखी है। दोपहर के समय 3 :00 बजे घर चला गया। वापस आया तो बैटरी नहीं थी। पीड़ित ने थाना छजलैट में प्रार्थना पत्र देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

विवाहिता से मारपीट घर से निकाला

छजलैट, अमृत विचार : छजलैट थाना क्षेत्र के ग्राम फतेहपुर बिश्नोई निवासी सुषमा पुत्री स्वर्गीय बलबीर सिंह ने बताया कि उसकी शादी 26 मई 2023 को मंगल सैनी पुत्र स्वर्गीय कैलाश सैनी निवासी डबल फाटक थाना कटघर के साथ हुई थी। शादी में पिता ने 6 लाख खर्च किए थे और सभी कुछ दिया था। इसके बावजूद पति मंगल, सास ज्ञानू देवी, देवर उमेश सैनी, नंद कुमारी किरण, दूसरी नंद कुमारी सुनीता खुश नहीं थे। उसका पति एक प्राइवेट फैक्ट्री में नौकरी करता है 30000 प्रति माह कमाता है साथ ही शराब भी पीता है। उसने अतिरिक्त दहेज में 2 लाख की नकदी व बुलेट देने में असमर्थता जताई तो ससुरालियों ने उसे मारपीट कर घर से निकाल दिया। पीड़िता ने अपने देवर पर अन्य आरोप भी लगाए हैं। पुलिस ने तहरीर के आधार पर अभियोग पंजीकृत कर मामले की विवेचना शुरू कर दी है।

दिव्यांग बच्चों ने खेलकूद में दिखाया दमखम

ठाकुरद्वारा में तहसील स्तरीय दिव्यांग क्रीड़ा प्रतियोगिता आयोजित, विजेता को पुरस्कार देकर बढ़ाया हौसल

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

अमृत विचार : ब्लॉक संसाधन केंद्र ठाकुरद्वारा में खंड शिक्षा अधिकारी मनोज कुमार बॉस के नेतृत्व में बुधवार को तहसील स्तरीय दिव्यांग क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विकासखंड क्षेत्र ठाकुरद्वारा व डिलारी के विभिन्न विद्यालयों के दिव्यांग छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम का आरंभ पूर्व एआरपी पीयूष कुमार प्रशांत व राकेश कुमार अध्यक्ष जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। छात्राओं ने सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

ब्लॉक व्यायाम शिक्षक भीम सिंह और शमशेर सिंह ने बच्चों को 25, 50 तथा 100 मीटर दौड़, चम्मच दौड़ और कुर्सी दौड़ जैसी विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं कराईं। वहीं सपना चौहान, रजनी मिश्रा और सोनिया चौहान द्वारा सुलेख, निबंध एवं गायन प्रतियोगिताएं संचालित की गईं।

स्पेशल एजुकेटर वेदप्रकाश सिंह और रूपेंद्र कुमार ने बच्चों को रस्साकशी सहित अन्य खेल खिलाए। प्रतियोगिताओं के उपरांत सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों को मेडल और पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

प्रतियोगिता में भाग लेते दिव्यांग बच्चे। ● अमृत विचार

विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते अधिकारी व शिक्षक।

दस दौरान स्पेशल एजुकेटर मुनीराम शर्मा, मुन्ना सिंह, उमेश कुमार, सुभाष चंद्र, राजाराम, लखींद्र कुमार, शैलेंद्र कुमार, राकेश कुमार, मनोज कुमार, अरविंद कुमार, शिखा गुप्ता और अर्चना उपस्थित रही।

ऊंची कूद में महफूज व सानिया ने मारी बाजी

भोजपुर, अमृत विचार : राजकीय महाविद्यालय में गुरुवार को प्राचार्य डॉ. नरेश कुमार की अध्यक्षता में वार्षिक क्रीड़ा समारोह के अंतिम दिवस क्रीड़ा प्रभारी ज्ञानेंद्र सिंह के निर्देशन में विद्यार्थियों ने प्रतियोगिताओं में भाग लिया। प्रतियोगिताएं मुख्य अतिथि सीएचसी के डॉ. सुधीर कुमार की मौजूदगी में संपन्न हुई। छात्र वर्ग में डॉ. असीम, डॉ. अमित कुमार और श्री सचिन अग्रवाल के निर्देशन में ऊंची कूद, चक्का प्रक्षेपण, और गोला प्रक्षेपण प्रतियोगिताएं कराई गई। ऊंची कूद में महफूज को प्रथम, शाने आलम को द्वितीय और अमन कुमार को तृतीय स्थान मिला। चक्का प्रक्षेपण में जुनेद आलम प्रथम, सहदेव कुमार द्वितीय और अनुज कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गोला प्रक्षेपण में सहदेव कुमार ने प्रथम स्थान, उज्ज्वल ने द्वितीय स्थान और जीत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्रा वर्ग में मधु त्यागी, वंदना भारती और मिशन शक्ति समारोह की डॉ. पूजा निर्माणिया के निर्देशन में प्रतियोगिताएं हुईं। ऊंची कूद में सानिया प्रथम, प्रिया कुमारी द्वितीय और अनीशा को तीसरा स्थान मिला। चक्का प्रक्षेपण नूरे शिफा प्रथम, प्रिया कुमारी द्वितीय और सिमरा परवीन तीसरे स्थान पर रही। गोला प्रक्षेपण में इल्म रानी को प्रथम, प्रिया कुमारी द्वितीय स्थान और नूरे शिफा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्र वर्ग में सहदेव कुमा और छात्रा वर्ग में प्रिया कुमारी चैंपियन बनी। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्री ज्ञानेंद्र सिंह ने किया।

ग्राम समाज की भूमि कब्जा मुक्त कराने की मांग

संवाददाता, छजलैट

● ग्रामीणों ने उच्च अधिकारियों से की तहसील अफसरों की मिलीभगत की शिकायत

अमृत विचार : ग्राम रसूलपुर चौराहा में ग्राम समाज की भूमि पर कुछ दबंग लोगों ने कब्जा कर रखा है। ग्राम प्रधान सहित अन्य ग्रामीणों ने मंडलायुक्त मुरादाबाद एवं एसडीएम कांठ को प्रार्थना पत्र देकर दोषी लोगों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है। एसडीएम ने इस संबंध में जांच उपरांत कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

तहसील क्षेत्र के ग्राम रसूलपुर चौहरा में गाटा संख्या 345 की ग्राम समाज की भूमि है जो पिछले 40- 50 सालों से खाली पड़ी थी जिसकी कीमत करोड़ों रुपये की है। ग्राम के ही कुछ दबंग व्यक्तियों द्वारा तहसील अधिकारियों की मिली भगत से उक्त ग्राम समाज की भूमि कब्जाई जा रही है।

एक तरफ जहां मुख्यमंत्री के आदेश हैं कि कोई भी ग्राम समाज की भूमि पर कब्जा नहीं करेगा लेकिन यहां राजस्व विभाग के अधिकारी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कार्यशैली को धूमिल कर रहे हैं।

ग्राम प्रधान गुलशन जहां रहमत अली, कासिम, जुल्फिकार, मजलूब, उस्मान कासिम आदि ने इस संबंध में मंडल आयुक्त मुरादाबाद एवं एसडीएम कांठ को प्रार्थना पत्र देकर ग्राम समाज की भूमि कब्जा मुक्त कराने की मांग की है। एसडीएम ने इस संबंध में जांच के उपरांत उचित कार्यवाही का आश्वासन दिया है।ग्रामीणों का कहना है कि हल्का लेखपाल दबंगों के विरुद्ध कार्यवाही करने की जगह उन्हें डरा धमका रहे हैं।

घरों में पहुंच रहे बीएलओ, जानकारी नहीं जुटा पा रहे लोग

फॉर्म भरवाने के दौरान मौजूद बीएलओ। ● अमृत विचार

संवाददाता, मूंढापाण्डे

● ग्राम पंचायत लालाटीकर में बीएलओ ने लाउडस्पीकर से किया लोगों को जागरूक

अमृत विचार : मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण(एसआईआर) का कार्य अंतिम दौर में है। अभियान में बीएलओ लगातार गांवों में घूमकर घर-घर दस्तक दे रहे है। साथ ही दिन में कई बार लाउडस्पीकर से गणना प्रपत्र (फॉर्म) भरवाने की अपील कर रहे है। लेकिन निरक्षरता के चलते विवाहिताओं से जानकारी जुटाना मुश्किल हो रहा है ,जो बीएलओ के लिए फॉर्म भरने के लिए किसी चुनौती से कम नहीं है।

मूंढापाण्डे के ग्राम पंचायत लालाटीकर में बीएलओ विकास कुमार और अखिलेश कुमार ने कई बार लाउडस्पीकर से फॉर्म जमा करने की अपील की। बावजूद इसके ग्रामीण फॉर्म भरवाने में कोई संजीदगी नहीं दिखा रहे है। हालांकि महिलाएं अभियान में संजीदगी बरत रही है तो उनके सामने मायके से जानकारी एकत्रित करना मुश्किल हो रहा है। बीएलओ विकास कुमार ने अपील कि है कि जिन लोगों ने फॉर्म अपने पास रखे हैं वह शीघ्र ही फॉर्म जमा कर दें। अन्यथा कानूनी कार्रवाई की जद में आएंगे। गुरुवार को बीएलओ ने फॉर्म भरने का कार्य देर शाम तक किया। इस दौरान बीएलओ विकास कुमार, अखिलेश कुमार, एड. शाहनवाज खान, मुकेश शर्मा, जयप्रकाश शर्मा के साथ तमाम लोग मौजूद रहे है।

एसडीएमप्रीति सिंह के साथ सम्मानित बीएलओ। ● अमृत विचार

सराहनीय कार्य के लिए बीएलओ सम्मानित

ठाकुरद्वारा, अमृत विचार : विधानसभा 26 ठाकुरद्वारा में चल रहे गहन मतदाता पुनरीक्षण के कार्यों में लगे बीएलओ को अपेक्षा अनुरूप बेहतरीन और श्रेष्ठ कार्य करने पर डीएम कार्यालय में सम्मानित किया गया। एसआईआर के महत्वपूर्ण कार्य में जमीनी स्तर पर विभिन्न भागों में लगे बूथ लेवल अधिकारी, लोगों से उनके गणना फार्म इकट्ठा करके उसको डिजिटाइजेशन का कार्य कर रहे हैं। इसी क्रम में गुरुवार को डीएम कार्यालय में 26 ठाकुरद्वारा विधानसभा क्षेत्र के बीएलओ को एडीएम प्रशासन, एसडीएम प्रीति सिंह ने प्रशस्ति पत्र और उपहार देकर सम्मानित किया। ठाकुरद्वारा के बीएलओ पूजा रानी, नरेश चंचल, कुलदीप कुमार, सुपरवाइजर विशाल चौधरी, सतीश कुमार, राहुल कुमार, विनीता, शहनाज जहां आदि शामिल हैं।

वन विभाग से नहीं ली एनओसी, लटक सकता है सड़क चौड़ीकरण कार्य

संवाददाता, कांठ

अमृत विचार : एसडीएम कांठ के निर्देशानुसार पीडब्लयूडी द्वारा सहसपुर कांठ बॉर्डर से छजलैट तक सड़क चौड़ीकरण का कार्य कराया जा रहा है। रसूलपुर रेलवे फाटक तक कार्य तूफानी गति से चल रहा है लेकिन रसूलपुर क्रॉसिंग से छजलैट तक एनओसी नहीं लेने के कारण अधर में लटकने की संभावना है।

लोक निर्माण विभाग द्वारा सहसपुर कांठ बॉर्डर से छजलैट तक सड़क चौड़ीकरण का कार्य आवंटित किया गया है। 6 माह पूर्व सड़क के दोनों और इंटरलॉकिंग सड़कों को तोड़कर बजरी डाल दी। वर्षा ऋतु में दोनों और पानी भर जाने से गहरे गहरे गड्ढे होने के कारण कई वाहन धंसने से जाम की स्थिति विकराल हो रही थी। दर्जनों की संख्या में दो पहिया वाहन चालक गड्ढों के कारण चोटिल हो चुके थे। नागरिकों की शिकायत पर एसडीएम संत दास पवार ने सड़क चौड़ीकरण का कार्य पूरा करने के निर्देश लोक निर्माण विभाग को दिए थे। इसके बाद लोक निर्माण विभाग ने डीएसएम डिग्री कॉलेज मार्ग से रसूलपुर रेलवे क्रासिंग तक सड़क के चौड़ीकरण का लगभग डेढ़ किलोमीटर का कार्य तूफानी गति से अंधेरे में ही पूरा करने में लगा हुआ है। लेकिन लोक निर्माण विभाग द्वारा रसूलपुर रेलवे क्रॉसिंग से आगे के चौड़ीकरण के कार्य की परमीशन वन विभाग से अभी तक नहीं ली गई है। जिसके बिना आगे का कार्य अधर में लटकने की संभावना है।

डिप्टी रेंजर पुष्पेंद्र सिंह ने बताया कि वन संरक्षित क्षेत्र में कार्य के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना जरूरी है।

रात में सड़क चौड़ीकरण कार्य में जुटे मजदूर। ● अमृत विचार

● एसडीएम के निर्देश पर चल रहा कांठ से छजलैट तक सड़क चौड़ीकरण कार्य

● रसूलपुर क्रॉसिंग से छजलैट तक है वन क्षेत्र, पीडब्लयूडी ने नहीं ली कार्य की अनुमति

सचिन ने 81 में स्वर्ण, प्रखर ने 90 किलो में जीता कांस्य पदक

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

● खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में हिंदू कॉलेज के जूडो खिलाड़ियों ने जीते पदक

अमृत विचार : उदयपुर में आयोजित खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में हिंदू कॉलेज के खिलाड़ियों ने अपने दमदार प्रदर्शन से राष्ट्रीय स्तर पर महाविद्यालय का नाम रोशन किया। जूडो प्रतियोगिता में सचिन कुमार सिंह ने 81 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा। गुरुवार को प्रखर कुमार सिंह ने 90 किलोग्राम भार वर्ग में कांस्य पदक जीतकर महाविद्यालय के लिए एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की।

उदयपुर में आयोजित खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में हिंदू कॉलेज के विजेता खिलाड़ी।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. सत्यव्रत सिंह रावत ने सफलता पर खुशी जताई। कहा कि यह उपलब्धि प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के कठिन परिश्रम, संकल्प और उत्कृष्ट मार्गदर्शन का परिणाम है। सचिन और प्रखर पदक जीतकर सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गए हैं। कॉलेज के क्रीड़ा सचिव डॉ. पंकज सिंह ने खिलाड़ियों व उनके कोच महेश की मेहनत की सराहना की। हिंदू कॉलेज खेल समिति की ओर से दोनों खिलाड़ियों को बधाई और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी गई हैं।

साफ- सफाई कर दिया आमजन को स्वच्छता का संदेश

कार्यालय संवाददाता,मुरादाबाद

● मिशन शक्ति फेज-5 के तहत मलिन बस्तियों में पहुंचीं छात्राएं

अमृत विचार : गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज में मिशन शक्ति फेज-5 के अंतर्गत गुरुवार को स्वच्छ सारथी समिति द्वारा स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. चारु मेहरोत्रा ने मां शारदे के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया।

प्राचार्य ने कहा कि स्वच्छता केवल आसपास के वातावरण को साफ रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें व्यक्तिगत स्वच्छता, मानसिक स्पष्टता और स्वस्थ जीवनशैली भी शामिल है। उन्होंने कहा कि माहवारी के बाद बाद भी स्वच्छता के प्रति जागरूकता आवश्यक है। स्वच्छता से समझौता करना अपने स्वास्थ्य से समझौता करने के समान है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को साफ-सफाई को अपनी आदत में शामिल करना चाहिए।कार्यक्रम के तहत छात्राएं छोटी-छोटी टोलियों में नई बस्ती लाल बाग की मलिन बस्ती में पहुंचीं और घर-घर जाकर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। छात्राओं ने लोगों को गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग कूड़ेदान में डालने और घर एवं आसपास के क्षेत्र में नियमित सफाई करने की सलाह दी। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय की स्वच्छता समिति की प्रो. सीमा गुप्ता, प्रो. एकता भाटिया, डॉ. प्रीति पांडे, डॉ. शेफाली अग्रवाल, डॉ. रितु नरवाल एवं डॉ. प्रज्ञा मित्तल द्वारा किया गया। इस दौरान मुख्य अनुशासिका प्रो. किरण साहू, प्रो. मीनाक्षी शर्मा, प्रो. अनुराधा सिंह, प्रो. अपर्णा जोशी, प्रो. सीमा अग्रवाल, प्रो. सुधा सिंह, प्रो. सुदेश, प्रो. करुणा आनंद, प्रो. अंचल गुप्ता, प्रो. प्रवीण सैनी, डॉ. प्रेमलता कश्यप, डॉ. सविता अग्रवाल, डॉ. सीमा मलिक, डॉ. मोनिका, डॉ. सीमा रानी, डॉ. अपर्णा तिवारी और शिवानी गुप्ता सहित अनेक प्रवक्ता उपस्थित रहीं। युसरा, सुमा, तनजीला, सूफिया, अक्षिता, मनीषा, वानिया सहित कई छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।

मिशन शक्ति फेज-05 के तहत स्वच्छता अभियान कार्यक्रम को संबोधित करते अतिथि।

अमृत विचार
एक संपूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
मो.7906815587

सूचना
मेरा इंटरमीडिएट वर्ष 2016 अनुक्रमांक 0647319 का प्रमाण पत्र-सह-अंक पत्र खो गया है। अजमत अली पुत्र अशरफ हुसैन केयर आफ विनीत कुमार ग्राम संदलपुर पोस्ट हाथीपुर चंदू कुंदरकी मुरादाबाद

सूचना
पहले नाम IQRAR SHAREEF KALEEMI था, अब बदल कर IQRAR SHARIF KALIMI S/O SHREEF TAMEEZ KALEEMI R/O MOHALLA BATWAL NEAR CHAUPAL AMROHA DISTT AMROHA रख लिया है, भविष्य में इसी नाम से जाना पहचाना जाए।

सूचना
वर्ष 2003 की मतदाता सूची में मेरा घरेलू नाम मौहम्मद ज़िया दर्ज चला आ रहा है जबकि मुझे मौहम्मद मियां पुत्र श्री छिद्दन खां, निवासी कोतवालान रामपुर के नाम से भी जाना जाता है।

सूचना
मेरी 7 संताने हैं जिनमे चार पुत्र व तीन पुत्री है मेरा छोटा पुत्र मोहम्मद हनीफ गलत व बुरी संगत में पड़ गया है उसके गलत कृत्य व दुर्व्यवहार के कारण संबंध विच्छेद कर लिए हैं। इसका मेरी चल अचल संपत्ति से कोई लेना-देना नहीं है। इसके किसी भी कृत्यो से मेरा व मेरे परिवार का कोई लेना देना नहीं है। आबिद हुसैन पुत्र अहमद हसन निवासी पतेई खालसा थाना डिडौली जिला अमरोहा।

सूचना
मैं ने अपना नाम MOHAMMAD TOUQEEB से बदलकर MOHAMMAD HAMZA रख लिया है। भविष्य मे मुझे इसी नाम से जाना जाए। MOHAMMAD HAMZA S/O MOHD KHALEEK R/O DAIR WALI MASJID ASALATPURA मुरादाबाद।

AMANI GROUP OF INSTITUTIONS
WALK- IN- INTERVIEW
Asst. Professors & Principal
B.B.A. & B.Sc. (PCM & ZBC)
Qualification & Salary as per UGC Norms
Interested candidates are requested to bring their detailed CV with photograph and scanned copies of documents as per following schedule.
Date- 03 December 2025 (Wednesday)
Time: 10:00 am to 05:00 pm
Venue- Amani Group of Institutions
Bijnor Road Amroha UP 244221
Contact us for more details:-
9548395563, 9759066555
Email: amanicampus@gmail.com

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

चमका कॉस्मेटिक का बाजार, दोगुनी हो रही बिक्री

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

● वैवाहिक कार्यक्रमों के लिए खरीदारी में जुटे लोग, व्यापारी उत्साहित

अमृत विचार : सहालग सीजन में कॉस्मेटिक बाजार गुलजार हो गया है। कॉस्मेटिक आइटम की बिक्री बढ़कर दो गुनी हो गई है। शादी और बरात में इस्तेमाल होने वाले सामान से लेकर कॉस्मेटिक सामान की बिक्री दो गुनी बढ़ गई है। इससे कारोबारियों के चेहरे भी खिल गए हैं। इस समय वैवाहिक कार्यक्रमों की धूम मची है।

महानगर के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी खूब शादियां हो रही हैं। जिले में करीब 550 से अधिक कॉस्मेटिक की दुकानें हैं। सहालग में इस कारोबार में चमक देखने को मिल रही है। बाजार में श्रृंगार की दुकानों में खरीदारों की भीड़ उमड़ रही है।

किट को प्राथमिकता दे रहीं महिलाएं : बुध बाजार में निकिता वर्मा ने बताया कि चार दिसंबर को उनके भांजे की शादी है। ऐसे में कपड़े आदि के साथ ही श्रृंगार के सामान की खरीदारी कर रही हैं। क्रीम, पाउडर, नेल पेंट सहित चूड़ी व कंगन खरीदे हैं। बताया कि अभी और भी सामान खरीदना है। खुशहालपुर निवासी डॉली ने बताया कि 30 नवंबर को उनके भाई की शादी है। इसके लिए तैयारियां जोरों पर हैं। श्रृंगार का किट लेने आईं हैं। किट में सभी वस्तु एक साथ मौजूद रहती हैं। महिलाएं किट को प्राथमिकता दे रही हैं। दुकानदारों ने भी पहले से ही दुकानों में माल भर लिया है। चाहे थोक विक्रेता हो या फुटकर, सभी सीजन का फायदा उठा रहे हैं। टाउन हॉल स्थित एक दुकान पर व्यापारी अशोक गुलाटी ने बताया कि महिलाएं व युवतियां खुद को सजाने के लिए खरीदारी तो कर ही रही हैं, वहीं, दुल्हन को उपहार में देने के लिए भी खरीदारी की भी कर रही है।

50 रुपये से 1000 तक की हैं क्रीम

व्यापारी रिंकू ने बताया कि नामी कंपनियों की क्रीम के दाम अधिक रहते हैं। पचास रुपये से लेकर एक हजार की क्रीम उपलब्ध हैं। चूड़ी व कंगन के दाम भी डिजाइन के आधार पर अलग-अलग हैं। आर्टिफिशियल ज्वैलरी महिलाओं को खूब पसंद आ रही है। व्यापारियों के अनुसार सहालग में हर रोज सात हजार से अधिक की बिक्री हो रही है। जबकि सामान्य दिनों में 2500 की बिक्री मुश्किल से होती थी।

एकता यात्रा में शामिल होंगे भाजयुमो के जिला मंत्री सुमित

छजलैट, अमृत विचार : भारत के प्रथम गृहमंत्री लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा जयपुर से गुजरात तक एकता मार्च का आयोजन किया जा रहा है। इसमें देशभर के चुनिंदा युवाओं को शामिल किया गया है, जो अपने जिले और प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। छजलैट निवासी एवं भाजयुमो जिला मंत्री सुमित दिवाकर को इस यात्रा में मुरादाबाद का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त हुआ है। यात्रा राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा किया गया। यह एकता मार्च जयपुर पुष्कर, अजमेर, जोधपुर माउंट आबू, करमसद एकतानगर होते हुए स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, गुजरात में संपन्न होगी।

प्रसन्नचित्त मुद्रा में कार्यकर्ता।

आपदा के समय घबराएं नहीं अपना व दूसरों का बचाव करें

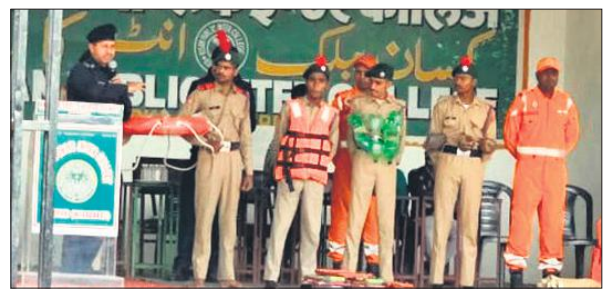

शिविर में प्रशिक्षण देती एनडीआरएफ की टीम। ● अमृत विचार

संवाददाता, कुंदरकी

● राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन की ओर से प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

अमृत विचार : किसान पब्लिक इंटर कॉलेज में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। गाजियाबाद से आए असिस्टेंट कमिश्नर पंकज कुमार मिश्रा ने कहा कि हर साल कोई न कोई हिस्सा किसी आपदा का सामना करता है। ये आपदाएं आर्थिक संकट और जनहानि का कारण बनती हैं। एनडीआरएफ ने राष्ट्रीय आपदाओं के दौरान बचाव कार्यों का नेतृत्व किया है।

गुरुवार को आयोजित कार्यक्रम में एनडीआरएफ की टीम द्वारा विभिन्न विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम में छात्रों और अध्यापकों ने विभिन्न मॉक ड्रिल्स और डेमोंस्ट्रेशन देखे। एनडीआरएफ टीम ने बताया कि आपदा के समय घबराएं नहीं, बल्कि व्यवस्थित तरीके से बचाव कार्यों में सहयोग करें। इस मौके पर गाजियाबाद के वरिष्ठ निरीक्षक चमन किशोर गुप्ता, कॉलेज प्रशासक आरिफ पाशा एडवोकेट, प्रधानाचार्य रियासत अली, सरफराज अहमद, जितेंद्र सिंह राठी, जगदीश राजन, अमर सिंह, अंबर रजा, कमर अली रजवी, रियासत नकवी, मोहम्मद शमी, कुमारी नरगिस के अलावा समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

रास्ता बंद कर चबूतरा बना कर लिया कब्जा आवागमन में दिक्कत

ठाकुरद्वारा, अमृत विचार: थाना डिलारी के गांव आलियाबाद निवासी फैजुल हसन ने थानाध्यक्ष डिलारी को प्रार्थना-पत्र देकर गांव के ही कुछ लोगों पर जबरन रास्ता बंद करने, गाली-गलौज करने और धमकी देने का आरोप लगाया है। पीड़ित का कहना है कि वह कई दिनों से आवाजाही के लिए परेशान है।

पीड़ित ने बताया कि उसने 20 वर्ष पहले अजीतपुर गांव में जमीन खरीदी थी। उस समय रास्ता अजीत कुमार द्वारा उपलब्ध कराया गया था और उस मार्ग से वर्षों से उनकी आवाजाही होती रही है। हाल ही में गांव के ही जावेद सिंह, शफीक, अहमद, मोहम्मद, साहिल आदि ने बिना किसी कारण रास्ता बंद कर दिया और 8 फीट का चबूतरा बनाकर रास्ते कब्जा लिया। उसके विरोध करने पर आरोपी पक्ष ने झगड़ा करने की कोशिश की और जान से मारने की धमकी दी। आरोपी पक्ष रास्ते से आवागमन करने नहीं दे रहा है, जिससे वह अपने खेतों तक भी नहीं जा पा रहे हैं। पीड़ित ने पुलिस से शिकायत कर रास्ता खुलवाने और आरोपी पक्ष के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

न्यूज ब्रीफ

किशोरी के अपहरण में दो के खिलाफ तहरीर

रामपुर, अमृत विचार : सैफनी थाना क्षेत्र के गांव रायपुर का मझरा निवासी रामबाबू का कहना है कि वह 14 नवंबर को कस्बा शाहबाद में अपनी बीमारी की दवा लेने गया था। घर पर अपनी विकलांग पत्नी और अपनी नाबालिग पुत्री को छोड़कर गया था। जब दवाई लेकर घर वापस आया तो ग्रामीण की पत्नी ने बताया कि थाना बिलारी निवासी दो युवक उसकी बेटी का अपहरण करके ले गए। पीड़ित ने तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

आज रामपुर आएंगे मुख्तार अब्बास नकवी

रामपुर, अमृत विचार : पूर्व केंद्रीय कैबिनेट मंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता मुख्तार अब्बास नकवी 28 नवंबर को दोपहर 2 बजे तीन दिवसीय प्रवास पर आएंगे। 29 नवंबर को प्रातः 11 बजे शंकरपुर स्थित निवास पर एसआईआर के तहत अपना मतदाता शुद्धिकरण फार्म बीएलओ को सौंपेंगे। उसके बाद प्रमुख पदाधिकारियों, किसान प्रतिनिधियों, कार्यकर्ताओं से भेंट करेंगे। शाम को विधायक आकाश सक्सेना की पुत्री के विवाह समारोह में शामिल होंगे। 30 नवंबर को सुबह 9 बजे जनप्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं से भेंट के पश्चात दिल्ली प्रस्थान करेंगे।

प्रतापगढ़, गाजियाबाद और भिवानी की टीमें सेमीफाइनल में पहुंची

महात्मा गांधी स्टेडियम पर हो रहा हसन आगा स्टेट हॉकी टूर्नामेंट

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

महात्मा गांधी स्टेडियम पर अतिथियों के साथ टीमें। ● अमृत विचार

अमृत विचार : स्वार रोड स्थित महात्मा गांधी स्टेडियम पर गुरुवार को खेले गए क्वार्टर फाइनल में प्रतापगढ़, गाजियाबाद भिवानी की टीमों ने जीत दर्ज कर सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। पहला मैच प्रतापगढ़ और सोनीपत रोहतक की टीमों के बीच खेला गया।

प्रतापगढ़ की टीम के खिलाड़ी दिव्यांशु और अनीस ने एक-एक गोल किया। जवाब में सोनीपत रोहतक की टीम के खिलाड़ी मनीष और रोहित ने एक-एक गोल कर मैच को बराबरी पर ला दिया। पैनल्टी शूट में भी दोनों टीमें बराबरी पर रहीं। सडनडेथ में प्रतापगढ़ ने 3-2 से जीत दर्ज कर सेमीफाइनल प्रवेश किया। स्टेडियम पर दूसरा मैच गंगापुर और गाजियाबाद की टीमों के बीच खेला गया। गाजियाबाद की टीम के खिलाड़ी रजनीश ने 38 वें मिनट में पैनल्टी कार्नर गोल कर टीम को 1-0 से बढ़त दिला दी। तीसरा मैच शाहजहांपुर और भिवानी की टीमों के बीच खेला गया। मैच के 12वें मिनट में भिवानी के खिलाड़ी रुद्र प्रताप ने गोल कर टीम को बढ़त दिलाई। इसके बाद भिवानी के सागर, रोहित ने गोल कर टीम को 3-0 से जीत दिला दी। मैचों की अंपायरिंग मोहम्मद जावेद, सुनील चौधरी, मुशीर अहमद, तजम्मुल जैदी, बृजेश कुशवाहा और मुनीश द्विवेदी ने की। टेक्निकल टेबल का कार्य हॉकी खिलाड़ी महेंद्र बोरा ने किया। इस अवसर पर ऑर्गनाइजिंग सेक्रेटरी जमशेद आगा और फैजान आगा ने अतिथियों को बुके देकर स्वागत किया। कमेंट्री नासिर खां ने की।

आज खेले जाएंगे दो सेमीफाइल

टूर्नामेंट मीडिया प्रभारी फहीम कुरैशी ने बताया कि 28 नवंबर को दो सेमीफाइनल मैच खेले जाएंगे। पहला मैच अपराह्न 2 बजे प्रतापगढ़ और गाजियाबाद की टीमों के बीच खेला जाएगा। जबकि दूसरा मैच आगा इलेविन और भिवानी की टीमों के बीच होगा।

पान दरीबा से जामा मस्जिद तक बनने लगी सड़क

रामपुर, अमृत विचार : जन सेवा समिति के पदाधिकारियों ने पान दरीबा से जामा मस्जिद तक सड़क बनवाए जाने के लिए धरना प्रदर्शन किया था। लंबे संघर्ष के बाद सड़क का निर्माण कार्य शुरू हो गया है।

समिति के प्रदेश अध्यक्ष वसीमुल हसन खां ने कहा कि समिति के पदाधिकारियों ने 18 नवंबर को जिलाधिकारी को ज्ञापन दिया था। जिलाधिकारी के आदेश पर सड़क निर्माण शुरू हो गया है। इसके लिए प्रदेश अध्यक्ष ने अमृत विचार का भी आभार जताया। पान दरीबा से शहर की जामा मस्जिद तक बदहाल सड़क का निर्माण कराए जाने के लिए जन सेवा समिति के मुद्दे को अमृत विचार ने प्रमुखता से प्रकाशित किया था। जन सेवा समिति के जिला अध्यक्ष वसीम उल हसन खां ने बताया कि पालिका द्वारा आज से दो वर्ष पहले पान दरीबा किला गेट से लेकर जामा मस्जिद सर्राफा बाजार तक की सड़क की नपत कराई थी लेकिन, दो वर्ष बाद भी सड़क का निर्माण नहीं हुआ है। इस मौके पर वसीमुल हसन खां, हारिस शम्सी, चंद्र प्रकाश रस्तोगी, शिराज शम्सी, शहाब खां, हारून खां, उमैर अहमद, शिबू खां, फैजान खां, छोटे लाल, अमन गुप्ता मौजूद रहे।

संविधान के जीवित होने पर राष्ट्र करता है प्रगति : कुलपति

जौहर विश्वविद्यालय में छात्र को पुरस्कृत करते कुलपति प्रो. जहीरुद्दीन। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● जौहर विश्वविद्यालय में हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम

अमृत विचार : मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय में गुरुवार को संविधान सप्ताह के समापन समारोह हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जहीरुद्दीन ने कहा कि जब नागरिक वैज्ञानिक अस्तित्व में आते हैं, तब संविधान जीवित होता है। उन्होंने कहा कि जब-जब संविधान जीवित होता है, तब राष्ट्र प्रगति करता है।

विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने गायन, भाषण, निबंध लेखन, मॉक संसद सत्र, कानूनी प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम प्रस्तुत कर तालियां बटोरीं। कुलपति ने छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया। विश्वविद्यालय के रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में हुए कार्यक्रम की शुरुआत तिलावते कुरआन मजीद से हुई। बीए-एलएलबी द्वितीय वर्ष की छात्रा लाइबा ने संविधान दिवस पर प्रस्तावना पठन किया। कुलसचिव डॉ. एसएन सलाम ने कहा कि हर साल 26 नवंबर को राष्ट्रीय संविधान दिवस मनाया जाता है। कुलपति प्रो. जहीरूद्दीन ने कहा संविधान के बगैर देश नहीं चलाया जा सकता था। इस मौके पर गुलरेज निजामी, डॉ. मोहम्मद कलीम, डॉ. स्वाति सिंह, प्रो. डॉ. तनवीर इरशाद, सदफ खान, डॉ. गुलफ्शा, आलमगीर, डॉ. नाजिम फरीद, डॉ. समीना बी, उजमा, राबिया खान, प्रीति यादव, डॉ. समरा, साकिब, मोहम्मद आसिम, माहिरा अखलाक आदि मौजूद रहे।

राजकीय रजा डिग्री कॉलेज में उमंग महोत्सव धूमधाम से शुरू

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

राजकीय रजा डिग्री कालेज में कार्यक्रम में बोलते अतिथि। ● अमृत विचार

अमृत विचार : राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में गुरुवार को तीन दिवसीय वार्षिक युवा महोत्सव उमंग में अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी वस्तुएं बनाना, सामूहिक परिचर्चा और भाषण प्रतियोगिता हुई। इससे पहले कार्यक्रम का उद्घाटन जिला युवा कल्याण अधिकारी विकास कुमार और क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी बृजेश कुमार ने सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया।

तरुणा जोगेश एवं अन्य छात्रों ने सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कॉलेज प्राचार्य प्रो. जागृति मदान धींगड़ा ने कहा कि पाठ्य सहगामी क्रिया कलापों में प्रतिभागिता से विद्यार्थियों को जो आत्मविश्वास प्राप्त होता है, उसका लाभ जीवनपर्यंत मिलता है। इसलिए विद्यार्थियों को उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करना चाहिए।

कार्यक्रम के समारोहक प्रो. सैयद मोहम्मद अरशद रिजवी एवं सह-समारोहक डॉ. अब्दुल लतीफ के संयोजन में तीन दिवसीय वार्षिक युवा महोत्सव उमंग का आगाज हुआ।

● पहले दिन हुई सामूहिक परिचर्चा और भाषण प्रतियोगिता

अधिक-से-अधिक प्रतियोगिताओं में 28 नवंबर को प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, कवि-सम्मेलन/मुशायरा प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता एवं मेहंदी-रचना प्रतियोगिता होगी।

जबकि, 29 को पुष्प-सज्जा प्रतियोगिता, फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, एकल-गायन प्रतियोगिता, निबंध-लेखन प्रतियोगिता एवं नुक्कड़-नाटक प्रतियोगिता होगी। जबकि 29 नवंबर को पुरस्कार वितरण होगा।

सोलर पंप के लिए 15 तक करें आवेदन

रामपुर, अमृत विचार : उप कृषि निदेशक राम किशन सिंह ने बताया कि 26 नवंबर से किसानों के लिए सोलर पंप की ऑनलाइन बुकिंग शुरू हो गई है। सोलर पंप के इच्छुक किसान कृषि विभाग की वेबसाइट पर 15 दिसंबर तक सोलर पंप की ऑनलाइन बुकिंग कर सकते हैं। किसानों को सोलर पंप पर सरकार द्वारा 60 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। किसानों को ऑनलाइन बुकिंग के समय 5 हजार रुपये टोकन मनी के रूप में ऑनलाइन जमा करना होंगे। सोलर पंप लेने के लिए किसानों का कृषि विभाग की वेबसाइट पर पंजीकरण होना जरूरी है। 2 एचपी के लिए 4 इंच, 3 से 5 एचपी के लिए 6 इंच जबकि, 7.5 और 10 एचपी के लिए 8 इंच का बोरिंग अनिवार्य है। उप कृषि निदेशक ने बताया किसान की स्वयं की बोरिंग होगी। सत्यापन के समय बोरिंग नहीं पाए जाने पर टोकन मनी की धनराशि जब्त हो जाएगी और आवेदन निरस्त हो जाएगा।

भविष्य के नागरिकों के शिल्पकार हैं शिक्षक

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

सेंट पॉल्स स्कूल के वार्षिकोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करतीं छात्राएं।

अमृत विचार : सेंट पॉल्स स्कूल में गुरुवार को वार्षिकोत्सव समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। कार्यक्रम का आरंभ जिला विद्यालय निरीक्षक अंजलि अग्रवाल ने किया। मुख्य अतिथि उपमहानिरीक्षक केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल पूर्ण सिंह धर्मशक्तू ने कहा कि शिक्षक ही भविष्य के नागरिकों का शिल्पकार होता है।

छात्र-छात्राओं ने स्वागत गीत से सभी अतिथियों व अभिभावकों का अभिनंदन किया। इस वर्ष के समारोह का मुख्य विषय वसुधैव कुटुम्बकम् रहा। जिसमें वैश्विक एकता, भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक विविधता के संदेश को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य मनोज पाठक ने स्कूल की वार्षिक उपलब्धियों, शैक्षिक प्रगति और भविष्य की योजनाओं से रूबरू कराया। उन्होंने कहा कि विद्यालय निरंतर छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। विद्यालय के हेड बॉय शुभम रस्तोगी ने वर्षभर में विद्यालय द्वारा स्थापित कीर्तिमानों का उल्लेख किया। नन्हे-मुन्ने बच्चों ने मेलोडी ऑफ को कॉन्टिनेंट से विश्व संस्कृति और रिदम ऑफ इंडिया के माध्यम से भारतीय परंपराओं और विविधता में एकता को मनमोहक रूप से प्रदर्शित किया। विद्यालय के निदेशक अरुण जोसफ दयाल ने कहा कि आज के बच्चे प्रतिभाओं का सागर हैं। बच्चों द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक ने साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता का सशक्त संदेश दिया। विद्यालय के छात्र नवीन शाह की विशेष प्रस्तुति दर्शकों के लिए विशेष आकर्षण रही। आयरन मैरी ने सभी का आभार जताया। इस अवसर पर उप प्रधानाचार्य सुधीर कुमार सिंह, अंजू अग्रवाल, रीना अग्रवाल, शहला जरताज, मखमूर अख्तर, सरस्वती जोशी, अकमल अली खान, मयंक अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

● सेंट पॉल्स स्कूल के वार्षिकोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम

प्रथम आने पर दीक्षा को मिली साइकिल

रामपुर, अमृत विचार : गुरुवार को विकास खंड मिलक के उच्च प्राथमिक विद्यालय लोहा में राष्ट्रीय आविष्कार ब्लॉक स्तरीय विज्ञान क्विज प्रतियोगिता हुई। जिसमें निस्वी के उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्रा दीक्षा को पहला पुरस्कार मिला।

द्वितीय स्थान निस्वी के उच्च प्राथमिक विद्यालय शिखा मौर्य और तृतीय स्थान मनप्रीत उच्च प्राथमिक विद्यालय लोहा कंपोजिट को मिला। चौथा पुरस्कार लोहा के उच्च प्राथमिक विद्यालय कंपोजिट के छात्र कुलदीप को मिला। पांचवां पुरस्कार चैनपुर के उच्च प्राथमिक विद्यालय के विवेक को मिला। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली दीक्षा उच्च प्राथमिक विद्यालय निस्वी को एआरपी पृथ्वी सिंह ने साइकिल दी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पिछड़ा वर्ग आयोग के उपाध्यक्ष सूर्य प्रकाश पाल, अर्चना गंगवा रजनीश पटेल, बीईओ बबीता सिंह, उर्वशी, सुशील गुप्ता, पंकज शर्मा, रोहित शर्मा, सचिन पांडेय, सत्येंद्र पांडे रहे।

मुरादाबाद से आई टीम ने विद्यालय का किया निरीक्षण

संवाददाता, स्वार

मां सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित करते बच्चे एवं आचार्य। ● अमृत विचार

अमृत विचार : डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सरस्वती विद्या मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रुस्तमनगर छपर्रा का वार्षिक निरीक्षण गुरुवार को मुरादाबाद मंडल से आई पांच सदस्यीय टीम पहुंची। टीम ने विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता, प्रशासनिक व्यवस्था, और भौतिक संसाधनों का गहनता से जायजा लिया।

टीम ने प्रशासनिक, आर्थिक कार्यालय लेखा-जोखा, आर्थिक एवं शिशु अभिलेख, प्रवेश पत्र, प्रवेश विवरण पंजिका, स्थानांतरण पंजिका, उपस्थिति पंजिका, वास्तु संग्रह पंजिका को देखा। भौतिक संसाधनः स्वच्छ पेयजल, विद्यालय स्वच्छता, लघु समकालीन व्यवस्था, शौचालय छात्र-छात्राओं और अध्यापकों के लिए अलग-अलग अग्निशमन यंत्र और फर्नीचर की स्थिति देखी। विद्यालय के प्रधानाचार्य पंडित विनोद कुमार मिश्रा ने निरीक्षकों का स्वागत किया। इस दौरान, आलिया अध्यक्ष, कन्या भारती द्वारा मां सरस्वती के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित किए। वंदना सभा में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी आयोजित किया।

शॉटपुट सीनियर वर्ग में रेयांश व मन्नत प्रथम

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

पुरस्कार के साथ मौजूद खिलाड़ी। ● अमृत विचार

अमृत विचार : व्हाइट हॉल पब्लिक स्कूल हो रहे तीन दिवसीय ओलंपिक्स के दूसरे दिन का आरंभ हिंद एजुकेशनल सोसायटी की संयुक्त सचिव प्रियंका नंदा एवं डॉ. वरुण प्रताप सिंह ने किया। उसके बाद शॉटपुट में सीनियर वर्ग में छात्र रेयांश वर्मा एवं बालिका वर्ग में मन्नत अरोड़ा प्रथम रहीं। यज्ञ देव और आद्या वर्मा द्वितीय, मोहम्मद रेहान एवं आरुषि पांडे तृतीय स्थान पर रहे।

शॉटपुट छात्र एवं छात्रा जूनियर वर्ग में मोहम्मद अनस एवं वाणी चौधरी प्रथम, मोहम्मद ओयून एवं मान्यता सिंह द्वितीय, महफूज हसन एवं वोनिशा माझी तृतीय रहे। जूनियर वर्ग हाई जंप में छात्र वर्ग में मोहम्मद साद-प्रथम, उमर खान द्वितीय, आयुष यदुवंशी तृतीय स्थान पर रही। छात्रा वर्ग में हिफजा खान प्रथम, वेविका रानी द्वितीय, अनिका तेजन तृतीय पर रहा। सीनियर वर्ग हाई जंप में छात्र वर्ग प्रांजल प्रथम, आर्यांश कुमार द्वितीय, आदित्य राज गौतम तृतीय स्थान पर रहा। छात्रा वर्ग में हिबा खान प्रथम, माहेव परवेज द्वितीय, आरोही सक्सेना तृतीय स्थान पर रही। सीनियर वर्ग 200 मीटर दौड़ में छात्र वर्ग में शौर्य राठौर प्रथम, रियाजुद्दीन द्वितीय, मोहम्मद अब्दुल्ला कैफ तृतीय स्थान पर रहे। छात्रा वर्ग में माही परवेज प्रथम, आरोही सक्सेना द्वितीय, श्रेया तृतीया स्थान पर रही। सब जूनियर वर्ग सैक रेस फाइनल छात्र एवं छात्रा वर्ग में शिवांश शर्मा एवं खिजरा बी प्रथम, अनक्ष तेजन एवं ऐशवीन कौर द्वितीय, अभिजीत चौधरी एवं सेजल राजपूत तृतीय पर रहे। जूनियर वर्ग 110 मीटर बाधा दौड़ फाइनल छात्र वर्ग एवं छात्रा वर्ग में उनजिला खान प्रथम, हिफजा खान द्वितीय, सृष्टि गौतम तृतीय रही।

निदेशक एवं हिंद एजुकेशनल सोसाइटी के उपाध्यक्ष कुनाल नंदा ने सभी बच्चों को बधाई दी।

न्यूज डायरी

छात्राओं को किया जागरूक

रामपुर, अमृत विचार : मिशन शक्ति 5 अभियान के तहत महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए थाना क्षेत्रों में मिशन शक्ति केंद्र की टीमों द्वारा व्यापक जागरूकता अभियान चलाया। थाना स्तरीय टीमों ने अपने-अपने थाना क्षेत्रान्तर्गत के विद्यालयों,शिक्षण संस्थानों, बाजारों, शॉपिंग मॉल, पार्क एवं सार्वजनिक स्थलों पर जाकर महिलाओं एवं बालिकाओं को सुरक्षा से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूक किया। जिसमें महिला सुरक्षा एवं आत्मरक्षा से जुड़े आवश्यक उपाय बताए। कानूनी अधिकार, नारी सम्मान से संबंधित प्रावधान एवं तत्काल सहायता के विकल्प हेल्पलाइन सेवाओं 1090 महिला शक्ति हेल्पलाइन, 181 महिला हेल्पलाइन, 112 आपातकालीन सेवा, 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन की कार्यप्रणाली एवं उपयोगिता घरेलू हिंसा, छेड़छाड़, ऑनलाइन उत्पीड़न तथा इनके विरुद्ध त्वरित कार्रवाई की प्रक्रिया संकट की स्थिति में पुलिस सहायता प्राप्त करने की सरल एवं प्रभावी प्रक्रिया के बारे में बताया।

हॉस्पिटल, मंदिर के मॉडल बनाए

टांडा, अमृत विचार : क्षेत्र के राजकीय इंटर कॉलेज बादली में गुरुवार को करियर मेले और वार्षिक उत्सव का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज की प्रधानाचार्य साधना बिश्नोई ने की। कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं द्वारा हॉस्पिटल, राम मंदिर, आधुनिक स्कूल भवन, स्टेट बैंक और सेल्फी पॉइंट प्रमुख रहे। मुख्य अतिथि के रूप में टांडा के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. सतपाल सिंह उपस्थित रहे। डॉ. सतपाल सिंह ने छात्रों को मेहनत, अनुशासन और लक्ष्य के प्रति समर्पण का संदेश दिया। विशिष्ट अतिथि डॉ. रेनू शर्मा, कोतवाली टांडा की एसआई अराधना तोमर, अनुप सिंह चौहान, अश्वनी कुमार यादव, गोपाल सिंह कश्यप उपस्थित रहे। प्रधानाचार्य साधना बिश्नोई ने बच्चों को उनकी प्रतिभा के अनुसार सही करियर चुनने की प्रेरणा दी।

शैक्षिक भ्रमण पर टीएमयू पहुंचे छात्र

रामपुर, अमृत विचार : राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गजरौला बिलासपुर के कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण पर मुरादाबाद के तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय ले जाया गया। प्रधानाचार्य नीलम सिंह के नेतृत्व में 26 नवंबर को समग्र शिक्षा अभियान के तहत भ्रमण कराया। प्रधानाचार्य ने बस को झंडी दिखाकर मुरादाबाद के लिए रवाना किया। विश्वविद्यालय में बच्चों ने विज्ञान के नए-नए प्रयोग और उपकरणों को समझा और उनसे संबंधित ज्ञान प्राप्त किया। इसके साथ ही संविधान दिवस के अवसर पर सभी छात्र-छात्राओं को संविधान साहित्य वाटिका मुरादाबाद का भ्रमण भी कराया। भ्रमण के तहत शिक्षिका प्रीती देवी गंगवार, किरन पाल, रेनू कुमारी, सलोनी पाल सहित अन्य मौजूद रहीं।

हरिद्वार योग शिविर में रामपुर से पहुंची महिलाएं

रामपुर, अमृत विचार : महिला पतंजलि योग समिति की रामपुर जिला प्रभारी और तहसील प्रभारी बहनें हरिद्वार में चल रहे पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने पहुंची हैं। शिविर 23 से 27 नवंबर तक चला। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार में स्वामी के सानिध्य में योग और आयुर्वेद का ज्ञान लिया। महिला पतंजलि योग समिति की केंद्रीय प्रभारी दीदी साध्वी आचार्या देवप्रिया के सानिध्य और निर्देशन से यह शिविर आयोजित हुआ।शिविर में लगभग 5000 योग साधक प्रशिक्षण ले रहे। अपने जीवन के नेतृत्व का विकास कार रहे हैं। स्वामी ने कहा कि पिंड में ब्रह्मांड है। शरीर में परमात्मा का वास है।शिविर में जिला महामंत्री अनिता शुक्ला, जिला सोशल मीडिया प्रभारी अंतरा यादव भी शामिल हुईं।

आयोजन राजकीय महिला डिग्री कॉलेज में हुआ कार्यक्रम, छात्राओं को संविधान की विशेषताएं बताईं

नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करता है संविधान : डॉ. सुनीता

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

महिला डिग्री कालेज के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में प्राध्यापक एवं छात्राएं।

रंगोली का अवलोकन करते प्राचार्य एवं छात्राएं। ● अमृत विचार

अमृत विचार : राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम एवं द्वितीय तथा रेंजर्स के संयुक्त तत्वावधान में विचार गोष्ठी हुई। कॉलेज प्राचार्य डॉ. सुनीता ने कहा कि संविधान सरकार की संरचना, शक्तियों और कार्यों को परिभाषित करता है।

प्राचार्य ने कहा कि यह अपने नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करता है और कानून के शासन को सभी के लिए एक समान करता है। हमें अपने संविधान के हितों की रक्षा करनी चाहिए। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. प्रीति लता ने कहा कि संविधान देश के सर्वोच्च कानून के रूप में कार्य करता है, जो समाज को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों और नियमों को निर्धारित करता है। यह सत्ता के दुरुपयोग को रोकता है न्याय और समानता को बढ़ावा देता है। एनएसएस इकाई प्रथम की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वंदना राठौर ने कहा संविधान देश के नागरिकों के मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रताओं की रक्षा करने में मदद करता है। रेंजर्स प्रभारी डॉ. मनोरमा चौहान ने कहा कि संविधान देश के सर्वोच्च कानून के रूप में कार्य करता है जो समाज को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों और नियमों को निर्धारित करता है। हमें संविधान का आदर करना चाहिए एवं इसका पालन करना चाहिए। तभी हम एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाएंगे।

छात्राओं ने रंगोली बनाकर दिया मतदान का संदेश

रामपुर, अमृत विचार : राजकीय महाविद्यालय रजा नगर में गुरुवार को रंगोली प्रतियोगिता हुई। कॉलेज प्राचार्य प्रो. आरएस गिरि ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य युवा मतदाताओं को मतदान के महत्व से अवगत कराना और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रति जागरूक बनाना है। प्रतियोगिता में छात्राओं ने रंगोली बनाई। प्राचार्य ने कहा कि राष्ट्र की प्रगति में युवा शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कार्यक्रम में महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. केसी दिवाकर ने मतदान के महत्व, लोकतांत्रिक अधिकारों एवं नागरिक कर्तव्यों से रूबरू कराया। इस अवसर पर महाविद्यालय के डॉ. अनुपम मित्रा, डॉ. मनीषा रानी भी उपस्थित रहीं। संचालन डॉ. कपिल देव ने किया। रंगोली प्रतियोगिता में दुर्गा ग्रुप प्रथम रहा। संतोष, काजल, शीतल रहीं। द्वितीय स्थान पर विद्या ग्रुप रहा जिसमें रजनी, प्रियंका, मोहिनी थीं। तृतीय स्थान पर शक्ति ग्रुप सें अंजा खान, कंचन, अनम और सोफिया रहीं।

अमृत विचार

मुरादाबाद, शुक्रवार, 28 नवंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

चोरी की बाइक के साथ आरोपी गिरफ्तार

टांडा, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के चौकी दढ़ियाल निवासी मनोज भटनागर की बाइक मंगलवार को घर के सामने खड़ी थी, तभी चोर उसे ले उड़े। पीड़ित की तहरीर पर कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस ने वाहन बरामदगी और आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए विशेष टीम गठित की। पुलिस को सूचना मिली कि बाइक चोर सैंटाखेड़ा जाने वाले मार्ग से जाने वाला है। पुलिस ने चेकिंग अभियान चलाया। तभी एक बाइक पर तीन युवक आते दिखे। पुलिस ने रुकने का संकेत दिया तो वे भागने लगे। पीछा करने पर पुलिस ने शाकिर पुत्र बब्बू दूधिया निवासी ग्राम छितरिया जागीर थाना टांडा को पकड़ लिया। फरमान निवासी ग्राम भुक्कनपुरी, आकिल निवासी ग्राम खोद शरीफ भागने में सफल रहे। फरार आरोपियों की तलाश की जा रही है।

400 तोतों की तस्करी में दो आरोपी गिरफ्तार

बरेली, अमृत विचार : वन विभाग की टीम ने तोतों की तस्करी में दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों के पास से 400 से अधिक तोते बरामद हुए हैं। गुरुवार को वन विभाग की टीम को सूचना मिली कि कोतवाली क्षेत्र के इस्लामिया मार्केट के पास कुछ लोग तोतों की तस्करी कर रहे हैं। इसके बाद वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। टीम को देखकर कार सवार तस्करों ने भागने का प्रयास किया। टीम ने सीबीगंज में तस्करों को गिरफ्तार कर लिया। वन विभाग की टीम ने 5 पिंजरों में 418 तोते बरामद किए। आरोपियों ने बताया कि वह तोते खरीदकर उनकी बिक्री करते हैं। पकड़े गए आरोपियों में रामपुर निवासी अरसलान और राकिब शामिल हैं। वन विभाग की टीम ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत आरोपियों पर रिपोर्ट दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया।

तस्कर गिरफ्तार, 377 ग्राम चरस बरामद

बिलारी, अमृत विचार : उप निरीक्षक अमित कुमार ने कोतवाली में दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि गुरुवार को नगर के सरकारी अस्पताल के पास बने आइडिया ग्राउंड से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। उसके पास से 377 ग्राम चरस बाद बरामद हुई। पूछताछ करने पर उसने अपना नाम आलम पुत्र अब्दुल सलाम निवासी मोहल्ला ठकुरान बताया है। आरोपी को जेल भेज दिया गया है।

दुर्घटनाओं में तीन लोगों की मौत

मिलक व स्वार में बुधवार देर रात और शाहबाद में गुरुवार को हुए हादसे

संवाददाता, मिलक/शाहबाद/स्वार

अमृत विचार : स्वार, शाहबाद, मिलक थाना क्षेत्रों में बुधवार रात और गुरुवार को तीन सड़क हादसों में तीन लोगों की मौत हो गई। स्वार और मिलक में बुधवार शाम को हादसे हुए।

मृतक दानिश।

जबकि शाहबाद में गुरुवार दोपहर को हादसे में ग्रामीण की मौत हो गई।

स्वार कोतवाली क्षेत्र के गांव लाड़पुर निकट बथुआखेड़ा निवासी 35 वर्षीय दानिश पुत्र नन्नू उत्तराखंड के काशीपुर स्थित आरके इंडस्ट्रीज में मजदूरी करता था। बुधवार को दानिश फैक्ट्री गया था। काम खत्म कर वह देर शाम बाइक से घर लौट रहा था। वह दढ़ियाल-काशीपुर मार्ग स्थित लोहिया पुल के पास पहुंचा, तभी डंपर ने उसकी बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर से दानिश की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद आरोपी चालक डंपर लेकर फरार हो गया। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शिनाख्त कर परिजनों को जानकारी दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। गुरुवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के सुपुर्द किया गया। जिसके बाद परिजनों ने दानिश के शव को सुपुर्द ए खाक कर दिया।

अस्पताल में बैठे मृतक हरपाल के के परिजन। ● अमृत विचार

लग्न चढ़ाकर लौट रहे पिता की मौत, बेटी घायल

मिलक, अमृत विचार : मिलक थाना क्षेत्र के गांव नगला उदई निवासी 30 वर्षीय हरपाल ढाबे पर काम करता था। वह अपनी पांच साल की बेटी के साथ पास के ही गांव में समधियाने में शाम को 6 बजे लग्न चढ़ाकर वापस आ रहे थे। हाईवे पर गांव के पास सामने से आते ही उनकी बाइक की दूसरी बाइक से टक्कर हो गई। जिसमें हरपाल और उसकी बेटी घायल हो गई। घायलों को पास के ही अस्पताल में भर्ती कराया। जहां देर रात को उपचार के दौरान ग्रामीण की मौत हो गई। सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंच गई। उसके बाद शव को पोस्टमार्टम को भेजा। वहीं लड़की उपचार के बाद वह घर चली गई। गुरुवार देर शाम को शव का अंतिम संस्कार किया।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार की मौत

शाहबाद, अमृत विचार : जिला बदायूं के आसफपुर फकावली निवासी राकेश (50) पुत्र किशनलाल गुरुवार को अपनी ससुराल टांडा गांव आए हुए थे। राकेश दोपहर बाद उड़द खरीदने के लिए अपने साले लाल सिंह को साथ लेकर गांव से निकले, उनकी बाइक टांडा से ओसी जाने पर रास्ते पर पहुंची, सामने से आ रहे ट्रक ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में बाइक चालक राकेश की मौके पर ही मौत हो गई। साथ में मौजूद साले लाल सिंह ने बाइक से कूदकर जान बचा ली। सूचना पर पहुंची पुलिस शव लेकर सीएचसी पहुंची। सीएचसी पर कोतवाल संजय कुमार और हल्का प्रभारी दिलीप सिंह भी पहुंचे।

मृतक राकेश।

युवक ने पत्नी से विवाद के बाद लगाया फंदा

शाहबाद, अमृत विचार : कस्बे के मोहल्ला अफगानान निवासी शिवम (24) मछली का कारोबार करता था। यहां वह अपनी पत्नी समरीन के साथ रहता था। उसका पूरा परिवार बरेली में निवास करता है।

मृतक की पत्नी ने बताया कि करीब दो साल पहले उसकी शादी शिवम के साथ हुई थी। उसके पांच माह की बेटी भी है। लेकिन शादी के कुछ समय बाद ही हम दोनों में झगड़ा होने लगा। बुधवार रात भी झगड़ा हुआ था। झगड़े के बाद वह बाहर टहलने चली गई। कुछ देर बाद पत्नी कमरे में पहुंची ने देखा कि पति ने साड़ी से फंदा लगा लिया है। उसने परिजनों को सूचना दी। शाहबाद आकर परिजनों ने पुलिस को बुलाया। शिवम की मां ने बताया कि हमें तो पता नहीं कि किस बात पर झगड़ा हुआ होगा। हम तो यहां रहते नहीं थे। शिवम की पत्नी आएदिन उससे झगड़ा करती थी। मृतक के मां ने कहा कि उसकी पत्नी पर हत्या का शक जा रहा है। सूत्रों की माने तो मुस्लिम युवती ने धर्म परिवर्तन करके शादी की थी। कोतवाल शाहबाद संजय कुमार ने बताया कि मृतक की मां ने सूचना दी थी। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। तहरीर आने पर कार्रवाई के जाएगी।

सिटी मजिस्ट्रेट को ज्ञापन देते क्षत्रिय समाज के लोग। ● अमृत विचार

आपत्तिजनक टिप्पणी पर क्षत्रिय समाज में आक्रोश

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के तत्वावधान में गुरुवार को कार्यकर्ता कलेक्ट्रेट पहुंचे। क्षत्रिय महासभा ने सीएम को संबोधित ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा।

संगठन के जिलाध्यक्ष ठाकुर राजेंद्र सिंह ने बताया कि आईएएस ने ब्राह्मण समाज की बेटियों को लेकर विवादित बयान दिया है। जबकि दूसरे प्रकरण में सपा प्रवक्ता मनोज यादव ने डिबेट में उप्र के मुख्यमंत्री और क्षत्रिय समाज के खिलाफ अभद्र टिप्पणी की है। ऐसे अधिकारियों और प्रवक्ता के खिलाफ समाज में रोष व्याप्त है। जिलाध्यक्ष ने कहा कि अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर देश में कुछ लोग सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए सनातन, महिलाओं, सवर्णों और देवी देवताओं और उच्च पदों पर बैठे सम्मानित व्यक्तियों पर कोई भी अनर्गल बयान दे रहे हैं। जिसका मुख्य कारण समाज की उदासीनता, समाज के बड़े नेताओं और अधिकारियों की चुप्पी है। ऐसे बयान देने वाले व्यक्तियों के प्रति किसी समाज को कोई संवेदनशीलता न दिखाते हुए कड़ी कानूनी कार्रवाई की मांग करनी चाहिए। टीवी डिबेट पर भी शिकंजा कसा जाना चाहिए। ज्ञापन देने वालों में जिलाध्यक्ष राजेंद्र सिंह, अतुल कुमार सिंह, ओमवीर सिंह, कौशलेंद्र सिंह, रामेश्वर सिंह, देवेंद्र फौजी, अंजीत सिंह, अजय ठाकुर, सचिन सिंह, अमन सिंह, शौर्य प्रताप सिंह, वंश प्रताप सिंह, अनुज रहे।

गणना प्रपत्र में मतदाताओं को डाउटफुल श्रेणी में अपलोड करने का विरोध

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : आम आदमी पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता फैसल खान लाला सहित आप के सभासद ने जिलाधिकारी से मुलाकात की। डेलिगेशन ने निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन के विपरीत एसआईआर फार्म में नामों को डाउटफुल श्रेणी में अपलोड किए जाने के संबंध में शिकायत दर्ज कराई और ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा।

ज्ञापन में निर्वाचन आयोग द्वारा फॉर्म के लिए निर्धारित श्रेणियां निम्न प्रकार से स्पष्ट रूप से परिभाषित की गई हैं। ए-श्रेणी जिन व्यक्तियों के नाम वर्ष 2003 की मूल मतदाता सूची में सम्मिलित थे। बी-श्रेणी जिनका नाम 2003 की सूची में नहीं है, परंतु उनके माता-पिता का नाम 2003 की सूची में दर्ज है। सी श्रेणी यानि डाउटफुल है, जिनका नाम तथा उनके माता-पिता का नाम 2003 की सूची में उपलब्ध नहीं है। कार्यकर्ताओं ने कहा कि मानकों के बावजूद जिले में क्षेत्र के बीएलओ द्वारा सभी व्यक्तियों के नाम बिना किसी जांच के सीधे यानी डाउटफुल कैटेगरी में अपलोड किए जा रहे हैं। इस अमल से बड़ी तादाद में ऐसे लोग भी डाउटफुल कैटेगरी में चले जा रहे हैं जो असल में ए या बी कैटेगरी में आते हैं। पार्टी ने मांग की है कि बीएलओ एवं पर्यवेक्षकों की जांच कराई जाए। फार्म कैटेगरी को निर्वाचन आयोग की वास्तविक गाइडलाइन के अनुसार ही सही कैटेगरी ए, बी, और सी में पुनः सुनिश्चित कराया जाए। इस मौके पर मोहम्मद जफर, यासीन उर्फ गुड्डू, सरफराज उर्फ गुड्डू, आरिफ सिकंदर उर्फ राजू, समीना बी, फायजा बी, शिराज जमील खां, रय्यान खां, आलमगीर, अलमास, अब्दुल समद, माजिद खां, सफी खां, महेश सैनी आदि मौजूद रहे।

डीएम को ज्ञापन देते आप के कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

● आप डेलिगेशन ने डीएम से मुलाकात करके सौंपा ज्ञापन

बीएलओ घर-घर जाकर भरवाएं फॉर्म

रामपुर, अमृत विचार : उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश पर विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण के गणना प्रपत्र वितरण एवं संकलन एवं डिजीटलीकरण का कार्य 4 नवंबर से 4 दिसंबर तक किया जा रहा है, जिसके तहत बीएलओ द्वारा घर-घर जाकर गणना प्रपत्र वितरित किए जा रहे हैं।

विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण की अंतिम तिथि 4 दिसंबर है। किसी मतदाता द्वारा गणना प्रपत्र 4 दिसम्बर से पूर्व नहीं दिया जाता है तो उसका नाम मतदाता सूची से वंचित रह जायेगा। जनपद की विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के सभी मतदाताओं से यह अपेक्षा की है कि वह अपना गणना प्रपत्र जल्द से जल्द भरकर बीएलओ को उपलब्ध कराए, ताकि बीएलओ द्वारा उनका डिजीटलीकरण समय से किया जा सकें। उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि बीएलओ समय से कार्य पूरा कर लें।

एसआईआर पूरा करने पर बीएलओ सम्मानित

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण में बूथों पर गुणवत्ता के साथ 100 प्रतिशत कार्य समय से पूर्व करने वाले बीएलओ को सम्मानित किया।

विधानसभा क्षेत्र स्वार में बूथ 138 जूनियर हाईस्कूल शिवनगर के राजेंद्र कुमार सागर, बूथ 135 प्राथमिक विद्यालय धनौरा विमला, बूथ 6 प्राथमिक विद्यालय करीमपुर हितेंद्र सिंह पाल, विधानसभा क्षेत्र चमरौआ में बूथ 52 प्राथमिक विद्यालय पदपुरी के परवेज खान को सम्मानित किया। विधानसभा क्षेत्र बिलासपुर में बूथ 200, पिपलिया मिश्र की सुनीता जैन को सम्मानित किया। विधानसभा क्षेत्र मिलक बूथ 101, प्राथमिक विद्यालय नया भवन जयतौली राजवीर सिंह को सम्मानित किया। जिलाधिकारी ने कहा कि सटीक, पारदर्शी तथा त्रुटिरहित निर्वाचक नामावली के निर्माण में बीएलओ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सम्मानित बीएलओ ने मेहनत, प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी का जो आदर्श प्रस्तुत किया है। सभी बीएलओ साथियों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगा। उन्होंने जनपद के सभी बीएलओ से अपील की कि इसी उत्साह, ईमानदारी और समयबद्धता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए जनपद को प्रदेश में उत्कृष्ट श्रेणी में स्थापित करें।

बीएलओ को सम्मानित करते जिलाधिकारी। ● अमृत विचार

एसआईआर को लेकर किया जागरूक

रामपुर, अमृत विचार : बुधवार रात को पुलिस लाइन में एसआईआर को लेकर बैठक हुई। जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी और पुलिस अधीक्षक विद्या सागर मिश्र ने विशेष गहन पुनरीक्षण से संबंधित को निर्देश दिए। इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक अनुराग सिंह, क्षेत्राधिकारी शाहबाद हर्षिता सिंह,एवं थाना प्रभारी एवं शाखा प्रभारियों सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

मंडी समिति सचिव का स्वागत करते व्यापारी। ● अमृत विचार

व्यापारी हित ही व्यापार मंडल का उद्देश्य : शैलेंद्र

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : उप्र उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेंद्र शर्मा के नेतृत्व में गुरुवार को पदाधिकारियों की मौजूदगी में डूंगरपुर नवीन मंडी में कार्यक्रम हुआ। फल सब्जी व्यापारी संगठन के अध्यक्ष तनवीर खां गुड्डू के संयोजन में हुए कार्यक्रम शैलेंद्र शर्मा ने कहा कि फल सब्जी-अनाज मंडी के सभी व्यापारियों से पुराना रिश्ता है।

उन्होंने कहा कि हमारी हर दम कोशिश है कि व्यापारी निडर होकर अपना व्यापार करें। मंडी सचिव मनोज सूरी द्वारा मंडी में सफाई, पानी और लाइट आदि की सहूलियत अच्छे से की गई है। शोएब मोहम्मद खां ने कहा व्यापारी को डरने घबराने की जरूरत नहीं है। शैलेंद्र शर्मा, शोएब मोहम्मद खां ने मंडी सचिव मनोज सूरी का स्वागत किया। शोएब मोहम्मद खां, हारिस शम्सी, प्रदीप खंडेलवाल, बिलाल शम्सी, मुराद खां, तनवीर गुड्डू, नाजिश खान, कामरान खान, फरमान खान, बिलाल शमसी, नंदकिशोर, शेखर, सीता सैनी, धागन सिंह, चंद्र प्रकाश रस्तोगी, भूरा रहे।

चिकित्सकों की कमी, प्रशिक्षु देख रहे मरीज

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : जिला अस्पताल में इलाज के अभाव में मरीजों की जान जा रही है, दो दिन पहले 24 घंटे में पांच मरीजों ने इमरजेंसी में दम तोड़ दिया था। इसको लेकर जिला अस्पताल प्रशासन जांच में जुटा है। लेकिन सच्चाई है कि जिला अस्पताल में चिकित्सकों की कमी है और प्रशिक्षुओं के हाथों में मरीजों की जान है। जिला अस्पताल में सृजित 30 पदों के सापेक्ष महज 10 चिकित्सक तैनात हैं।

जिला अस्पताल में मरीजों की जान राम भरोसे है, बदहाली का यह आलम है कि मरीज वार्ड में पड़ा रहता है, लेकिन उसे कोई देखने वाला नहीं है। तहसील शाहबाद के कस्बा सैफनी निवासी रिजवान रजा दो दिन से अस्पताल के वार्ड के बेड नंबर 6 पर ऑक्सीजन लगाए लेटे हैं। उनका कहना है कि उन्हें देखने की जिम्मेदारी किसी की नहीं है। उनकी पत्नी मेराज बी बताती हैं कि उनके पति जिला अस्पताल में भर्ती हैं, लेकिन उन्हें कोई देखने तक नहीं आया। इमरजेंसी में बैठे चिकित्सक ने बाहर से इंजेक्शन लिख दिए जोकि 360 रुपये के आए। उन्होंने बताया कि उनके पति ने बताया कि उन्हें एक इंजेक्शन ही लगाया गया है। जबकि मुख्य चिकित्साधीक्षक बीसी सक्सेना ने जिला अस्पताल में 100 प्रतिशत दवा देने का दावा किया।

वार्ड में भर्ती शाहबाद के कस्बा सैफनी का मरीज रिजवान रजा। ● अमृत विचार

> जिला अस्पताल में चिकित्सकों की कमी है, क्योंकि जिला अस्पताल का माहौल देखते हुए चिकित्सक अस्पताल में काम करना नहीं चाहते। कुछ दिन काम करते हैं और फिर वह नौकरी छोड़कर अपनी क्लीनिक खोल लेते हैं। रेडियोलॉजिस्ट भी शाहबाद से अटैचमेंट पर है। आउटसोर्सिंग के स्टाफ से भी काम चलाया जा रहा है।
>
> **-डॉ. बीसी सक्सेना, मुख्य चिकित्साधीक्षक जिला अस्पताल**

चिकित्सक	पद	तैनाती
सर्जन	2	00
न्यूरोलॉजिस्ट	00	00
ईएनटी	01	00
आर्थो	02	01
फिजिशियन	02	01
कार्डियक	01	00
रेडियोलॉजिस्ट	02	00
प्रशिक्षु चिकित्सक	--	04
60 से अधिक आयु के चिकित्सक	--	04

न्यूज डायरी

एसपी ने बीट बुक का निरीक्षण

रामपुर, अमृत विचार : पुलिस अधीक्षक विद्या सागर मिश्र द्वारा पुलिस कार्यालय में पुलिसकर्मियों की बीट बुक, बीट संबंधी अभिलेखों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक द्वारा बीट अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में सतत निगरानी रखने, महिला सुरक्षा के प्रति जागरूकता कार्यक्रम संचालित करने एवं स्थानीय नागरिकों के साथ बेहतर जनसंपर्क बनाए रखने के निर्देश दिए। बीट बुक के उत्तम संधारण, बीट से संबंधित पूर्ण, सटीक एवं अद्यतन जानकारी उपलब्ध रखने तथा बीट प्रबंधन में उत्कृष्ट कार्य पुलिस कर्मियों को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। जिसमें मुख्य आरक्षी पुष्पेंद्र कुमार बादल थाना मिलक, महिला आरक्षी श्वेता राजपूत थाना केमरी, पुष्पेंद्र कुमार की बीट बुक को पुलिस अधीक्षक ने पूर्ण प्रविष्टियों, सटीक अभिलेखन एवं उत्तम सुलेख के आधार पर उत्कृष्ट बीट बुक का सम्मान प्रदान किया।

जागरूक चालकों को किया सम्मानित

स्वार, अमृत विचार : पुलिस अधीक्षक विद्या सागर मिश्र के आदेशानुसार यातायात माह को लेकर यातायात सुरक्षा जागरुकता अभियान जारी है। क्षेत्राधिकारी स्वार क्षेत्र भ्रमण के दौरान गन्ना लदी ट्रैक्टर-ट्रॉली के पीछे रिफ्लेक्टर युक्त लाल कपड़ा लगा दिखाई दिया। लाल कपड़े पर क्रॉस आकार में सिला गया, रिफ्लेक्टर दूर से ही स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। दिन के समय भी ट्रैक्टर-ट्रॉली को इस प्रकार सुरक्षित तरीके से ले जाना एसराहनीय एवं जागरूकता का प्रतीकात्मक उदाहरण रहा। क्षेत्राधिकारी स्वार द्वारा जागरूक एवं जिम्मेदार चालक से वार्ता की। चालक ने बताया कि यह बदलाव पुलिस विभाग एवं समाचार पत्रों द्वारा लगातार चलाए जा रहे जागरुकता अभियानों का ही परिणाम है। अभियान की प्रभावशीलता को देखते हुए क्षेत्राधिकारी स्वार द्वारा उस प्रगतिशील एवं जागरूक चालक को सम्मानित किया।

भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों की समस्याएं सुनीं

रामपुर, अमृत विचार : विकास भवन सभागार में जिला सैनिक बंधु बैठक का आयोजन सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी कर्नल पंकज नैथानी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। बैठक में जनपद के भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों द्वारा प्रस्तुत समस्याओं को गंभीरता से सुना गया। सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी ने प्राप्त प्रार्थना पत्रों पर प्राथमिकता के आधार पर त्वरित कार्यवाही एवं निस्तारण सुनिश्चित करने के लिए संबंधित विभागों को निर्देश देते हुए आख्या शीघ्र उपलब्ध कराने के आदेश दिये। उपस्थित भूतपूर्व सैनिकों से यह भी आग्रह किया कि यदि किसी प्रकार की समस्या हो तो वे निसंकोच उनके कार्यालय में आकर मिलें। बैठक के दौरान गन लाइसेंस से सम्बन्धित एक भूतपूर्व सैनिक द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र पर तत्क्षण सम्बन्धित कार्यालय से वार्ता कर कार्रवाई के लिए निर्देशित किया। बैठक में उपस्थित भूतपूर्व सैनिकों द्वारा अपनी विभिन्न व्यक्तिगत एवं विभागीय समस्याओं को प्रार्थना पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया।बैठक में अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. सत्य मूर्ति तोमर, सहायक कोषाधिकारी सुभाष चंद्र सहित अन्य अधिकारी एवं भूतपूर्व सैनिक रहे।

सांसद नदवी ने सुनीं लोगों की समस्याएं

रामपुर, अमृत विचार : सपा सांसद मोहिब्बुल्लाह नदवी स्वार क्षेत्र के ग्राम कुम्हरिया, लाडपुर, माटखेड़ा में इंतकाल होने पर गम में शामिल हुए। मरहूमों की मगफिरत की दुआ की। माटखेड़ा क्षेत्र के ग्राम टाहकलां में सतनाम सिंह के बेटे का एक सप्ताह पहले अमेरिका में हादसे में मौत हो गई थी। जिसका शव अभी अमेरिका से वापस इंडिया नहीं आया है। सरदार सतनाम सिंह के घर पर भी मृतक के लिए 2 मिनट मौन धारण किया। ग्राम टाहकलां में मीडिया प्रभारी महबूब अली पाशा के घर पर पहुंचे। सांसद ग्राम सकटपुरा में सरदार पूरन सिंह व प्रताप सिंह के घरों पर जाकर लोगों की समस्याएं सुनी। इस दौरान सांसद मीडिया प्रभारी महबूब अली पाशा, मेहंदी हसन, कदीर कुरैशी, राम बहादुर सागर, मौलाना रफी, डॉक्टर मकतब अहमद, अरशद अली,जमील सैफी, नासिर शेख, जुबैर अहमद, आजम, अयूब हाजी, बदन सिंह यादव, नरेश यादव रहे।

100 युवा बने भाकियू टिकैत के सदस्य

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : भाकियू टिकैत के तत्वावधान में किसान समीक्षा बैठक एवं नवनियुक्त युवा प्रदेश अध्यक्ष पश्चिमी उत्तर प्रदेश का स्वागत समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नवनियुक्त युवा प्रदेश अध्यक्ष एकलव्य सिंह सहारा ने शिरकत की।

किसानों ने अपने प्रदेश अध्यक्ष का अनेक स्थानों पर ढोल-नगाड़ों, पुष्प वर्षा और जयकारों के साथ स्वागत किया। मुख्य अतिथि एकलव्य सिंह सहारा ने कहा कि संगठन पदाधिकारियों के मार्गदर्शन के साथ-साथ कार्यकर्ताओं की मेहनत और विश्वास से ही चलता है। एकलव्य ने 100 युवाओं को सदस्यता ग्रहण कराई। सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का हृदय से आभार व्यक्त किया। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि जहां भी संगठन में 10 नए कार्यकर्ता जुड़ना चाहेंगे, मैं स्वयं वहां पहुंचकर उन्हें सदस्यता दिलाऊंगा। संगठन आपका था, आपका है और हमेशा आपका ही रहेगा। कार्यक्रम में प्रदेश सचिव मनजीत सिंह अटवाल, सुखविंदर सिंह हुंडल, साबिर अली, मजहर अली, परमोद यादव, वीर खालसा सेवा समिति के अध्यक्ष अवतार सिंह, सरफराज, गुरप्रीत अटवाल, फैज खान, शहराम खान, अदीब पाशा, हरजीत सिंह, हरदेव सिंह बाजवा, भूपराम, दीपक, सुरजीत सिंह, सेवा सिंह आदि उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते किसान। ● अमृत विचार

● नवनियुक्त युवा प्रदेश अध्यक्ष का साथियों ने किया स्वागत

शुल्क वसूली का आरोप लगा ईओ को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता, मिलक

अमृत विचार : मोहल्ला नसीराबाद में स्थित राम सिंह मढ़ी पर नगर पालिका द्वारा लोगों के कार्यक्रमों को लेकर शुल्क वसूली का विरोध करते हुए सभासद ने ईओ को ज्ञापन सौंपा। वार्ड के लोगों की समस्या का समाधान कराने की मांग की है। वहीं पंप पर काम कर रहे ऑपरेटर की नौकरी वापस की भी मांग की।

बुधवार को नगर पालिका के वार्ड 7 के सभासद प्रखर वशिष्ठ ने योग राजेंद्र प्रसाद को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने लिखा कि वार्ड में वंदन योजना के तहत राज्य वित्त के द्वारा पालिका के माध्यम से राम सिंह की मंडी का जीर्णोद्धार कराया जा रहा है। राम सिंह की मढ़ी पर लगभग कई वर्षों से मोहल्ले के लोग अपने मांगलिक व अन्य कार्यक्रम करते आ रहे थे। प्रकिया से वार्ड को लोगों परेशानी उठानी पड़ सकती है। वहीं जब से मंदिर पर कार्य हुआ, तब से नगर पालिका द्वारा कार्यकर्मों का पैसा वसूला जा रहा है। मंदिर परिसर में बने पंप पर ऑपरेटर के रूप में काम कर रहे ऑपरेटर को भी द्वेष भावना रखते हुए पालिका ने हटा दिया है। उन्होंने उनकी नौकरी वापस दिलाने की मांग की है। इस दौरान रवि सागर, प्रीति, कमलेश देवी, होमेंद्र कुमार, रामशरण लाल, मुकेश शर्मा, राजवती, जोगिंदर सिंह, वीरवती, सुधा, पूनम, मुकेश, आदेश, विजयपाल, सुनील कुमार रोहिल्ला, नरेश कुमार, नवनीत, दीपक रोहिल्ला, ओम शंकर, मोहम्मद हसीन ने ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

न्यूज ब्रीफ

बाइकों की भिड़ंत में तीन युवक गंभीर घायल

स्योहारा, अमृत विचार : दो बाइकों की आमने-सामने जोरदार टक्कर में सबाज पुत्र मकसूद निवासी इस्लाम नगर, कस्बा सादाबाद, सलीम पुत्र सलीम निवासी सहसपुर, इमरान पुत्र सकीर निवासी बुदेरन गंभीर घायल हो गए। घायलों को हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। पुलिस ने दोनों क्षतिग्रस्त बाइकों को कब्जे में ले लिया।

पेड़ पर लटका मिला युवक का शव

बिजनौर, अमृत विचार : शहर कोतवाली क्षेत्र के गांव स्वाहेड़ी बुजुर्ग में बृहस्पतिवार सुबह एक युवक का शव पेड़ से लटका मिला। मृतक की पहचान दीक्षित के रूप में हुई है, जो बुधवार शाम से लापता था। परिजनों के अनुसार, दीक्षित बुधवार शाम करीब छह बजे घर से निकला था, जिसके बाद वह वापस नहीं लौटा। रातभर परिजन और ग्रामीण उसकी तलाश करते रहे, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। बृहस्पतिवार सुबह जब ग्रामीण खेतों की ओर जा रहे थे, तो एनएच किनारे पीतम के ट्यूबवेल के पास पेड़ से लटका शव मिला। पुलिस का कहना है कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का लग रहा है, लेकिन पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा।

अकारण विवेचना लंबित रखने पर एसपी ने जताई नाराजगी

समीक्षा बैठक में सर्किल के सभी थानों के विवेचकों को विवेचनाएं समय से निस्तारित करने का दिया निर्देश

कार्यालय संवाददाता, अमरोहा

अमृत विचार : एसपी अमित कुमार आनंद ने नगर सर्किल के सभी विवेचकों का अर्दली रूम कर लंबित विवेचनाओं की समीक्षा की। विवेचनाओं को समय से गुणवत्तापूर्वक निस्तारण को लेकर निर्देश दिए। इस दौरान ऑपरेशन कन्विक्शन, साइबर सेल, साइबर सुरक्षा जागरुकता, व अपराध नियंत्रण एवं मिशन शक्ति केन्द्र के कार्यों के सम्बन्ध में भी समीक्षा कर निर्देश दिये।

गुरुवार को नगर कोतवाली पहुंचे एसपी अमित कुमार आनंद ने नगर सर्किल के सभी थानों अमरोहा नगर, डिडौली व रजबपुर के विवेचकों का अर्दली रूम किया। एसपी ने समस्त विवेचकों से लंबित विवेचनाओं की समीक्षा वार्ता करते हुए कारण पूछा। अकारण विवेचनाओं को लंबित रखने वाले विवेचकों को सख्त हिदायत देते हुए समय से निस्तारण करने का निर्देश। साथ ही जनशिकायतों की सुनवाई कर तत्काल जांच करने व विधिक निस्तारण करने के भी निर्देश दिये। अपराधियों पर शिकंजा कसने को कहा। मिशन शक्ति केन्द्र के कार्यों की समीक्षा करते हुये महिला अपराध संबंधी शिकायतों की सुनवाई कर तत्काल जाँच करने व विधिक निस्तारण के निर्देश दिए। समय से लंबित विवेचनाओं के शीघ्र निस्तारण पर जोर देते हुए वांछित आरोपियों व वारंटियों की गिरफ्तारी करने को कहा। साथ ही निर्देश दिए कि समाधान दिवस थाना दिवस में मिली शिकायतों को राजस्व विभाग के सहयोग से निस्तारित कराए। चोरी, लूट, व अन्य अपराधिक गतिविधियों में संलिप्त अपराधियों का भौतिक सत्यापन करने, अवैध शराब एवं अवैध शस्त्र रखने वालों व क्रय विक्रय करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करें।

नगर कोतवाली में अर्दली रूम के दौरान समीक्षा करते एसपी अमित आनंद।

अधिकारियों के साथ पैदल गश्त करते एसपी अमित आनंद। ● अमृत विचार

पैदल गश्त कर एसपी ने परखी सुरक्षा व्यवस्था

अमरोहा, अमृत विचार : एसपी अमित आनंद ने कानून-व्यवस्था और शांति बनाए रखने के उद्देश्य से नगर के भीड़भाड़ वाले स्थानों और मुख्य बाजारों में पैदल गश्त कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने अमरोहा नगर क्षेत्र के कोतवाली तिराहा, जेएस चौराहा, अंबेडकर चौक सहित अन्य मुख्य बाजारों और भीड़भाड़ वाले स्थानों का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने ड्यूटी पर तैनात अधिकारी-कर्मचारियों को भी आवश्यक निर्देश दिए। पैदल गश्त के दौरान पुलिस अधीक्षक ने आम जनता, व्यापारियों और दुकानदारों से बातचीत की। उन्होंने सभी को सुरक्षा का एहसास दिलाया और उनकी चिंताओं को सुना। पुलिस अधीक्षक ने जनपद के सभी थानों को अपने-अपने क्षेत्राधिकार में पर्याप्त पुलिस बल के साथ सतर्क रहने और निरंतर भ्रमणशील रहते हुए गश्त करने के निर्देश दिए हैं। इस दौरान उनके साथ क्षेत्राधिकारी नगर अभिषेक यादव और प्रभारी निरीक्षक पंकज तोमर सहित अन्य पुलिसकर्मी भी मौजूद रहे।

एसपी ने आरक्षियों की बीट बुक का निरीक्षण किया

अमरोहा, अमृत विचार : एसपी अमित कुमार आनंद ने बीट आरक्षियों की कार्यप्रणाली को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से उनकी बीट बुक का निरीक्षण किया। आरक्षियों को बीट प्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी और आवश्यक निर्देश दिए। एसपी अमित कुमार आनंद प्रतिदिन पुलिस कार्यालय में प्रत्येक थाने से एक-एक बीट आरक्षी को बुलाकर उनकी बीट बुक की जांच कर रहे हैं। सभी बीट पुलिसकर्मियों को निर्देशित किया गया कि वे अपने-अपने बीट क्षेत्र में सक्रिय रहें और जनता से लगातार संवाद स्थापित करें। उन्हें सूचनाओं का समय पर संकलन करने तथा बीट बुक्स में सभी प्रविष्टियाँ पूर्ण, अद्यतन एवं प्रामाणिक रूप से दर्ज करने को कहा गया। पुलिस अधीक्षक ने जोर दिया कि ऐसी पारदर्शी और उत्तरदायी कार्यशैली से जनता का पुलिस के प्रति विश्वास और अधिक मजबूत होगा।

लोन में रिश्वतखोरी का आरोप कार्रवाई की गुहार

हसनपुर, अमृत विचार : भ्रष्टाचार निवारण संगठन द्वारा ग्रामीण बैंक के कर्मचारी अनोज कुमार को रिश्वत लेते गिरफ्तार किए जाने के बाद अब किसान ने शाखा प्रबंधक और क्षेत्रीय प्रबंधक की मिलीभगत का आरोप लगाया है। पीड़ित किसान ने कार्रवाई की की मांग को लेकर जिलाधिकारी को शिकायती पत्र सौंपा है।

गांव मंगरौली निवासी कमल सिंह ने बताया कि उनके पिता के नाम पर उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक का लोन बकाया था। इस बकाया को चुकाने के लिए उन्होंने भूमि विकास बैंक से 3 लाख रुपए का लोन स्वीकृत कराया था। आरोप है कि लोन की 1,50,000 की राशि उनके खाते में ट्रांसफर होने के बावजूद, शाखा प्रबंधक, क्षेत्रीय प्रबंधक और अनोज कुमार क्षरा 20 हजार रुपए की रिश्वत का दबाव बनाया जा रहा था। असमर्थता जताने पर उनकी बाकी रकम रोक दी गई थी। एसीओ मुरादाबाद ने 13 नवंबर को अनोज को गिरफ्तार किया था। गुरुवार को पीड़ित किसान ने जिलाधिकारी से गुहार लगाई है कि शाखा प्रबंधक और क्षेत्रीय प्रबंधक को भी गिरफ्तार किया जाए।

गेट पर अपने पंजीयन प्रमाणपत्र लगाएं सभी चिकित्सा संस्थान

कार्यालय संवाददाता, अमरोहा

अमृत विचार : डीएम ने कलेक्ट्रेट स्थित कार्यालय कक्ष में पीसीपीएनडीटी के अन्तर्गत जनपदीय सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में डीएम ने निर्देश दिए कि जिले के प्रत्येक निजी चिकित्सा संस्था (हॉस्पिटल, नर्सिंग होम, अल्ट्रासाउंड सेंटर, पैथोलॉजी, क्लिनिक आदि) अपने मुख्य द्वार पर अपने पंजीयन प्रमाण पत्र को चस्पा करेंगे। यदि किसी निजी चिकित्सा संस्था में पंजीयन प्रमाण पत्र चस्पा और उपलब्ध नहीं पाया जाता तो उस चिकित्सालय पर सीलिंग की करवाई की जाएगी।

उन्होंने सभी चिकित्सा अधीक्षक एवं नोडल अधिकारियों को निर्देशित किया कि ऐसे अस्पतालों को चिन्हांकन कर उन्हें सील करें। निर्देश दिए कि जिस अल्ट्रासाउंड सेंटर पर जो चिकित्सक अधिकृत हो वही अल्ट्रासाउंड करेंगे तथा गर्भवती महिलाओ के फॉर्म - एफ को सुरक्षित रखेंगे। नोडल अधिकारी इसका परीक्षण करेंगे। जिलाधिकारी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि जनपद में कोई भी अवैध चिकित्सा संस्था न संचालित न हो। अगर कोई पाया जाता है तो उसको सील किया जाए। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सत्यपाल सिंह, सीएमएस डॉ एके भंडारी, जेडी अभियोजन राम ध्यान राम आदि उपस्थित रहे।

बैठक में निर्देश देतीं डीएम निधि गुप्ता वत्स। ● अमृत विचार

● डीएम ने दिए निर्देश, सभी अवैध अस्पतालों पर कार्रवाई को कहा

इनर व्हील क्लब आस्था ने बच्चों को बांटे स्वेटर

संवाददाता, हसनपुर

अमृत विचार : ठंड को देखते हुए इनर व्हील क्लब हसनपुर आस्था ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए नगर के रामसरन एवं सुशीला आनंद हाईस्कूल के जरूरतमंद बच्चों को स्वेटर वितरित किए।

क्लब की अध्यक्षा रितु अग्रवाल ने कहा कि बच्चों को ठंड से बचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। क्लब की सचिव खुशबू गुप्ता ने बताया कि शिक्षा और स्वास्थ्य पर ध्यान देना ही क्लब का मुख्य उद्देश्य है। सभी सदस्यों ने इस पहल में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। क्लब की उपाध्यक्ष पारुल अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष नीतू अग्रवाल सविता, अंशु, बबीता, मीनू और मनीषा मौजूद रहीं।

बच्चों के साथ इनर व्हील क्लब आस्था की सदस्य। ● अमृत विचार

खेलों को जीवन का हिस्सा बनाएं: परवेज

कार्यालय संवाददाता, अमरोहा

अमृत विचार : शहर के मालीखेड़ा स्टेडियम में हो रहे विधायक खेल स्पर्धा का समापन हो गया। प्रतियोगिता के दूसरे दिन वॉलीबॉल, फुटबॉल, कुश्ती, वेटलिफ्टिंग का आयोजन किया गया। आरंभ पूर्व एमएलएसी परवेज अली ने किया।

परवेज अली ने कहा कि जिस तरह पढ़ाई जीवन का हिस्सा है इसी तरह खेल भी जीवन का हिस्सा होना चाहिए। खेल हमें स्वस्थ बनाते हैं, हमें नई पहचान दिलाते हैं। इस दौरान जिला युवा कल्याण अधिकारी ऋषि कुमार, जिला क्रीड़ा अधिकारी देशकांत त्यागी जी, क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी अश्विनी कुमार, गौरव कुमार, अंकुर प्रकाश, प्रदीप कुमार, राजदीप सिंह, देवेंद्र सिंह, मुनेन्द्र सिंह, साक्षी तोमर, आंचल, उमेश कुमार, पुरुजीत सिंह, जमाल अहमद आदि उपस्थित रहे।

हरी झंडी दिखाकर रेस शुरू कराते पूर्व एमएलएसी परवेज अली। ● अमृत विचार

प्रतियोगिता के परिणाम

200 मी सीनियर बालक वर्ग में सुनील कुमार प्रथम, देवराज पाल द्वितीय, अरुण कुमार तृतीय। 200 मी दौड़ बालक जूनियर वर्ग में अमित सैनी प्रथम, निशांत द्वितीय, इशित तृतीय। 200 मीटर दौड़ बालिका वर्ग सीनियर नेहा प्रथम, राधा द्वितीय। सीनियर बालक वर्ग डिस्कस थ्रो आकाश प्रथम, जूनियर बालक वर्ग डिस्कस थ्रो मोहम्मद रियाजुल प्रथम, डिस्कस थ्रो सब जूनियर बालक वर्ग भविष्य प्रथम आयुष आदित्य, रवि कुमार तृतीय। सब जूनियर बालिका वर्ग गोला फेक में हंसिका चौधरी प्रथम। 1500 मी सीनियर बालक वर्ग मोहम्मद कैफ प्रथम, मोहम्मद फैज द्वितीय, शिवम तृतीय। जूनियर बालक वर्ग निशांत प्रथम, ऋषभ द्वितीय, कन्हैया तृतीय रहे।

छत से कबूतर चोरी, शिकायत करने पर दबंगों ने की मारपीट

कोतवाली गेट पर प्रदर्शन करते पीड़ित। ● अमृत विचार

संवाददाता, हसनपुर

अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के गांव में एक शादी समारोह के दौरान पड़ोसी की छत से पालतू कबूतर चोरी हो गया। इसके बाद दबंगों ने पीड़ित युवक व उसके परिवार के साथ मारपीट कर जातिसूचक गालियां दीं और जान से मारने की धमकी भी दी। पीड़ित ने मामले की शिकायत कोतवाली में की।

कोतवाली क्षेत्र के गांव गुलामपुर निवासी पप्पू पुत्र चरन सिंह ने गुरुवार को कोतवाली प्रभारी निरीक्षक को तहरीर दी कि बुधवार की देर रात उनके पड़ोसी के यहां शादी समारोह चल रहा था। इस दौरान पड़ोसी के कुछ रिश्तेदार उनके घर की छत पर भी बैठे थे। इन्हीं लोगों ने उसके पालतू कबूतर चोरी कर लिए। वह शिकायत करने के लिए पड़ोसी के घर गया तो पड़ोसी ने मारपीट की और मोबाइल छीन लिया। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक प्रेमपाल सिंह ने बताया कि जांच के आधार पर संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

मैत्री क्रिकेट मैच में पुलिस इलेवन ने जुबिलेंट इलेवन को 32 रन से हराया

संवाददाता, गजरौला

अमृत विचार : संविधान दिवस पर आयोजित मैत्री क्रिकेट मैच में पुलिस इलेवन ने जुबिलेंट इलेवन को 35 रनों से हरा दिया। हालांकि दोनों की टीमें ऑल आउट हो गईं। एसपी अमित कुमार आनंद को मैन ऑफ द मैच का खिताब दिया गया।

बुधवार की देर शाम जुबिलेंट के फुटबॉल मैदान में 15 ओवर के मैत्री क्रिकेट मैच में एसपी अमित कुमार आनंद के नेतृत्व वाली पुलिस इलेवन की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का निर्णय लिया। एसपी ने दो चौके लगाकर 10 रन बनाए और वह कैच आउट हो गए। एएसपी अखिलेश भदौरिया ने 16 रन, सीओ अभिषेक कुमार मात्र दो रन बनाकर कैच आउट हो गए। पूरी टीम 67 रन बनाकर आउट हो गई। जुबिलेंट इलेवन के कप्तान डा. सुजिंदर फोगाट दूसरी बॉल पर ही कैच आउट हो गए। जुबिलेंट इलेवन 12 वें ओवर में मात्र 32 रन पर ऑल आउट हो गई। कमेंट्री अरुण प्रताप सिंह एवं तरुण धीमान ने की। जुबिलेंट के यूनिट हेड विनोद झा ने एसपी अमित कुमार आनंद को डा. बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर की प्रतिमा भेंट की। जुबिलेंट में निदेशक जनसंपर्क सुनील दीक्षित, मंडी धनौरा की सीओ अंजलि कटारिया, इंस्पेक्टर मनोज कुमार, पीआरओ शौकिंद्र वालियान, विशाल गौरव, वीरेंद्र सिंह नेगी, पुनीत तिवारी, अमित पांडेय, सुनील ए सिंह, पुनीत गुप्ता, दिलीप पांडेय आदि भी मौजूद रहे।

एसपी अमित कुमार आनंद को ट्राफी देते आयोजक। ● अमृत विचार

● संविधान दिवस पर जुबिलेंट में हुआ क्रिकेट मैच का आयोजन

न्यूज डायरी

एसआईआर अभियान में जुटाए 3447 फॉर्म

बिजनौर, अमृत विचार : नगर पालिका स्योहारा के अधिशासी अधिकारी विजेंद्र सिंह पाल ने बताया कि नगर पालिका द्वारा सभी कर्मचारियों को पहले प्रशिक्षण दिया गया, जिसके बाद शहर के सभी 40 बूथों पर घर-घर जाकर एसआईआर फॉर्म एकत्र करने का कार्य शुरू किया गया। बृहस्पतिवार शाम तक कुल 3447 एसआईआर फॉर्म भरवाकर जमा किए गए। उन्होंने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि वे अंतिम तिथि का इंतजार न करें और एसआईआर फॉर्म अपने बीएलओ या नगर पालिका कर्मचारियों को सौंप दें। देरी की स्थिति में फॉर्म ऑनलाइन अपलोड होने में समस्या आ सकती है।

खेलकूद प्रतियोगिता: मेंढक दौड़ का बच्चों ने लिया आनंद

बुरावली, अमृत विचार : एसएलजे पब्लिक स्कूल में गुरुवार को वार्षिक खेलकूद के तीसरे दिन नर्सरी से दूसरी कक्षा तक के बच्चों ने मेंढक दौड़ का खूब आनंद लिया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कार दिए गए। पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों ने चम्मच दौड़ का आनंद लिया। कक्षा 6 से आठवीं कक्षा के बच्चों ने लंबी कूद के फाइनल में भाग लिया। विजेताओं को प्रधानाचार्या शिवानी त्यागी ने सम्मानित किया। पीटीआई रोहित पोसवाल व मनोज कुमार ने सहयोग किया। इस मौके पर समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

परिवार नियोजन के लिए जागरूक करने को सारथी वाहन किया रवाना

कार्यालय संवाददाता, अमरोहा

अमृत विचार : सीमएओ ने पुरुष नराबन्दी पखवाड़े के अवसर पर जन समुदाय के मध्य परिवार नियोजन के प्रति जागरुकता को लेकर हरी झंडी दिखारक सारथी वाहन को रवाना किया।

सीएमओ सत्यपाल सिंह ने बताया कि लोगों में परिवार नियोजन सेवाओं को लेकर जागरुकता लायी जा सके और परिवार नियोजन साधनों से जोड़ा जा सके। इसी उद्देश्य से ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर सारथी वाहन चलाये जाते हैं जिससे लोगों को परिवार नियोजन की स्थायी एवं अस्थायी विधियों के बारे में जानकारी उपलब्ध करायी जा सके। उप मुख्य चिकिल्सा अधिकारी जसकरन सिंह गंगवार ने बताया कि दंपतियों में प्रजनन स्वास्थ्य में सुधार लाने हेतु पुरुषों की सहभागिता अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रजनन स्वास्थ्य के दृष्टिगत पुरुष नसबन्दी बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बिना टांका एवं चीरा लगाए 10 मिनट की एक सरल प्रक्रिया है जिसमें लाभार्थी आधे घंटे में घर जा सकता है। यह महिला नसबन्दी की तुलना में अधिक सुरक्षित स्थायी साधन है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के समस्त अधिकारी, जिला कार्यकम प्रबन्धन इकाई एवं जिला सहयोगी संस्थान यूपीटीएसयू एवं यूनिसेफ के प्रतिनिधि उपस्थित रहें।

हरी झंडी दिखाकर वाहन रवाना करते सीएमओ। ● अमृत विचार

● सीएमओ ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

हुलिया, धर्म, ठिकाना बदला फिर भी 38 साल बाद पकड़ा गया

बरेली कार्यालय

अमृत विचार : भाई की हत्या के आरोप में 38 साल पहले जेल गया आरोपी पैरोल के बाद लापता हो गया था। उसने ठिकाना, हुलिया और धर्म भी बदल लिया। पुलिस ने आरोपी को गुरुवार को दबोच लिया।

शाही के रहने वाले प्रदीप कुमार सक्सेना को 1987 में भाई संजीव सक्सेना की चाकू से गोदकर हत्या के आरोप में जेल भेजा गया था। उसे 1989 में पैरोल मिली। इसके बाद गायब हो गया। हाईकोर्ट ने 16 अक्टूबर को आदेश दिया कि आरोपी को चार सप्ताह के अंदर गिरफ्तार कर सीजेएम कोर्ट में पेश किया जाए। आदेश के बाद एसएसपी अनुराग आर्य ने सीओ नगर प्रथम आशुतोष शिवम की निगरानी में विशेष टीम बनाई।

प्रदीप के भाई सुरेश से पुलिस को अहम सुराग मिला। सुरेश ने बताया कि भाई को सालों से नहीं देखा मगर इतना जानते हैं कि मुरादाबाद में रहकर वह ड्राइवरी करता है। शाही पुलिस मुरादाबाद के कटघर क्षेत्र के करूला पहुंची। पता चला कि यहां प्रदीप अब्दुल रहीम उर्फ सक्सेना ड्राइवर के नाम मशहूर है और 30 साल से यहीं रहकर गाड़ी चला रहा है। ट्रांसपोर्ट नगर मुरादाबाद में पता चला कि अब्दुल रहीम उर्फ सक्सेना ड्राइवर बरेली के लिए निकला है। इसके बाद प्रेमनगर पुलिस ने डेलापीर मंडी से उसे दबोच लिया। जब वह फरार हुआ था तब उसकी उम्र लगभग 35 साल थी आज वह 70 साल से अधिक का हो चुका है।

● भाई की हत्या के मामले में पैरोल पर जेल से बाहर आने के बाद लापता हो गया था प्रदीप

व्यापारी राम भरोसे की दृष्टि से कोई और देखेगा दुनिया

हसनपुर, अमृत विचार : व्यापारी राम भरोसे अग्रवाल के निधन के बाद परिजनों ने सीएल गुप्ता आई बैंक के माध्यम से उनके नेत्रदान किये। नगर के मोहल्ला नवाबान निवासी व्यापारी राम भरोसे अग्रवाल का गुरुवार की प्रात: निधन हो गया। उनकी इच्छा थी कि मरने के बाद अपनी आंखों का दान करेंगे। परिजनों ने सीएल गुप्ता आई बैंक के। माध्यम से उनके नेत्र दान कर दिए। दुख की घड़ी में भी परिजन गर्व महसूस कर रहे थे। उनके पुत्र अविनाश अग्रवाल, पुत्रवधू संगीता अग्रवाल, दामाद सुनील अग्रवाल एवं नागरिक समाज से राजन अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

बिना अनुमति काटे सागौन के 57 पेड़

डिडौली, अमृत विचार : डिडौली में पतखोई रोड पर मुनन के खेत में सागौन के 57 पेड़ खड़े थे जिसे कस्बे के ही मेराजुल पुत्र इरशाद ने खरीद लिया। सोमवार की रात ठेकेदार ने वन विभाग की बिना अनुमति के सारे पेड़ काट दिए। मंगलवार को वन दरोगा नेपाल सिंह टीम के साथ मोके पर पहुंचे तो आरोपी मोके से भाग गए। वन दरोगा के अनुसार डिडौली कोतवाली में आरोपियों के खिलाफ तहरीर दे दी गयी है। प्रभारी निरीक्षक हरिशवर्धन सिंह ने बताया कि जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

पिकअप की टक्कर से पिता की मौत, पुत्र गंभीर घायल

हसनपुर, अमृत विचार : गुरुवार की शाम बारात से लौट रहे पिता-पुत्र को पिकअप ने टक्कर मार दी। पिता की मौत हो गई जबकि पुत्र को हायर सेंटर रेफर कर दिया। सैदनगली थाना क्षेत्र के गांव करनपुर सुतरी से ऋषिपाल पुत्र तीर्थ के बेटे की बरात रहरा थाना क्षेत्र के गांव डाकिया खादर गई थी। दूल्हे का मामा देवेंद्र पुत्र गजराज अपने 13 वर्षीय पुत्र के साथ दावत खाकर अपने गांव आदमपुर थाना क्षेत्र के कासमपुर लौट रहे थे। उनकी बाइक ऊझारी बुरावली लिंक मार्क पर पहुंची तो सामने से आ रही पिकअप ने बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही पिता-पुत्र बुरी तरह घायल हो गए। राहगीरों के द्वारा घायलों को नगर के निजी चिकित्सक क्या भर्ती कराया गया जहां देवेंद्र को चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया जबकि 13 वर्षीय बेटे को गंभीर हालत में मेरठ के लिए रेफर कर दिया।

अमृत विचार
मुरादाबाद, शुक्रवार, 28 नवंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

ट्रैक्टर ट्राली की टक्कर से बाइक सवार घायल

चंदौसी, अमृत विचार : चंदौसी के थाना बनियाठेर क्षेत्र के गांव अकरौली निवासी वीरपाल और उनके भाई जयपाल सिंह बुधवार शाम गांव मौलागढ़ में शादी समारोह में शामिल होने के बाद बाइक से घर जा रहे थे। जैसे ही वे बहजोई रोड स्थित न्यू बाइपास पर पहुंचे, उनकी बाइक को सामने से आ रही ट्रैक्टर-ट्रॉली से टक्कर मार दी। दोनों भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को सीएचसी में भर्ती कराया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

एमजेपीआरयू के प्रशासनिक अधिकारी ओमप्रकाश का निधन

बरेली, अमृत विचार : एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी ओमप्रकाश मिश्रा का बुधवार देर रात हार्ट अटैक से निधन हो गया। इससे विश्वविद्यालय में शोक की लहर दौड़ गई। वह मूल रूप से गोरखपुर के रहने वाले थे और विश्वविद्यालय परिसर स्थित आवास में पत्नी के साथ रहते थे। उनका अंतिम संस्कार शुक्रवार सुबह 11 बजे मॉडल टाउन श्मशान भूमि में किया जाएगा। विश्वविद्यालय शुक्रवार को बंद रहेगा।

गलत दिशा से तेज रफ्तार आई पिकअप और 6 जिंदगियां कर दीं खत्म

कार में हंसता-हंसाता जा रहा था परिवार, सब्जी से भरी पिकअप ने सामने से मार दी टक्कर, चालक फरार

कार्यालय संवाददाता, संभल

अमृत विचार: गंगा एक्सप्रेसवे के निर्माण का कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है लेकिन जितना हिस्सा बनकर तैयार हो गया है उस पर लोग वाहन दौड़ा रहे हैं। गुरुवार को सब्जी लेकर जा रहे पिकअप चालक की गलती से कार में हंसते-हंसाते जा रहे 6 लोगों की जान चली गई, जबकि दो जिंदगी के लिए जूझ रहे हैं।

अमरोहा के आदमपुर निवासी रोहित परिवार के साथ कार में सवार होकर बहजोई के बिसारू गांव में भतीजे के नामकरण समारोह में शामिल होने गया था। शाम को दावत खाने के बाद जल्दी घर पहुंचने के लिए गंगा एक्सप्रेस वे पर कार दौड़ा दी। रोहित सही दिशा और सही रफ्तार के साथ अपनी कार को लेकर आगे बढ़ रहे थे लेकिन समय का फेर कुछ और ही था।

देर शाम रोहित की कार हयातनगर थाना क्षेत्र के गांव धतरा के सामने पहुंची तभी सामने से गलत दिशा से तेज रफ्तार सब्जी से भरी पिकअप आई और कार में इतनी तेज टक्कर मारी की कार के परखच्चे उड़ गए और कार में सवार रोहित की पत्नी व बेटा-बेटी सहित 6 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई।

रोहित खुद गंभीर रूप से घायल हैं वहीं उनका 10 साल का बेटा भी जिंदगी के लिए जूझ रहा है।

मृतकों के परिजनों को सांत्वना देते डीएम डा. राजेंद्र पैंसिया। ● अमृत विचार

मृतका रिया।

मृतक भास्कर।

मृतक कपिल।

मृतका रेनू।

खिरनी से गंगा एक्सप्रेस वे पर चढ़ी थी पिकअप

संभल/सौंधन। सब्जी लदी जिस बोलेरो पिकअप ने रॉन्ग साइड से आकर सामने से आ रही कार में टक्कर मार कर 6 लोगों की जिंदगी छीनी उसके बारे में कहा जा रहा है कि यह पिकअप खिरनी से गंगा एक्सप्रेस वे पर चढ़ी थी और चालक ने लापरवाही दिखाते हुए गलत दिशा में ही पिकअप को दौड़ना शुरू कर दिया था। हादसे के बाद चालक मौके पर नहीं मिला ऐसे में माना जा रहा है कि वह भाग गया।

धमाका सुन दौड़ पड़े ग्रामीण

संभल/सौंधन। गुरुवार शाम को किसान अपने खेतों से घर जा रहे थे जबकि गांव में भी लोग अपने जरूरी कामों में लगे थे। इसी दौरान गंगा एक्सप्रेस वे पर तेज आवाज सुनाई दी। ग्रामीण अनहोनी की आशंका भांपकर गंगा एक्सप्रेस वे की तरफ दौड़ पड़े। मौके पर जाकर देखा तो लोगों के दिल हिल गए। हालात ऐसे थे कि कार में सवार अधिकांश लोगों की मौत हो गई थी और कार इतनी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई थी कि उसका इंजन कहीं गिरा था और बाकी हिस्से कहीं दूसरी जगह पर जाकर गिरे थे। ग्रामीणों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी और राहत में बचाव के काम में जुटे।

डीएम मौके पर पहुंचे, राहत बचाव में जुटा अमला

संभल/सौंधन। गंगा एक्सप्रेस वे पर हादसे की सूचना मिलने के बाद अपर पुलिस अधीक्षक कुलदीप सिंह मौके पर पहुंचे। उन्होंने राहत व बचाव कार्य के लिए आसपास के थानों का पुलिस बल भी मौके पर बुला लिया। कुछ ही देर में जिलाधिकारी डॉक्टर राजेंद्र पैंसिया भी मौके पर पहुंच गए। जिला अधिकारी घटनास्थल का निरीक्षण करने के बाद जिला अस्पताल पहुंचे और वहां मृतकों के परिजनों से मुलाकात कर घायलों के बेहतर इलाज की व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

जिला अस्पताल में बिलखते मृतकों के परिजन। ● अमृत विचार

कार में ही हो चुकी थी 6 लोगों की मौत

हयातनगर पुलिस व ग्रामीणों ने कार में फंसे लोगों को बाहर निकालने का काम शुरू किया। जिसे भी बाहर निकाला जा रहा था वह मृत था। केवल रोहित और उसके 10 साल के बेटे जय की सांस चल रही थी। जिंदगी की आस में सभी को आनन फानन में जिला अस्पताल भिजवाया गया। जहां डॉक्टरों ने रोहित की पत्नी, एक बेटे व बेटी सहित 6 को मृत घोषित कर दिया। जबकि रोहित और उसके 10 साल के बेटे जय को प्राथमिक उपचार देने के बाद हायर सेंटर रेफर कर दिया।

हादसे के बाद कार में देखते पुलिस कर्मी। ● अमृत विचार

पहले कटेगा पेड़ फिर होगी कुएं की खोदाई

संभल, अमृत विचार: संभल में 1978 के सांप्रदायिक दंगे से जुड़े कुएं की खुदाई का काम गुरुवार को बंद रहा। कुएं पर खड़ा पेड़ कटने के बाद खोदाई की जाएगी।

सिटी मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार ने बताया कि खोदाई का काम पूरा होने के बाद कुआं को ही संरक्षित करने की तैयारी है। हालांकि जिन लाला रामसरन रस्तोगी की हत्या कर कुएं में फेंक दिया गया था उनके परिजन कुएं की जगह पर स्मारक बनाने की मांग कर रहे हैं। संभल से पलायन कर दिल्ली में बस गए लाल रामसरन रस्तोगी के पौत्र कपिल रस्तोगी ने बताया कि दंगाइयों की भीड़ ने चाकुओं से गोदकर दादा की हत्या करने के बाद शव को तराजू से बांधकर कुएं में डाल दिया था। कपिल रस्तोगी ने कहा कि उनकी मांग पर उस कुएं की खुदाई का काम शुरू हुआ है। वह चाहते हैं कुएं की जगह उनके दादा का स्मारक बने।

आईएएस के विवादित बयान पर भड़के ब्राह्मण

कार्यालय संवाददाता, संभल/चंदौसी

अमृत विचार: मध्य प्रदेश के आईएएस संतोष वर्मा के विवादित बयान पर ब्राह्मणों का आक्रोश फूट पड़ा। प्रदर्शन कर एसडीएम को ज्ञापन दिया। प्रधानमंत्री से संतोष वर्मा को तत्काल बर्खास्त करने की मांग की।

गुरुवार को तहसील चंदौसी में अखिल भारतीय ब्राह्मण सभा के प्रतिनिधियों ने एसडीएम आशुतोष तिवारी को प्रधानमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन सौंपा। कवि माधव मिश्रा ने कहा कि मध्य प्रदेश के सीनियर आईएएस संतोष वर्मा का बयान पद की गरिमा और आचरण संहिता का उल्लंघन है। उन्होंने कहा कि ऐसे बयान समाज में जातिगत वैमनस्य फैलाते हैं। केंद्र सरकार को तत्काल संज्ञान लेकर इस अधिकारी को बर्खास्त करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी की माफी से मामला खत्म नहीं होगा। ब्राह्मण बेटियों पर टिप्पणी करना महिलाओं का अपमान है, जिसे किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने चेतावनी दी कि जल्द कार्रवाई नहीं की तो देशव्यापी आंदोलन किया जाएगा। जरूरत पड़ी तो भोपाल जाकर अधिकारी के कार्यालय के सामने भी प्रदर्शन किया जाएगा।

प्रदर्शन में सुरेश चंद शर्मा, ए.के. शर्मा, अश्विनी उपाध्याय, अभिमन्यु शर्मा, रामवीर शर्मा, राधेश्याम मिश्रा, जगदेव प्रसाद शर्मा, प्रकाश मिश्रा, आदित्य, राजेंद्र कुमार शर्मा सहित कई लोग मौजूद रहे।

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते ब्राह्मण समाज के लोग। ● अमृत विचार

● आईएएस की बर्खास्तगी की मांग, ब्राह्मणों ने प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

दिव्यांग किसान की जेब से 56 हजार रुपये निकाले

चंदौसी, अमृत विचार: मुरादाबाद के थाना बिलारी के गांव चिड़िया भवन निवासी दिव्यांग प्रदीप कुमार शर्मा अपनी बेटी हिमांशी के साथ धान और गेहूं बेचकर मिले 56 हजार रुपये लेकर मुरादाबाद लौट रहे थे।

गुरुवार दोपहर वह बेटी के साथ चंदौसी रोडवेज बस स्टैंड पहुंचे। बस में चढ़ने के बाद जब वह थोड़ा आगे बढ़ा तो देखा कि लोअर की जेब की चेन खुली हुई थी और उसमें रखे रुपये गायब थे। प्रदीप के अनुसार, इन पैसों से उसे बच्चों की फीस जमा करनी थी और कुछ अन्य जरूरी काम भी थे। उसने अपनी पत्नी गौरी शर्मा को घटना की जानकारी दी। देर शाम गौरी चंदौसी पहुंचीं और कोतवाली में तहरीर दी। प्रभारी निरीक्षक मोहित चौधरी ने बताया कि घटना दोपहर की है, जबकि इसकी सूचना शाम को दी गई। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है।

ट्रैक्टर व दो ट्रॉली बरामद, चार गिरफ्तार

संवाददाता, संभल

अमृत विचार: थाना धनारी पुलिस ने किसान के घर से दो ट्रॉली चोरी करने की वारदात का खुलासा 48 घंटे के भीतर कर चार अभियुक्तों को गिरफ्तार कर दोनों ट्राली के साथ ही चोरी में इस्तेमाल ट्रैक्टर बरामद किया। पुलिस ने चोरों से एक 315 बोर का तमंचा और चार कारतूस भी बरामद किए हैं।

25 नवंबर की रात थाना धनारी क्षेत्र के गांव भिरावटी निवासी किसान गजेंद्र सिंह के घर के बाहर खड़ी ट्रॉली चोरी हो गई थी। पुख्ता सूचना के बाद पुलिस ने पवन, फुलवारी सिंह, गंभीर सिंह पुत्र जगपाल सिंह निवासी मिलक साकिन थाना कैलादेवी और ओमप्रकाश पुत्र नाथू निवासी गुरैठा थाना धनारी को गिरफ्तार कर लिया। चारों ने स्वीकार किया कि उन्होंने ही गजेंद्र सिंह की ट्राली चोरी की थी।

धनारी पुलिस की गिरफ्त में आरोपी व उनसे बरामद ट्राली, ट्रैक्टर। ● अमृत विचार

● धनारी पुलिस ने 48 घंटे में किया ट्राली चोरी के मामले का खुलासा

इससे पहले 14 नवंबर की रात सोमवीर निवासी बागड़पुर छोइया थाना कैलादेवी के घर के बाहर खड़ी ट्रॉली भी चोरी की थी। बताया कि दोनों ट्रॉलियों को बदायूं के बिसौली में बेच दिया था। पुलिस ने दोनों ट्रॉलियों को बरामद कर लिया है। थानाध्यक्ष संजय कुमार ने बताया कि गिरफ्तार किए चारों अभियुक्तों को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है। उनका आपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा है ताकि यह पता लगाया जा सके कि उन्होंने अन्य थाना क्षेत्रों में भी कोई वारदात तो नहीं की।

बोलेरो पलटी, एक की मौत, पांच घायल

कार्यालय संवाददाता, संभल

अमृत विचार: शादी समारोह से लौट रहे ग्रामीणों की बोलेरो पशु के अचानक सामने आ जाने से अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में पलट गई। हादसे में बोलेरो सवार छह लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। इनमें से एक बुजुर्ग की मौत हो गई।

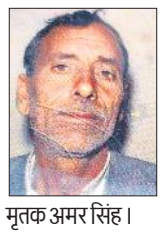

मृतक अमर सिंह।

ग्रामीण थाना क्षेत्र के ही गांव रेवाड़ा में शादी की दावत खाने गए थे। वापस लौटते समय थाना जुनावई क्षेत्र के गांव नंदपुर के निकट शनिवार रात करीब 11 बजे बोलेरो के सामने पशु आ गया। उसे बचाने के प्रयास में चालक नियंत्रण खो बैठा और बोलेरो खाई में पलट गई। हादसे में छह ग्रामीण घायल हा गए। इलाज के दौरान एक घायल अमर सिंह (61 वर्ष) पुत्र झंडू निवासी बबक्करपुर ने अलीगढ़ में दम तोड़ दिया। शव गांव पहुंचने पर परिजनों में चीख-पुकार मच गई। परिवार ने पोस्टमार्टम कराने से इंकार कर दिया है। मृतक के भतीजे विजयपाल ने बताया कि चाचा अमर सिंह के साथ चंद्रकेश, अरविंद, प्रेमपाल सहित छह लोग गाड़ी में सवार थे।

ग्रामीण की मौत के बाद गमजदा लोग। ● अमृत विचार

● शादी से लौट रहे थे ग्रामीण, पशु को बचाने में बोलेरो पलटी

डीएम व एसपी ने देखी कोर्ट की सुरक्षा

संवाददाता, चंदौसी

अमृत विचार: जिलाधिकारी डॉ. राजेन्द्र पैंसिया तथा पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार विश्नोई ने जिला एवं सत्र न्यायालय, परिसर की सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने परिसर में मौजूद सुरक्षा प्रबंधों का अवलोकन कर तैनात सुरक्षा कर्मियों को सतर्कता बनाए रखने के निर्देश दिए।

गुरुवार को दोनों अधिकारियों ने न्यायालय परिसर के विभिन्न प्रवेश द्वारों, सीसीटीवी कैमरों, बैरिकेडिंग, न्यायिक अभिरक्षा वाहन तथा सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की विस्तृत समीक्षा की। मौके पर मौजूद अधिकारियों और सुरक्षा कर्मियों से बातचीत करते हुए उन्होंने न्यायालय में आने-जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति की उचित चेकिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों को अपने निर्धारित स्थान पर पूरी सतर्कता से कार्य करने तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तत्काल सूचना देकर कार्रवाई करने को कहा गया। साथ ही परिसर में लगे सुरक्षा उपकरणों की कार्यप्रणाली की जांच कर संबंधित अधिकारियों को उनके नियमित रखरखाव के निर्देश भी प्रदान किए गए। पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार विश्नोई ने बताया कि जिला न्यायालय की सुरक्षा व्यवस्था लगातार पुख्ता बनाए रखने के लिए अवलोकन किया गया है।

न्यायालय परिसर की सुरक्षा का जायजा लेते डीएम व एसपी। ● अमृत विचार

● सुरक्षा कर्मियों को सतर्कता के दिए निर्देश

डेंटल कक्ष बंद मिलने पर सीएमओ ने जताई नाराजगी

संवाददाता, चंदौसी

अमृत विचार: मुख्य चिकित्सा अधिकारी तरुण पाठक के अचानक चंदौसी सीएचसी मे पहुंचे। सबसे पहले डायलिसिस सेंटर का निरीक्षण कर स्टाफ और मरीजों से उपचार व सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। इसके बाद वे एनआरसी पहुंचे, जहां बच्चों के परिजनों से हाल-चाल पूछते हुए वहां पर तैनात चिकित्सक से बेहतर इलाज व देखभाल के दिशा निर्देश दिए।

सीएमओ महिला वार्ड और डिलीवरी रूम में पहुंचे। यहां सफाई व्यवस्था ठीक न मिलने पर उन्होंने स्टाफ की फटकार लगाई और साफ सफाई में सुधार करने के निर्देश दिए। सबसे बड़ी लापरवाही तब सामने आई जब सीएमओ डेंटल रूम पहुंचे। डेंटल चिकित्सक कक्ष में मौजूद नहीं थीं और कमरा बंद मिला। मशीनें धूल खा रही थीं। उसे देखकर सीएमओ ने कड़ी नाराजगी जताई। उन्होंने निर्देश दिए कि डेंटल चिकित्सक प्रतिदिन निर्धारित कक्ष में मौजूद रहें और उपकरणों की नियमित साफ-सफाई सुनिश्चित की जाए। निरीक्षण के दौरान डा. हरविंदर सिंह, हेमेश नाथ, मुकेश शर्मा, गिरीराज किशोर, शिवराज आदि मौजूद रहे।

● डायलिसिस सेंटर का निरीक्षण कर मरीजों से जानकारी ली

जोश कार्यक्रम में नन्हें बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

संभल, अमृत विचार: बाल विद्या मंदिर के फाउंडेशनल विंग में वार्षिक खेल दिवस जोश उत्साह से आयोजित किया गया। नर्सरी, एलकेजी, यूकेजी, कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों ने रोमांचक दौड़ प्रतियोगिताओं में भाग लिया और आकर्षक ड्रिल प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। बच्चों की ऊर्जा, तालमेल और उत्साह ने पूरे मैदान को जीवंत कर दिया। संचालन विद्यालय की हेडमिस्ट्रेस पल्लवी रस्तोगी और एकेडमिक काउंसलर अंकिता गर्ग के मार्गदर्शन में हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सावी पुनिया, डॉ. नयरा रज़ा और डॉ. निधि सक्सेना मौजूद रहीं। विद्यालय प्रबंधक अमिताभ गर्ग ने बच्चों को निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य मनीष पंवार ने कहा कि खेल बच्चों में अनुशासन, आत्मविश्वास और टीमवर्क की भावना विकसित करते हैं।कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अभिभावक मौजूद रहे।

पश्चिमी यूपी में हाईकोर्ट की मांग तेज

कार्यालय संवाददाता, संभल

अमृत विचार: समाजवादी पार्टी के सांसद जियाउर्रहमान बर्क को जिला बार एसोसिएशन संभल के अधिवक्ताओं ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हाईकोर्ट बेंच की स्थापना की मांग को लेकर एक ज्ञापन सौंपा। कहा कि वह संसद में इस मांग को उठाकर सरकार पर दबाव बनाएं।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 22 जिलों और तहसील बार एसोसिएशनों का प्रतिनिधित्व करने वाली हाईकोर्ट बेंच स्थापना संघर्ष समिति पश्चिमी यूपी द्वारा लगातार हाईकोर्ट बैंच की मांग उठाई जा रही है। अधिवक्ताओं ने बताया कि वे पिछले 50 वर्षों से अधिक समय से इस मांग के लिए संघर्षरत हैं, ताकि आम जनता को सस्ता, सुलभ और त्वरित न्याय उपलब्ध हो सके। इस दौरान जेल भरो आंदोलन, पैदल मार्च, जनसभाएं, कैंडल मार्च और जनप्रतिनिधियों का घेराव जैसे कई बड़े आंदोलन किए जा चुके हैं। इन आंदोलनों में राजनीतिक, गैर-राजनीतिक, व्यापारिक और सामाजिक संगठनों के साथ बड़ी संख्या में आम जनता ने भी समर्थन दिया है।

सांसद जियाउर्रहमान बर्क ने कहा कि समय-समय पर उन्होंने इस मांग को संसद और अन्य मंचों पर मजबूती से उठाया है। बार एसोसिएशन के अधिवक्ताओं ने आगे भी सहयोग बनाए रखने का आग्रह किया। अधिवक्ताओं ने कहा कि सांसद बर्क शीतकालीन संसद सत्र में इस मुद्दे को जोरदार तरीके से उठाएं। ताकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हाईकोर्ट बेंच की स्थापना हो सके और क्षेत्र की जनता को न्याय पाने में सहूलियत मिल सके।

सांसद जियाउर्रहमान बर्क को ज्ञापन देते अधिवक्ता। ● अमृत विचार

● अधिवक्ताओं ने सांसद बर्क को सौंपा ज्ञापन, संसद में इस मुद्दे को उठाने की अपील

एसपीएस कप का अंतिम मुकाबला बिलारी किंग्स ने जीता

चंदौसी, अमृत विचार: मॉडल लॉ कॉलेज के ग्राउंड पर चल रहे एसपीएस कप का अंतिम मैच ब्लैक पैंथर और बिलारी किंग्स के बीच खेला गया।

पहले बल्लेबाजी करने उतरी बिलारी किंग्स की टीम ने 20 ओवर में 144 रन बनाए। मोहम्मद कैफ ने 26, आशीष शर्मा ने 15 और नादिर ने 17 रनों का योगदान दिया। कुणाल शर्मा और विकास माथुर ने 2-2 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी ब्लैक पैंथर की टीम 14.2 ओवर में 134 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। कासिम ने 63 और तरुण विष्ट ने 38 रनों की पारी खेली। बिलारी किंग्स की ओर से आशीष शर्मा, सदफ अली और सार्थक चौधरी ने 3-3 विकेट चटकाए। बिलारी किंग्स ने यह मुकाबला 10 रन से अपने नाम किया। मैन ऑफ द मैच पुरस्कार आशीष शर्मा को दिया गया।

मेडिकल स्टोर की आड़ में चल रहा अस्पताल सील

कार्यालय संवाददाता, संभल

अमृत विचार: सिटी मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार ने मेडिकल स्टोर की आड़ में चल रहे अस्पताल संचालन को पकड़ लिया।अस्पताल को सील कराने के साथ ही मुकदमा दर्ज कराने के निर्देश दिये हैं।

सिटी मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार गुरुवार को थाना नखासा क्षेत्र के हसनपुर रोड स्थित गांव इमादुल मुल्क में लाइफ लाइन फार्मेसी नाम के मेडिकल स्टोर पर पहुंचे तो वहां का नजारा देखकर चौंक गये। मेडिकल स्टोर के पीछे अवैध अस्पताल के साथ ही कई गंभीर अनियमितताएं मिलीं। चार-पांच बेड लगाकर मरीजों के उपचार की व्यवस्था की गई थी। दूसरे चैंबर में दो मरीज मिले। इलाज कराने आये लोगों ने बताया कि वह पास के भट्ठे पर काम करते हैं और यहीं अपना इलाज करवाते हैं। चैंबर में 'डॉ. उम्मेहिना' की नेम प्लेट भी पाई गई। संचालक अरशद अली ने स्वीकार किया कि वही मरीजों का इलाज कर रहे थे। टीम को चैंबर से सटा एक और कमरा मिला, जो ऑपरेशन या लेबर रूम जैसा प्रतीत हुआ। यहां सर्जिकल उपकरण भी पाए गए। सिटी मजिस्ट्रेट ने दोनों कमरों को सील करा दिया। साथ ही नोडल अधिकारीडॉ. मनोज चौधरी को एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए। सिटी मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार ने बताया कि मेडिकल स्टोर की आड़ में पांच बेड का अस्पताल चल रहा था। जब तक वैध अभिलेख प्रस्तुत नहीं किए जाते, सील किए गए कमरे बंद रहेंगे।

मेडिकल स्टोर के पीछे अस्पताल को देखते सिटी मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार।

● सिटी मजिस्ट्रेट ने की छापेमारी एफआईआर के निर्देश

6th वार्षिकोत्सव विशेष फीचर

मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

अपनी अलग पहचान बना रहे बरेली के किसान

सिंदूर की फली

बरेली, जो कभी मुख्य रूप से गन्ना उत्पादक क्षेत्र के रूप में जाना जाता था, अब एक महत्वपूर्ण कृषि क्रांति का साक्षी बन रहा है। यहां के किसान अब केवल पारंपरिक फसलों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि केंद्र व राज्य सरकार की प्राकृतिक और जैविक खेती को बढ़ावा देने वाली नीतियों के साथ-साथ खुद भी इनोवेशन को अपना रहे हैं। बरेली के किसानों ने ड्रोन तकनीक, आधुनिक सिंचाई प्रणालियों और जैविक खेती को अपनाकर अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि की है। सबसे बड़ा बदलाव 'विविधीकरण' के क्षेत्र में आया है। अब यहां विदेशी 'ड्रैगन फ्रूट', वाइन ग्रेप्स और अन्य विदेशी प्रजाति की सब्जियाँ सफलतापूर्वक उगाई जा रही हैं। इस परिवर्तन में एक प्रेरक पहलू बड़े शहरों की बडे.पैकेज की नौकरी छोड़कर गांव लौटे शिक्षित युवाओं की भूमिका है। इन युवाओं ने आधुनिक कृषि तकनीकों और विदेशी फसलों की खेती से कृषि वैज्ञानिकों तक को चकित कर दिया है, युवाओं ने साबित कर दिया कि कृषि एक लाभदायक और सम्मानजनक कॅरियर विकल्प है। फसल उत्पादन के अलावा, कृषि से जुड़े अन्य क्षेत्रों में भी प्रगति हो रही है। गुजरात की देसी 'गिर' गायों का दुग्ध कारोबार यहां आगे बढ़ रहा है। बरेली की अर्थव्यवस्था कृषि के क्षेत्र में एक नया रूप ले रही है।

अंगूर के साथ अन्य 'सब ट्रॉपिकल' फसलें उगाने की अपार संभावनाएं

प्राचीन काल में पांचाल राज्य का हिस्सा रही वर्तमान बरेली विदेशी प्रजाति के अंगूर व इससे बनने वाले वाइन कारोबार में विदेशी बाजारों का प्रभुत्व तोड़ेगी। यहां अंगूर के उत्पादन साथ अन्य 'सब ट्रॉपिकल' फसलें उगाने की अपार संभावनाएं हैं। प्रगतिशील किसान अनिल कुमार साहनी ने इसे सिद्ध कर दिया है। वर्तमान में महाराष्ट्र के नासिक में अंगूर की खेती होती है, जबकि अमेरिका समेत कई यूरोपीय देशों में अंगूर की खेती होती है। जलवायू अनुकूल होने के कारण एक ओर जहां इन देशों में अंगूर का उत्पादन खूब होता है, वहीं इससे खुशबूदार वाइन भी खूब बनती है। यही वजह है कि वैश्विक बाजार में अंगूर के साथ विदेशी वाइन छायी हुई है। विश्व में ८०-९० प्रतिशत अंगूर वाइन, जूस व किशमिश बनाने में इस्तेमाल होता है। अब बरेली में भी विदेशी प्रजाति के अंगूर व वाइन का उत्पादन बढ़ सकेगा और बरेली की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बन सकेगी। सरकारी सहयोग मिला तो यह शहर अंगूर की खेती का 'अन्तर्राष्ट्रीय हब' बन जाएगा। बरेली को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने में 'जिद', 'जज्बा' व 'जुनून' के साथ लगे यहां के टिगरी गांव निवासी प्रगतिशील किसान अनिल कुमार साहनी का कहना है कि आजकल के युवा किसान 'खेती-किसानी' को घाटे का सौदा मानकर इससे मुंह मोड़ रहे हैं। वे अपने पूर्वजों की पुश्तैनी जमीन पर खेती करने के बजाय उसे बेचकर शहरी जीवन के चकाचौंध में जाने को आतुर हैं, पर इसमें उन्हें वास्तविक सफलता नहीं मिलनी वाली है।

विभिन्न किस्में लगा सकते हैं खेत में

किसान अपने खेतों में विभिन्न विदेशी किस्मों की फसलें लगा सकते हैं। प्रगतिशील किसान साहनी ने तो अपने फार्म हाउस में विदेशी अंगूर व अन्य विदेशी पौधे लगाये गए। यहां आम लोगों के खाने में इस्तेमाल होने वाले विदेशी अंगूर के साथ वाइन बनाने वाले विदेशी अंगूर 'वाइन ग्रेप्स' भी लगाये गए हैं। इसमें फ्रांस, इटली, आस्ट्रेलिया, ग्रीस आदि देशों की 35 किस्में शामिल हैं। साहनी ने सिंदूर (कमीला जतन) का पेड़ भी यहां लगाया है जो लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

सफल खेती के लिए खेतों में उन्नत विदेशी तकनीक जरूरी

साहनी ने अपने फार्म हाउस में खेतों को व्यवस्थित करने के लिए इंग्लैंड से आयातित तार लगाए गए हैं जिसमें अंगूर की लतायें फैली हैं। विदेशी तकनीक से एकीकृत प्रणाली के तहत बागान में सिंचाई की व्यवस्था है। इजराइल की तकनीक के उपकरण से पौधों की मांग के अनुसार सिंचाई होती है, जबकि पारंपरिक तौर पर सिंचाई में मांग के अनुसार सिंचाई की व्यवस्था नहीं होती है।

ये भी है फार्म हाउस में

- 82 प्रजातियों की चिड़ियां
- 38 प्रकार की तितलियां
- तराई में पैदा होने वाला सिंदूर का पौधा
- फालसे का बाग
- अंजीर का बाग
- कचनार के पेड़
- देसी मेंहदी के पेड़ व आंड़ू का बाग आदि

पौधों को पिलाया जाता है नीम का तेल

विदेशी तकनीक के तहत पौधों में नीम की तेल की सिंचाई होती है, ताकि कीट प्रबंधन हो सके। फार्म हाउस में लगे अंगूर के पौधों को नीम का तेल पिलाया जाता है। किस पौधे को कितनी जरूरत है, इसका भी अध्ययन किया जाता है। इजराइल की सिंचाई तकनीक इस्तेमाल कर पाइप लाइन बिछाई गई है। यहां हर पौधे को नंबर आवंटित किये गए हैं। साथ ही, इंग्लैंड से आयातित तार लगाये गए हैं। यह तकनीक भी बरेली के किसानों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी।

'ड्रैगन फ्रूट' के उत्पादन से निकले बरेली के किसानों के लिए नये रास्ते

गहरा गुलाबी-लाल रंग, खाने में मक्खन जैसा मुलायम व मीठा। गजब का स्वाद। हम बात रहे हैं वियतनाम मूल के विदेशी 'ड्रैगन फ्रूट' की। अब यह फल बरेली की धरती पर खूब उग रहा है। यहां के बहगुलपुर गांव के प्रगतिशील किसान यशपाल ने अपने 10 एकड़ खेत में इस 'सुपरफूड' का उत्पादन कर बाकी किसानों के लिए भी नये रास्ते खोल दिये हैं। जिले के किसान अन्य पारंपरिक खेती के साथ इस फल की खेती कर सकते हैं, क्योंकि इस खेती बहुत आसान है। उद्यान विभाग इसकी खेती के लिए किसानों को प्रशिक्षण के साथ निशुल्क पौध भी उपलब्ध करा रहा है। लगभग डेढ़ साल में इसकी फसल तैयार हो जाती है, जबकि तीन साल के बाद भारी मात्रा में फल आते हैं। अगले तीस सालों तक किसान इससे फसल लगातार ले सकते हैं। ऐसे में यह किसानों की आय बढ़ाने का अच्छा सौदा साबित हो सकता है। गुजरात व मुंबई से जाकर इसकी खेती से प्रेरित हुए यशपाल व उनकी टीम के साथी प्रवीण कुमार गुप्ता अपने अनुभव साझा करते हुए कहते हैं कि इसकी खेती पर एक एकड़ चार-पांच लाख रुपये खर्च होते हैं। एक एकड़ में प्रति साल 10-15 लाख का फायदा होता है। इसकी फसल जुलाई से नवंबर तक चलती है। इसकी खेती में जैविक व प्राकृतिक उर्वरक इस्तेमाल होता है। किसान वर्मी कम्पोस्ट खुद बनाकर खेतों में इसका उपयोग कर सकते हैं। यह खाद साल में तीन बार देनी होती है। हर पन्द्रह दिन में सिंचाई ड्रिप तकनीक प्रणाली से की जाती है। सिंचाई के लिए बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है। इसके उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए 90 प्रतिशत सब्सिडी दे रही है।

बाजार में है बहुत संभावनाएं

यशपाल का कहना है कि बरेली समेत अन्य जिलों में इस फल की बहुत मांग है। वजह यह है कि यह स्वादिष्ट होने के साथ ही कीवी फल से 10 गुना पौष्टिक होता है। स्वादिष्ट होने के कारण इसकी मांग निरंतर बढ़ती जा रही है।

जलभराव वाली जमीन पर नहीं पैदा होता यह फल

प्रगतिशील किसान का कहना है कि यह फल जलभराव वाली जगह पर नहीं पैदा होता, क्योंकि इसकी जड़ें गहरी नहीं होती हैं। यह बंजर जमीन पर भी उग सकता है। जमीन तो केवल नीचे सपोर्ट के लिए होती है, जबकि यह फल अलग से जैविक खादयुक्त मिट्टी पर उग जाता है।

डेयरी क्रांति की कहानी, बीएल एग्रो की कामधेनु परियोजना

बीएल एग्रो कामधेनु परियोजना से गांवों और किसानों का समृद्ध करने की दिशा में काम कर रहा है। परियोजना का उद्देश्य डेयरी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए यहां गिर और साहिवाल गायों की नस्ल तैयार करना है, जो उच्च गुणवत्ता वाले दूध का उत्पादन करेंगी। बीएल एग्रो ने इस परियोजना के लिए शुरुआत में 1,000 करोड़ का निवेश किया है, जिसके पूरी क्षमता से चालू होने पर कुल 3,000 करोड़ तक पहुंचने की उम्मीद है।

बीएल एग्रो के प्रबंध निदेशक आशीष खंडेलवाल बताते हैं कि वर्तमान में 350 से अधिक साहिवाल, गिर, पुंगुर नस्ल की गाय डेयरी में हैं। ब्राजील से सीमेन और भ्रूण लाकर इस नस्ल की गायों में अनुवांशिक सुधार कर उनकी संख्या बढ़ाने की दिशा में काम कर रहे हैं। ब्राजील ने गिर नस्ल में अनुवांशिक सुधार करके प्रति पशु दूध उत्पादन 30 से 40 किलो प्रतिदिन प्राप्त किया है। भारत में प्रतिपशु दूध का उत्पादन उन देशों के मुकाबले काफी कम है। इसका कारण हमारे पास उच्च गुणवत्ता वाले गायों और सांडों की कमी है। जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर बीएल कामधेनु परियोजना में सम्मिलित किया है। योजना के प्रयास से उच्च नस्ल वाली भारतीय साहिवाल और गिर गाय पैदा होने के बाद सीमेन और भ्रूण लाने के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहने की भी आवश्यकता नहीं होगी।

- **परियोजना को एक हजार करोड़ का निवेश, पूरी क्षमता से चालू होने पर तीन हजार करोड़ तक पहुंचने की उम्मीद**
- **ब्राजील से सीमेन और भ्रूण लाकर गिर और साहिवाल गायों में होगा अनुवांशिक सुधार**
- **प्रति पशु दूध उत्पादन 30 से 40 लीटर प्रतिदिन लाने का लक्ष्य**

साहिवाल नस्ल की 5000 गायों को रखने की योजना

भविष्य में गिर, साहिवाल नस्ल की पांच हजार हजार देसी गायों को रखे जाने की योजना है। जो एक दिन में 30 से 35 लीटर तक दूध दे सके। इन गायों के माध्यम से बीएल एग्रो स्थानीय समुदाय को जहां उच्च दूध देने वाली गायों की उपलब्धता बढ़ाएगा, वहीं बेहतरीन गुणवत्ता वाला चारा-दाना के माध्यम से जुड़कर पशुधन का विकास करेगा। साथ ही किसानों के लिए दूध की मार्केटिंग में भी सहयोग करेंगे। इसके लिए एक फील्ड प्रोसेसिंग यूनिट भी होगी, जो किसानों से दूध जैसे कच्चे माल की प्राप्ति के लिए उनके साथ काम करेगी। आईसीएआर- सीआईआरजी के पूर्व निदेशक एवं बीएल कामधेनु योजना के उपाध्यक्ष डा. एसके अग्रवाल बताते हैं कि भ्रूण प्रत्यारोपण एक ऐसी विधि है, जिसके माध्यम से गाय की किसी भी नस्ल की एक गाय से साल भर में 40 से 50 भ्रूण विकसित करके दूसरी गायों में प्रत्यारोपित कर 15 से 16 बछिया को जन्म दिलाया जा सकता है, जबकि सामान्य तौर पर साल भर में एक गाय से एक ही बछिया प्राप्त की जा सकती है।

उन्नत नस्ल के विकास से किसानों को होगा फायदा

आशीष खंडेलवाल के मुताबिक, अगर किसान या पशुपलाकों के पास उन्नत नस्ल का पशु है तो उसका भ्रूण लैब में तैयार करेंगे। जिसे उनके सेरोगेट मदर में ट्रांसफर करेंगे। वहीं, उनकी मांग पर लैब में संरक्षित भ्रूण को भी प्रत्यारोपित कर देंगे। इससे उन्नत नस्ल के पशु का जन्म होगा। टेस्ट ट्यूब बेबी (आईवीएफ) से जन्मे गाय के बच्चों में ज्यादा दूध देने की क्षमता होगी।

चारा उत्पादन के लिए किसानों के साथ कांट्रेक्ट फार्मिंग

चारा उत्पादन के लिए कांट्रेक्ट फार्मिंग करने का फैसला किया है। इसके तहत, डेयरी आसपास के किसानों के साथ कांट्रेक्ट फार्मिंग करेगी, जिसमें किसानों को चारा उत्पादन के लिए बीज, उर्वरक और अन्य आवश्यक सामग्री प्रदान की जाएगी। डेयरी किसानों से निर्धारित दर पर चारा खरीदेगी, जिससे किसानों को भी लाभ होगा और डेयरी को भी चारा की आपूर्ति सुनिश्चित होगी।

योजना के अंतर्गत कंप्रेस्ड बायोगैस प्लांट (सीबीपी) भी लगाया गया है इसके माध्यम से बायोगैस बनाकर उसी से जेनरेटर के द्वारा बिजली का उत्पादन होगा। जो वेस्ट निकलेगा उसमें पानी उलग करके पैकेजिंग करके पाउडर के रूप में बायो फर्टीलाइजर किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा। इससे केमिकल का इस्तेमाल तो कम होगा ही, खेतों की उर्वरकता भी बढेग़ी।

खेत से आसमान तक 'ड्रोन दीदी' की सफलता की उड़ान

नवाबगंज की रहने वाली किरन गंगवार ने अपनी मेहनत और आत्मविश्वास से एक नई ऊंचाई हासिल की है। एमए की पढ़ाई करने वाली किरन ने राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़कर ड्रोन पायलट बनने का फैसला किया और आज वह 'ड्रोन दीदी' के नाम से जानी जाती हैं। किरन बताती हैं कि उन्होंने नवंबर 2023 में खुद को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़ने का फैसला लिया। इसके बाद, उन्हें इफको की ओर से फ्री में ड्रोन दिए जाने के साथ चलाने की ट्रेनिंग दी गई। दिसंबर 2023 में प्रयागराज के फूलपुर स्थित इफको कोरडेट में ट्रेनिंग मिली और मार्च 2024 को उन्हें 'नमो ड्रोन दीदी योजना' के तहत कृषि ड्रोन मिला। आज किरन 500 हेक्टेयर में 'स्प्रे' कर चुकी हैं और अच्छी कमाई भी कर रही हैं। वह बताती हैं कि पहली बार जब गांव में ड्रोन उड़ाया, तो लोग देखने के लिए आए। तब लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ था कि ड्रोन से फसलों पर कीटनाशक और पानी का छिड़काव भी संभव है। किरन कहती हैं, अगर महिलाएं ठान लें, तो कुछ भी असंभव नहीं है।

अच्छा परिणाम दे रही हैं विदेशी फसलें

बरेली में पारंपरिक फसलों से हटकर विदेशी व उन्नत खेती की अपार संभावनाएं हैं। भले ही यहां की जलवायु इन फसलों के अनुकूल नहीं है, फिर भी यहां की धरती पर जिस तरह से विदेशी फसलें अच्छा परिणाम दे रही हैं। इससे खेती में लगे किसानों का उत्साह बढ़ गया है। इसी तरह, दूसरे राज्यों की देसी गिर गाय भी अनुकूल जलवायु न होने के बाद भी बरेली की जमीन पर बेहतर नतीजे दे रही हैं। बरेली के और किसान भी इससे प्रेरणा लेकर इस क्षेत्र में सफलता की ऊंचाई छू सकते हैं। इन अच्छे नतीजों से कृषि व उद्यान के विशेषज्ञ चकित हैं। कुछ का कहना है कि सुविधाओं के बेहतर प्रबंधन के कारण अच्छे नतीजे आ रहे हैं, तो कुछ इस पर अनुसंधान किये जाने पर जोर दे रहे हैं। भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के उद्यान विभाग के विषय विशेषज्ञ डॉ रंजीत सिंह का कहना है कि विज्ञान के अनुसार तो विदेशी औद्यानिक फसलें बरेली की जलवायु के अनुकूल नहीं हैं। यहां जाड़े में बहुत ठंड तो गर्मी में बहुत गर्म पड़ती है। यहां सामान्य तौर पर दिन में अधिकतम तापमान 27 डिग्री सेल्सियस व रात में 12 डिग्री सेल्सियस रहता है। विदेशी नस्ल के उत्पादन पर उनका कहना है कि कुछ किस्में ही यहां उग पाई हैं। उनका कहना है कि कृषि वैज्ञानिक कई 'राउंड' में जलवायु व फसल उत्पादन का अध्ययन करते हैं। औसतन 10 साल का डाटा लिया जाता है। इसमें सफलता मिलने पर ही उसे सफल कहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि विदेशी तकनीक के अंगूर, ड्रैगन फ्रूट आदि पैदा हो रहे हैं।

पहले की खेती और आज की खेती में फर्क समझें: डा. अंजनी

कृषि क्षेत्र में बदलाव की कहानी अब आम हो गई है। पहले खेती भले ही कम की जाती थी, लेकिन फसल की गुणवत्ता और बीजों के चुनाव में पहले की खेती और आज की खेती में बहुत फर्क आ चुका है। आयुर्वेदाचार्य और कृषि विशेषज्ञ डा. अंजनी सिंह उदाहरण के तौर पर बताते हैं कि आज की लौकी खाने के बाद कई बार पेट दर्द की शिकायत रहती है, जबकि पहले की लौकी खाने पर ऐसी दिक्कत नहीं होती थी। क्योंकि आज की लौकी का आकार बड़ा करने के लिए लोग 'इंजेक्शन' का इस्तेमाल करने लगे हैं। डा. अंजनी कहते हैं पहले खेती में गोबर और अन्य प्राकृतिक खाद का इस्तेमाल होता था, जिससे फसल की गुणवत्ता अच्छी होती थी और मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ती थी। लेकिन आज खेती में रसायनों का इस्तेमाल बढ़ गया है, जिससे फसल की गुणवत्ता घट रही है और मिट्टी की उर्वरता भी कम हो रही है। इससे लोगों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

देसी गाय के दूध का बड़ा बाजार

यूं तो राज्य सरकार की योजनाओं के बल पर गोवंश का संरक्षण करने के लिए हर जिले में गौशालाएं खोली जा रही हैं। विभिन्न योजनाओं के जरिये सरकार खूब रकम सब्सिडी के रूप में लोगों को उपलब्ध करा रही है और योजनाओं से पोषित गौशालाएं खुल भी रही हैं, पर बिना सरकारी सहयोग के ही बरेली में गुजरात की देसी गाय गिर अपने दूध व दुग्ध उत्पाद से नई पहचान बना रही है। इसके दूध की इतनी मांग है कि पूरी नहीं पड़ रही है। इससे संभावना जताई जा रही है कि आने वाले समय में अगर बरेली में और गौशालाएं खुलेंगी, तो दुग्ध व इसके उत्पाद के बाजार में छा जाएंगी।

बरेली के भैरपुरा खजुरिया निवासी ज्ञानेंद्र सिंह ने गिर गाय का गौशाला का संचालन कर यह सिद्ध कर दिया है कि यहां के अन्य लोग खासकर युवा भी इस क्षेत्र में अपना अच्छा कॅरियर बना सकते हैं। मर्चेंट नैवी में चीफ ऑफीसर की 48 लाख सालाना वेतन की नौकरी छोड़कर वर्ष 2023 में गांव में गौशाला संचालन व प्राकृतिक खेती कर रहे ज्ञानेंद्र के पास छोटी-बड़ी मिलाकर कुल 65 गाय हो गई हैं। अपने अनुभव को साझा करते हुए ज्ञानेंद्र कहते हैं कि बरेली में शुद्ध दूध की बहुत मांग है। मांग के अनुसार अभी आपूर्ति पूरी नहीं हो पा रही है। देसी गिर पर ही विशेष जोर देने के सवाल पर उनका कहना है कि वैसे तो साहिवाल समेत अन्य गायों का दूध भी विदेशी गायों से अच्छा रहता है, पर गिर नस्ल की गाय का दूध मां के दूध के समान होता है। इसमें प्रोटीन ए टू होता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है। गिर गाय मौसम के अनुकूल होती हैं, इसलिए बीमार भी बहुत कम पड़ती हैं। यह गाय 7-8 लीटर प्रतिदिन दूध देती हैं। ऐसे में इस गाय के दूध के बाजार में बहुत संभावनाएं हैं। ऐसे में इस क्षेत्र में गांव के अन्य किसान व युवा अपना कैरियर बना सकते हैं।

अन्य राज्यों को भा रहा बरेली का दुग्ध उत्पाद

गिर गाय का दुग्ध उत्पाद बरेली के साथ ही अन्य राज्यों महाराष्ट्र, दिल्ली, पंजाब के साथ ही राजधानी लखनऊ, रामपुर, पीलीभीत, रुद्रपुर आदि के लोगों को भा रहा है। तीन एकड़ पुश्तैनी जमीन पर में प्राकृतिक खेती व गांव में मकान के सामने गौशाला चला रहे ज्ञानेंद्र का कहना है कि वह 250 परिवारों को दूध व अन्य कृषि उत्पाद उपलब्ध करा रहे हैं। इनमें केवल दूध के 50 ग्राहक बरेली के हैं। दूध की आपूर्ति केवल जिले में है, जबकि दुग्ध उत्पाद मुम्बई, पंजाब, दिल्ली, लखनऊ, रामपुर, पीलीभीत, रुद्रपुर आदि में आपूर्ति हो रहा है। मिलावटी दूध से परेशान लोग अब शुद्ध दूध की मांग कर रहे हैं। ऐसे में बरेली में और गौशालाएं खोली जाएं, तो इसका लाभ किसानों के साथ यहां के लोगों को मिल सकेगा।

शुद्ध देसी घी बनाने में प्राचीन ज्ञान जरूरी

दूध से शुद्ध घी बनाने में प्राचीन ज्ञान जरूरी है। घी बनाने में बिलौना विधि का प्रयोग होता है, जो पूरी तरह मैनुअल होता है। ज्ञानेंद्र की गौशाला में इस विधि का ज्ञान रखने वाली उनकी 80 वर्षीय बुजुर्ग मां शकुंतला देवी घी बनाने का कार्य करती हैं। वजह यह है कि इस विधि से बनने वाला घी अधिक स्वादिष्ट होता है। शाहजहांपुर में आबकारी निरीक्षक पद पर तैनात सविता चौधरी भी घर आने के दौरान गौशाला व प्राकृतिक खेती में सहयोग करती हैं। यानी सफलता के लिए खुद के साथ ही अगर पारिवारिक सहयोग मिल जाय, तो यह सोने पर सुहागा साबित होगा।

जवान न बन सके सर्वेश बन गए प्रगतिशील किसान

जब दिल में कुछ कर गुजरने का जज्बा हो, तो कोई भी मुकाम हासिल किया जा सकता है। हाफिजगंज के ग्रेम गांव के सर्वेश की कहानी कुछ इसी तरह की है। सर्वेश का सपना था कि फौज में भर्ती होकर देश की सेवा करना। चार बार फौज की भर्ती में शामिल हुए। शारीरिक परीक्षा उत्तीर्ण की, पर सफल नहीं हुए। निराश होने के बजाय उन्होंने गांव में खेती को रोजगार का जरिया बनाने की ठानी। जैविक खेती का तरीका सीखा। फसल लहलहाई तो उनकी किस्मत चमक गई। 28 साल की आयु में सर्वेश को कृषि विज्ञान केंद्र ने प्रगतिशील किसान का दर्जा प्रदान किया है। सर्वेश गन्ने के साथ मेंथा, सरसों, मेंथा आदि कि वर्तमान में वह करीब 15 बीघे में जैविक खेती कर रहे हैं। सालाना आय करीब पांच लाख रुपये से ज्यादा है। सर्वेश बताते हैं कि उन्होंने एक फर्म भी बनाई है। इसके जरिए वह जैविक खेती को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। उनकी फर्म से अब तक एक, दो बीघे वाले 300 से अधिक किसान जुड़ चुके हैं। उनका उद्देश्य खेती को सिंथेटिक रसायन से मुक्त करना है। इसके अलावा वह कृषि कॉलेजों, केंद्र और प्रदेश सरकार के कार्यक्रमों में व्याख्यान देने भी पहुंचते हैं। सर्वेश बताते हैं कि उत्पादित फसलों की गुणवत्ता के आधार पर बिक्री अधिक होने की वजह से अब व्यापारियों की मांग के अनुसार माल की कमी हो जाती है।

अमेरिका-जर्मनी तक बरेली का मेंथा पहुंचा रहे निहाल

जैविक खेती के फायदे जानने हैं तो बरेली के उन्नतशील कृषक निहाल सिंह के बारे में जानिए, जो ऑर्गेनिक मेंथा, सगंध फसलों और जड़ी-बूटियों की खेती करते हैं। वर्तमान में उनसे पांच हजार किसान जुड़े हैं। निहाल का दो एकड़ से शुरू हुआ खेती का सफर आज दस हजार एकड़ में फैल चुका है। वह कहते हैं वर्ष 2002 में बेहद छोटे पैमाने पर ऑर्गेनिक मेंथा की खेती शुरू की थी। आज उनकी कंपनी ऑर्गेनिक सर्टिफाइड मेंथा उत्पादन करती है। यहां उपजा जैविक मेंथा जर्मनी और यूएसए (अमेरिका) तक भेजा जा रहा है। इसकी बहुत मांग है। तुलसी की सूखी पत्ती की भी अमेरिका में खूब मांग है। जैविक खाद से पैदा हुए धान, गेंहू और आलू की सिर्फ उत्तर प्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे देश में मांग होती है। वह अपनी सफलता का सीक्रेट शुद्धता, प्रतिबद्धता और किसानों के साथ मजबूत रिश्ते बताते हैं। वह कहते हैं कि 2003 में कॉलेज के एक 'लेक्चर' में सुना था कि रसायनिक खाद जमीन को कितना नुकसान पहुंचा रही हैं। शरीर में बीमारियां बढ़ रही हैं। इसके बाद जैविक खाद से उड़द की खेती से शुरुआत की थी। पांच साल तक व्यवसायिक फायदा नहीं मिला। इन्हीं चुनौतियों से सीखते हुए 2008 में जैविक उत्पाद के लिए बाजार खड़ा कर लिया। आज पांच हजार किसानों के साथ मिलकर जैविक खेती कर रहे हैं। ऑर्गेनिक मेंथा ही नहीं वह जड़ी-बूटियों और लेमनग्रास व कैमोमाइल जैसी दस से अधिक सगंध फसलें उगाते हैं। राइस मिल और गुड़ बनाने की यूनिट भी लगाई जो किसानों की आय बढ़ाने में मदद करती है। उनका कहना है कि युवा खेती को व्यवसाय के रूप में अपनाएं, क्योंकि यही भारत को अग्रणी बना सकती है।

प्रस्तुति : रमेश चंद्र व महिपाल गंगवार

अमृत विचार

शुक्रवार, 28 नवंबर 2025

आप खुश होते हैं या दुखी, यह इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आपके पास क्या है, या आप कौन हैं, या आप कहां हैं, या आप क्या कर रहे हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप क्या सोचते हैं।

-डेल कार्नेगी, अमेरिकी लेखक

ऐतिहासिक खेल उपलब्धि

कॉमनवेल्थ गेम्स का बीस बरस बाद भारत लौटना देश के लिए एक ऐतिहासिक पल होगा। राष्ट्रमंडलीय खेलों के दौरान दुनिया का स्वागत करने के लिए भारत जितना उत्सुक है, उतना ही आत्मविश्वासी भी। बड़ी बात यह कि पूरा आयोजन पहली बार वास्तविक तौर पर किसी एक ही शहर में संपन्न होगा। हाल के वर्षों में भारत में खेलों को लेकर जो अवसंरचनात्मक विकास और जनसमर्थन बढ़ा है, उससे निस्संदेह यह अवसर अत्यंत उल्लेखनीय बनेगा। यह उपलब्धि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस दीर्घकालिक विज़न को भी पुष्ट करती है, जिसके तहत भारत को ग्लोबल स्पोर्ट्स हॉटस्पॉट के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य है।

ओलंपिक बोली की तैयारी, खेलों में निजी एवं सार्वजनिक निवेश की वृद्धि, खेल विज्ञान व उच्च-स्तरीय अवसंरचना के विस्तार ने इस क्षेत्र में देश की वैश्विक छवि को उल्लेखनीय मजबूती दी है। कॉमनवेल्थ जैसे विशाल आयोजन की मेजबानी इसी का प्रतिफल है। सवाल है कि क्या अहमदाबाद इतनी स्तरीय, विविध और व्यापक खेल अवसंरचना 2030 तक विकसित कर पाएगा कि सभी राष्ट्रमंडलीय खेल, जिनमें इस बार 17 नए खेल भी जोड़े गए हैं, एक ही शहर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकेंगे? वर्तमान में अहमदाबाद और उसके आसपास खेल परिसरों, स्टेडियमों, प्रशिक्षण केंद्रों, मेडिकल, स्पोर्ट्स साइंस जैसी सुविधाओं और हाई-स्पीड कनेक्टिविटी का तीव्र विस्तार हो रहा है। नरेंद्र मोदी स्टेडियम, सरदार पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव और आगामी मल्टी-डिसिप्लिन स्पोर्ट्स हब, ये सभी इस बात का संकेत देते हैं कि शहर 2030 तक विश्व-स्तरीय आयोजन की आवश्यकताओं को पूरा करने में अवश्य सक्षम हो जाएगा। इसी मजबूत अवसंरचना और बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय विश्वसनीयता के आधार पर ही अहमदाबाद को 2028 वर्ल्ड अंडर-20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप, 2031 वर्ल्ड सीनियर एथलेटिक्स और 2033 वर्ल्ड एथलेटिक्स की मेजबानी मिलने की संभावनाएं बनी हैं। भारत को कॉमनवेल्थ की मेजबानी मिलने के पीछे दो महत्वपूर्ण कारण हैं- पहला, तेजी से मजबूत होती अवसंरचना और उसमें बढ़ता सार्वजनिक निवेश, दूसरा, भारत की आर्थिक स्थिरता और 2030 तक 7 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनने की संभावनाएं। किसी भी बड़े बहुराष्ट्रीय आयोजन के लिए आर्थिक क्षमता और शहर-स्तरीय आधारभूत विकास निर्णायक होते हैं और भारत ने दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति प्रदर्शित की है।

ठीक है कि कॉमनवेल्थ गेम्स बहुधा आर्थिक लाभ के बजाय व्यय-प्रधान आयोजन सिद्ध हुए हैं। यह आयोजन केवल खर्च का विषय नहीं, बल्कि दीर्घकालिक शहरी-विकास, पर्यटन वृद्धि, रोजगार सृजन और वैश्विक प्रतिष्ठा का मामला है। दिल्ली ने 2010 में परिवहन, सड़कों, एयरपोर्ट, मेट्रो और शहरी ढांचे में बड़ा रूपांतरण देखा था। अहमदाबाद में भी 2030 तक परिवहन, शहरी नियोजन, स्मार्ट-सुविधाएं, हॉस्पिटैलिटी सेक्टर, रिवरफ्रंट और स्पोर्ट्स-इकोनॉमी के कई क्षेत्र नए स्तर पर विकसित होंगे। घरेलू आयोजन खिलाड़ियों के लिए अवसर और प्रेरणा दोनों बढ़ाता है। आज हमारी खेल व्यवस्थाा अधिक वैज्ञानिक, संगठित और प्रतिस्पर्धात्मक है। घर में खेल होगा तो हमारे खिलाड़ियों के प्रदर्शन और पदक संख्या दोनों में वृद्धि दिखेगी।

धर्म ध्वजा की स्थापना के अर्थ व संदेश

गोलेश स्वामी

राजनीतिक विश्लेषक

अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम जन्म भूमि मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजा की स्थापना ने एक बार फिर से त्रेता युग और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अहसास कराया। श्री राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद राम-सीता के विवाह पंचमी के शुभ मुहूर्त के मौके पर हुए इस ध्वजारोहण ने देश-दुनिया को जहां गहरे अर्थ दिए हैं, वहीं एक नहीं अनेक अहम संदेश दिए हैं। पहला संदेश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, संघ प्रमुख मोहन भागवत, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और संतों व राम भक्तों की एकजुटता का है। यह धर्म और सियासत के समन्वय और राम मंदिर की पूर्णता का भी संदेश है। धर्म के पुनर्जागरण और विकसित भारत के संकल्प का भी संदेश है।

दूसरा संदेश गुलामी की भावना को त्यागकर राम राज्य की स्थापना का है, क्योंकि राम राज्य का मतलब होता है, जिसमें कोई दीन-दुखी न रहे। कोई गरीब न रहे। समाज में कोई वर्ग भेद न हो। शबरी की ममता से लेकर निषाद राज की मित्रता और जटायु-गिलहरी के सहयोग का। खासकर प्रधानमंत्री मोदी द्वारा राम मंदिर को राष्ट्र मंदिर घोषित करना और मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति पर जबर्दस्त प्रहार। साथ ही इसे गुलामी का प्रतीक बताना भर नहीं, बल्कि अगले दस साल में इससे मुक्ति पाकर अपनी संस्कृति की ओर लौटना। इसमें यह भी जोडना कि देश को 1947 में आजादी तो मिली, लेकिन स्वदेशी को दरकिनार कर विदेशी के महत्व को मन मस्तिष्क में भरा गया। कोई शक नहीं कि राम मंदिर के निर्माण के लिए पांच सदियों के संघर्ष और सैकड़ों लोगों के बलिदान के बाद यह अहम दिन था। यह सनातन की बहुत बड़ी विजय है। सनातन की वेदना की समाप्ति और कार्य सिद्धि के महायज्ञ की पूर्णाहुति है।

ध्वजारोहण समारोह का सबसे खास पहलू यह भी रहा कि प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन केवल भगवान राम के मंदिर, धर्म ध्वजा, रामत्व, राम राज्य और राष्ट्र मंदिर तक सीमित नहीं रहा। बल्कि उन्होंने एक ओर जहां अपने विरोधियों पर निशाना साधा, तो रामभक्तों को भी नसीहत देना नहीं भूले। इशारों-इशारों में अपने विरोधियों, खासकर कांग्रेस की पूर्व सरकारों को भगवान राम को काल्पनिक मानने के लिए कठघरे में खड़ा किया। यहां तक कि कांग्रेस सहित विरोधी दलों की सरकारों के आर्थिक विकास पर भी यह कहकर सवाल दागे कि 70 साल में देश की अर्थव्यवस्था दुनिया की 11वीं अर्थव्यवस्था ही बन सकी, जबकि उनके मात्र 11 साल के कार्यकाल में ही देश की अर्थव्यवस्था दुनिया की पांचवी अर्थव्यवस्था बन चुकी है।

इसके साथ ही भविष्य में स्वदेशी के बल पर भारत दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने और 2047 तक विकसित भारत का संकल्प पूरा होगा, लेकिन प्रधानमंत्री देशवासियों खासकर रामभक्तों को यह कहकर नसीहत देना नहीं भूले कि वे अपने अंदर राम के व्यक्तित्व के मूल्यों को अपने जीवन में उतारें, क्योंकि राम अयोध्या से वन जाते समय एक राजामात्र थे, लेकिन 14 साल वन में काटने के बाद अपने आचरण से मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर लौटे।

प्राण प्रतिष्ठा के बाद ध्वजारोहण समारोह में भी प्रधानमंत्री मोदी, संघ प्रमुख मोहन भागवत, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और डिप्टी सीएम बृजेश पाठक, मंत्रियों व भाजपा पदाधिकारियों की उपस्थिति से एकजुटता और समन्वय से निकले इस खास संदेश को नकारा नहीं जा सकता है, क्योंकि बीच में इनके संबंधों को लेकर सियासी गलियारों में तरह-तरह की चर्चाओं ने जन्म ले लिया था। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने, जहां राम मंदिर आंदोलन के अगुवा अशोक सिंघल, डालमिया और राम चंद्रदास परमहंस सहित ऐसी शख्सियतों को याद किया, जिन्होंने यह सपना देखा और आज इस दुनिया में नहीं हैं। ऐसा कहने के पीछे उनका मंतव्य स्पष्ट था कि आजीवन संघर्ष करने वालों को नहीं भूलना चाहिए।

वहीं, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आगे बढ़कर यहां तक कह दिया कि ध्वजारोहण यज्ञ की पूर्णाहुति नहीं बल्कि एक नए युग की शुरुआत है। यानी भविष्य में अभी बहुत कुछ होना स्वाभाविक है। शायद उनका इशारा राम मंदिर के बाद श्रीकृष्ण जन्म भूमि और काशी विश्वनाथ की पूर्णता की ओर है, क्योंकि अभी दोनों के मामले कोर्ट में लंबित हैं। इस बार सेलेब्रेटी के बजाए ज्यादातर समर्पित पार्टी, संघ और विहिप कार्यकर्ताओं और संतों को बुलाया गया था। इस बार कोई बिलेनियर उद्योगपति या सुपर स्टार नजर नहीं आया।

बिहार की हार से चिंतित विपक्षी दलों के नेताओं के स्वर आज कुछ बदले-बदले नजर आए। ऐसे में इन विपक्षी नेताओं ने किसी न किसी बहाने से सनातन और राम के प्रति अपनी आस्था प्रदर्शित की। जैसे सपा मुखिया अखिलेश यादव ने इटावा के केदारेश्वर मंदिर की स्थापना और भगवान के बुलाने पर आस्था के आधार पर दर्शन की बात कही, तो उनके अयोध्या के सांसद अवधेश प्रसाद यहां तक कहने लगे कि यदि न्योता मिलता तो वे नंगे पांव चलकर भगवान राम के दर्शन करने जाते, जबकि प्राण प्रतिष्ठा के समय विपक्षियों ने न्योता मिलने पर भी कार्यक्रम का बहिष्कार किया था।

पूर्व में बाबरी मस्जिद के लिए कोर्ट में मुकदमा लड़ने वाले इकबाल अंसारी ने समारोह में पहुंचकर प्रधानमंत्री मोदी के सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के नारे पर मुहर लगाई, वहीं मुस्लिमों को यह भी संदेश दिया कि वे हिंदुस्तान के मुस्लिम हैं और अयोध्या में मंदिर की पूर्णता से खुश हैं। वे यह कहने से भी नहीं चूके कि मुस्लिम धर्म सभी धर्मों का सम्मान करना सिखाता है। इस समारोह के प्रति मिथिला का जिक्र कैसे छूटता। खासकर मिथिला के लोग अपने दामाद भगवान राम की एक झलक पाने के लिए खासी संख्या में उमड़े।

धर्म ध्वजा, धर्म के पुनर्जागरण और विकसित भारत के संकल्प का भी संदेश है। दूसरा संदेश गुलामी की भावना को त्यागकर राम राज्य की स्थापना का है, क्योंकि राम राज्य का मतलब होता है, जिसमें कोई दीन-दुखी न रहे।

आमने

बीजेपी अपने पन्ना प्रमुखों से चुनाव में शराब और पैसा बंटवाने का काम कराती है, जबकि कांग्रेस में ऐसा कोई प्रचलन नहीं है। बीजेपी के कुछ लोग तो इससे ज्यादा भी कुछ बंटवाते हैं और जनमत को प्रभावित करते हैं।

-हरीश रावत

पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

सामने

हरीश रावत के कार्यकर्ता निचले स्तर पर शराब पिलाकर और पैसे देकर चुनाव लड़ते होंगे। मुझे पता है कि कौन क्या-क्या करता है, लेकिन ये चीज सार्वजनिक नहीं की जा सकती, क्योंकि इससे हरीश रावत का फजीता हो जाएगा।

-विनोद चमोली

विधायक, बीजेपी

विपक्ष का काम कर रहे प्रधान पद के उम्मीदवार

यशोदा श्रीवास्तव

वरिष्ठ पत्रकार

यूपी में एसआईआर को लेकर उदासीन व लापरवाह विपक्ष के लिए पंचायत चुनाव की सरगर्मी राहत भरी है। चुनाव आयोग के गाइड लाइन के अनुसार राजनीतिक दलों को भी अपनी तरफ से बीएलओ-2 मनोनीत करने का अधिकार है। यूपी में ज्यादातर विपक्षी दल इसमें फिसड्डी दिख रहे हैं, लेकिन पंचायत चुनाव में प्रधान पद के दावेदार एसआईआर को लेकर खूब सक्रीय हैं। वे एक तरह से विपक्षी दलों का काम आसान कर रहे हैं। इसमें दो राय नहीं कि बिना किसी तैयारी के मात्र एक महीने में 25 करोड़ आबादी वाले उत्तर प्रदेश में एसआईआर कंप्लीट कर पाना बड़ी चुनौती है। इसमें विसंगतियों की जो भरमार है वह अलग।

खेती किसानी और शादी विवाह के सीजन में सब कुछ भूलकर शहरी लोग हों या ग्रामीण किसान, केवल अपना वोट बचाने के जतन में जुट गए हैं। चुनाव आयोग के इस अभियान में गांव के लोग जो अपेक्षाकृत जागरूक नहीं होते, एसआईआर का हिस्सा बन पाते हैं या नहीं, चुनाव आयोग का इससे कुछ लेना देना नहीं। चुनाव आयोग को यदि सचमुच इमानदारी से एसआईआर करानी होती तो वह समय, सीमा और लोगों की दिक्कतें जरूर ध्यान में रखता।

चुनाव आयोग के इस अभियान में बीएलओ से लेकर मतदाताओं को कितनी दिक्कतें हो रही हैं, यह बस्ती जिले के एक एसडीएम की झुंझलाहट से जाना जा सकता है, जो बीएलओ की लापरवाही पर गुस्सा हो रहे थे। चुनाव आयोग द्वारा एसआईआर की तय समय सीमा, चंद रोज ही बची है। इस बीच पूरे यूपी में 50 प्रतिशत भी फार्म-6 और 7 लोगों तक नहीं पहुंच पाए हैं। नोएडा जहां मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार की बिटिया डीएम हैं, वहां की स्थिति तो और खराब है। खराब प्रगति से नाराज ज्ञानेश कुमार की डीएम बिटिया ने सख्त कदम उठाते हुए तमाम बीएलओ और अन्य संबंधित जनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का फरमान जारी किया है।

फार्म-7 जो वोट विच्छेदन का जरूरी फार्म है, अधिकांश बीएलओ इसे जानते तक नहीं और न उन्हें ऐसा कोई प्रशिक्षण ही दिया गया। फार्म-7 के माध्यम से आप यदि दो जगह से वोटर हैं, तो इच्छित एक जगह से कटवा सकते हैं। हालत ऐसी हो गई कि हर व्यक्ति अपना वोट बचाने के लिए बीएलओ को ढूंढता फिर रहा है। पहली बार ऐसा हो रहा है कि बिना किसी प्रशिक्षण के बीएलओ नामित कर उसे एसआईआर फार्म थमा दिया गया है। चुनाव आयोग इस अभियान की जितनी गंभीरता समझता है, बीएलओ उससे एक दम अनजान हैं।

विपक्ष को इस अभियान में सत्ता पक्ष से दो कदम आगे होना चाहिए, क्योंकि वोट काटने या वोट चोरी को लेकर वही सबसे ज्यादा मुखर है। यूपी में इस अभियान में विपक्ष गायब है। ऐसे में वे लोग जिन्हें अपना वोट काटे जाने का डर है, खुद ही अपने वोट की रखवाली करें। सवाल उठता है कि एसआईआर अभियान में गैर भाजपा राजनीतिक दलों की उदासीनता क्यों है? फिलहाल यूपी के लिए इसका जवाब है, 'मैं क्यों और मैं ही क्यों?'

गौरतलब है कि सभी राजनीतिक दलों में विधानसभा चुनाव हो या लोकसभा चुनाव टिकट और प्रत्याशी दोनों उहापोह में रहते हैं। गैर भाजपा दलों के पास आरएसएस, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल सहित अन्य तमाम हिंदू संगठनों जैसा कोई संगठन नहीं है, जो निस्वार्थ भाव से अपना काम कर सके। भाजपा समर्थक इन तमाम हिंदू संगठनों को न तो चुनाव की चिंता रहती है और न ही टिकट की, सो उन्हें जिस काम की जिम्मेदारी सौंपी जाती है, उसे वे पूरी इमानदारी और निष्ठापूर्वक करते हैं। गैर भाजपा दल चाहे कांग्रेस हो सपा, बसपा या अन्य पार्टियां, उनके पास कहां है ऐसा निष्ठावान व ईमानदार संगठन?

इसके इतर सपा और कांग्रेस खानापूरी में लगे हैं। गठबंधन की राजनीति इसमें सबसे बड़ी बाधा है। चुनाव के दरमियान किस सीट पर गठबंधन का कौन उम्मीदवार टपक पड़ता है कोई ठिकाना नहीं। ऐसे में बड़ा पेंच 'हम क्यों और हम ही क्यों' को लेकर ही फंसा हुआ है। गैर भाजपा राजनीतिक दलों के कई नेताओं से बात हुई, तो यही मसला सामने आया। खासकर सपा और कांग्रेस खेमे से। यूपी में सपा और कांग्रेस अभी गठबंधन में हैं। विधानसभा चुनाव में भी यह रहेगा, इसकी संभावना ज्यादा है। जिन सीटों पर सपा के विधायक हैं वहां तो ठीक है। वे एसआईआर को लेकर सक्रीय हैं, लेकिन जिन सीटों पर सपा नहीं है वहां हालात ठीक नहीं है। ऐसी सीटों पर न तो कांग्रेस सक्रिय है और न ही सपा, इसलिए कि मेहनत हम करें और टिकट फलां को मिल जाए!

लोकसभा की कई सीटों पर सपा हारी है, वहां दूर दराज से उम्मीदवार थोप दिए गए थे, इस अभियान में वे लापता हैं। 2027 में विधानसभा चुनाव है। जिन तमाम सीटों पर सपा या कांग्रेस नहीं है, वहां का हाल बुरा है। एसआईआर को लेकर कांग्रेस के जिला अध्यक्षों पर खासा दबाव है। केंद्रीय कार्यालय से रोज कोई न कोई निर्देश प्राप्त हो रहे हैं। प्रतिदिन कोई न कोई कांग्रेस का पदाधिकारी जिला अध्यक्षों से जूम मीटिंग कर रहा है, लेकिन वे बेचारे करें क्या, उनका संगठन ही कमजोर है। सांगठनिक तौर पर यूपी में कांग्रेस की स्थिति यही है।

विपक्ष को एसआईआर अभियान में सत्ता पक्ष से दो कदम आगे होना चाहिए, क्योंकि वोट काटने या वोट चोरी को लेकर वही सबसे ज्यादा मुखर है। यूपी में इस अभियान में विपक्ष गायब है।

प्रसंगवश

लोग लावारिस छोड़ जाते हैं मासूम जिंदगियां

हाल ही में राजस्थान की राजधानी जयपुर में एक नवजात बालिका सड़क किनारे कपड़े में लिपटी हुई लावारिस हालत में मिली। चांदपोल श्मशान घाट के बाहर रोती हुई इस बच्ची की आवाज सुनकर स्थानीय लोग वहां पहुंचे और तुरंत पुलिस को सूचना दी। बच्ची महज आठ से दस दिन की थी। उसे तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया। प्रदेश के भीलवाड़ा जिले से भी दिल दहला देने वाली घटनाएं सामने आईं। गुलाबपुरा थाना क्षेत्र के दौलतपुरा गांव में जन्म के कुछ ही देर बाद एक नवजात बालिका को झाड़ियों में फेंक दिया गया था। ग्रामीणों ने समय रहते उसे देखा, जिसके बाद बच्ची को अस्पताल ले जाकर बचाया गया। ठीक इसी तरह बिजौलिया उपखंड के सीताकुंड जंगल में एक दस से बारह दिन की नवजात को फेवीक्विक से होठ चिपकाकर पत्थरों के नीचे दबा दिया गया। यह दृश्य इंसानियत को शर्मसार कर देने वाला था।

देवेंद्र सिंह

वरिष्ठ पत्रकार

इसी तरह बीकानेर के श्रीडूंगरगढ़ थाना क्षेत्र में भी एक दिन की बच्ची कूड़ेदान में पड़ी मिली। उसकी चीख सुनकर वहां से गुजर रही महिला ने पुलिस को सूचना दी और बच्ची को अस्पताल पहुंचाया गया। वहीं जालोर जिले में भी एक मकान की छत पर गुलाबी चुनरी में लिपटी एक नवजात बच्ची मिली, जिसका जन्म फेंके जाने से मात्र 30 मिनट पहले हुआ था। हर घटना एक नए दर्द, एक नई पीड़ा और एक नए सवाल को जन्म देती है कि आखिर क्यों मासूम बेटियों को इस तरह से दुनिया में आने के तुरंत बाद मौत के हवाले किया जा रहा है?

समाज में बदलाव की बातें होती हैं, योजनाएं बनती हैं, जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं, पर हालिया घटनाएं बताती हैं कि इन सबका प्रभाव जमीनी स्तर तक नहीं पहुंच पा रहा। सड़क किनारे, कूड़ेदानों और जंगलों में लावारिस हालत में बच्चियों के मिलने की बढ़ती घटनाएं बताती हैं कि समाज की सोच अब भी वहीं अटकी हुई है, जहां बेटी का जन्म लेना बोझ समझा जाता है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, प्रदेश में हर महीने औसतन 20 मासूम बेटियों को या तो अस्पतालों और पालनागृहों में छोड़ दिया जाता है या फिर सुनसान स्थानों पर मरने के लिए फेंक दिया जाता है। चिंता की बात यह है कि इन परित्यक्त बच्चों में 90 प्रतिशत बेटियां होती हैं। पिछले पांच वर्षों में 1,332 बच्चों को फेंकने के मामले सामने आए, जिनमें से 376 में माता-पिता की पहचान हुई। इनमें से 200 मामलों में किशोर न्याय अधिनियम 2015 के तहत कार्रवाई की गई। चाइल्ड लाइन इंडिया और यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, सरकार ने आश्रय पालना योजना के तहत 67 पालना केंद्र स्थापित किए, लेकिन इनमें से सिर्फ 20 प्रतिशत ही प्रभावी रूप से काम कर रहे हैं। इससे साफ है कि सरकारी प्रयास कमजोर हैं और समाज में जागरूकता का स्तर बेहद कम।

रिपोर्ट बताती है कि 90 प्रतिशत मामलों के पीछे या तो अवैध संबंधों का भय होता है या फिर लिंग आधारित भेदभाव। अविवाहित माताएं, विधवाएं, परित्यक्ता महिलाएं और आर्थिक तंगी से जूझ रही महिलाएं बदनामी से बचने के लिए बच्चियों को जन्म के तुरंत बाद फेंक देती हैं। थार के रेगिस्तान और आदिवासी अंचलों में ऐसे प्रकरण अधिक हैं। सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की कमी इस समस्या को और गंभीर बनाती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में अवैध संबंध और पारिवारिक दबाव प्रमुख कारण हैं। खास बात यह है कि परित्यक्त बच्चों में 90 प्रतिशत यानी 1,199 बच्चियां हैं। पिछले पांच वर्ष में परित्यक्त लड़कियां कोई कमी नहीं आई है, बल्कि 2021 और 2024 में इनमें वृद्धि हुई है।

सोशल फोरम

देने वाले ने देने में कुछ कमी न की

अरब में एक औरत रहती थी, जिसका नाम उम्मे जाफ़र था। वह बेहद सख़ी (बड़े दिल वाली) और दानवीर थी। वह जरूरतमंद लोगों की मदद दिल खोलकर करती थी। अपनी दानवीरता की वजह से वह पूरे इलाके में जानी जाती थी। लोग उससे मदद मांगने के लिए आया करते। वह खुद भी राह चलते लोगों को दान दिया करती। वह इस तरह दान करती थी कि दाहिना हाथ भी नहीं जान पाता था कि बायां हाथ क्या दे रहा है।

कश्मीरा शाह चतुर्वेदी

ब्लॉगर

कुछ दिनों से वह एक ख़ास रास्ते से गुज़रने लगी थी। उस रास्ते पर दो अंधे बैठे रहते थे। दोनों आवाज़ें लगाते थे।

एक की आवाज़ होती, "ऐ अल्लाह! मुझे अपने फ़ज़्ल करम से रोज़ी अता फ़रमा।"

दूसरा अंधा कहता, "ऐ रब! मुझे उम्मे जाफ़र का बचा-खुचा अता कर दे।"

उम्मे जाफ़र दोनों की आवाज़ें सुनतीं और दोनों को ही कुछ न कुछ दे देतीं।

जो अल्लाह का फ़ज़्ल मांगता था, उसे दो दरहम देतीं और जो 'उम्मे जाफ़र का फ़ज़्ल' मांगता था, उसे एक भुनी हुई मुर्ग़ी दे देतीं।

मज़े की बात यह थी कि जिसे मुर्ग़ी मिलती थी, वह अपनी मुर्ग़ी दूसरे अंधे को सिर्फ़ दो दरहम में बेच देता था। यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा।

एक दिन उम्मे जाफ़र उस अंधे के पास आईं जो 'उम्मे जाफ़र का फ़ज़्ल' मांगा करता था और उससे पूछा, "क्या तुम्हें सौ दीनार मिले हैं?"

अंधा हैरान रह गया। बोला, "नहीं! मुझे तो बस एक भुनी हुई मुर्ग़ी मिलती थी, जिसे मैं दो दरहम में बेच देता था।"

उम्मे जाफ़र ने कहा, "जिसने अल्लाह का फ़ज़्ल मांगा, मैं उसे दो दरहम देती थी, और तुम्हें जो भुनी हुई मुर्ग़ी देती थी, उसके पेट में दस दीनार छिपाकर देती थी।"

यह सुनते ही अंधा अपना सिर पीटने लगा। वह चीखने-चिल्लाने लगा, "हाय मेरी बदक़िस्मती! काश मैंने ऐसा न किया होता। मैं बर्बाद हो गया!"

उम्मे जाफ़र ने कहा, "बेशक जो ईश्वर का फ़ज़्ल मांगता है, वही कामयाब होता है और जो सिर्फ इंसानों का फ़ज़्ल मांगता है, वह हमेशा महरूम ही रह जाता है।" **-फेसबुक वाल से**

सामयिकी

सड़क हादसे: सबसे अधिक मौतों वाले देशों में भारत

सड़क सुरक्षा पर जारी हाल ही में एक रिपोर्ट कहती है कि दुनिया में भारत सड़क दुर्घटनाओं में सबसे अधिक मौतों वाले देशों में शामिल है। यहां हर वर्ष लाखों लोग घायल होते हैं और लगभग डेढ़ लाख लोग जान गंवा देते हैं। ये आंकड़े किसी सूखे तथ्य की तरह नहीं, बल्कि उन परिवारों की टूटती दुनिया का बयान हैं, जिन्हें एक पल की गलती उम्र भर का दर्द दे जाती है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि इन दुर्घटनाओं में 70 फीसदी से अधिक मौतें 18 से 45 वर्ष की उम्र के युवाओं की होती है। यानी समाज की सबसे उत्पादक, सपनों से भरी और भविष्य गढ़ने वाली पीढ़ी सड़क पर अपनी ही गलतियों के कारण मर रही है। यह एक ऐसी राष्ट्रीय त्रासदी है, जिसकी जड़ कहीं बाहर नहीं बल्कि हमारे बीच ही है।

डॉ. नीलू तिवारी

शिक्षिका

देश में सड़क दुर्घटनाओं की स्थिति 2024–2025 में और गंभीर हो गई है। सड़क परिवहन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2024 में देशभर में लगभग 4.73 लाख सड़क दुर्घटनाएं हुईं और करीब 1.70 लाख लोगों की मौत दर्ज की गई। वहीं 2025 की पहली छमाही में ही राष्ट्रीय राजमार्गों पर 29,018 लोगों की जान गई और 67,933 दुर्घटनाएं दर्ज की गईं। यह इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि मात्र 2 प्रतिशत लंबाई वाले राष्ट्रीय राजमार्ग पूरे देश में सड़क मौतों का अत्यधिक बड़ा हिस्सा वहन करते हैं। 2024 में राष्ट्रीय राजमार्गों पर कुल 1,25,873 दुर्घटनाएं और 53,090 मौतें हुई थीं, जो बताती हैं कि हाई-स्पीड कॉरिडोर देश के लिए सबसे बड़ा जोखिम क्षेत्र बने हुए हैं। कई शहरों में रैश ड्राइविंग सड़क दुर्घटनाओं का सबसे बड़ा कारण बना है।

इन सभी आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि भारत में सड़क हादसों के पीछे सड़क इंजीनियरिंग की समस्याएं, कानूनों का कमजोर प्रवर्तन और सबसे अधिक लोगों का गैरजिम्मेदाराना व्यवहार- जैसे तेज रफ्तार, गलत दिशा में वाहन चलाना, ओवरटेकिंग, हेलमेट और सीट बेल्ट की अनदेखी, नशे में ड्राइविंग और मोबाइल फोन का इस्तेमाल दुर्घटनाओं की जड़ में हैं। 2024–2025 के ये डाटा सिर्फ आंकड़े नहीं, बल्कि यह चेतावनी हैं कि सड़कें तभी सुरक्षित होंगी, जब लोग स्वयं नियमों का पालन करेंगे। सरकार सड़क सुधार और प्रवर्तन को प्रभावी बनाएगी और समाज मिलकर इस राष्ट्रीय संकट को कम करने की दिशा में कदम उठाएगा।

देश में सड़क दुर्घटनाओं के बढ़ते मामलों के पीछे सबसे बड़ा कारण लोगों की लापरवाही और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति है, जो हमारी सड़क संस्कृति का एक दुखद हिस्सा बन चुकी है। आज भी तेज रफ्तार सड़क दुर्घटनाओं की जड़ों में छिपा एक मौन हत्यारा मोबाइल फोन का बढ़ता उपयोग है। यह ड्राइविंग के दौरान ध्यान को विभाजित कर देता है, जिससे डिस्ट्रेक्टेड ड्राइविंग एक गंभीर समस्या के रूप में उभर रहा है। एक पल की अनदेखी न केवल चालक, बल्कि सड़क पर मौजूद हर अन्य व्यक्ति के लिए खतरा बन जाती है। वहीं नशे में वाहन चलाना भी दुर्घटनाओं का एक अत्यंत चिंताजनक कारण है। इसके अतिरिक्त ट्रैफिक नियमों के प्रति लोगों की उदासीनता भी सड़क हादसों के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार है।

दुर्घटनाओं में इजाफे का बड़ा कारण ट्रैफिक पुलिस की सीमित क्षमता और नियमों के ढीला पालन भी है। जब लोग यह महसूस करते हैं कि उन पर नजर रखने वाला कोई नहीं है, तो वे नियम तोड़ने में संकोच नहीं करते। इसके अलावा लाइसेंस प्रक्रिया में कमियों के कारण कई लोग पर्याप्त ड्राइविंग कौशल के बिना वाहन सड़क पर ले आते हैं, जिससे वे स्वयं और दूसरों दोनों के लिए जोखिम पैदा करते हैं।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं एलआईजी 23, प्रथम तल, आशियाना फेस-1, कांठ रोड मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- सुनील कुमार सिंह*** 0591-3551286(कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2020/79034 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुरादाबाद होगा)।

खतरनाक है अमेजन टिपिंग पॉइंट

हम जानते हैं कि धरती और इसके पर्यावरण से ही हमारा अस्तित्व जुड़ा है। आज बढ़ते प्रदूषण और पर्यावरण असंतुलन से पृथ्वी का जो हिस्सा सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहा है वह है दुनिया का सबसे बड़ा उष्णकटिबंधीय वर्षावन अमेजन। अमेजन के जंगल खतरे में हैं और यह खतरा एक और बड़े खतरे को जन्म दे रहा है, वह है कार्बन उत्सर्जन के विस्फोट का खतरा। हो सकता है कि तब धरती का तापमान इतना बढ़ जाए कि धरती पर हमारा या अन्य जीव-जंतुओं का रहना ही मुश्किल हो जाए। अमेजन का जंगल वैश्विक जलवायु को नियंत्रित करने, जैव विविधता को बनाए रखने और कार्बन अवशोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन आज वहां वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, अवैध खनन और आग जैसी समस्याओं से यह गंभीर संकट का सामना कर रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार, अमेजन अब टिपिंग पॉइंट अर्थात वह बिंदु जहां से वापसी असंभव हो जाए, के बहुत करीब पहुंच चुका है, जहां सत्तर प्रतिशत तक जंगल खोने का खतरा है।

डॉ. इरफान ह्यूमन
विज्ञान लेखक

1985 से 2022 तक 11 प्रतिशत जंगल, फ्रांस के आकार के बराबर, नष्ट हो चुका है। 2025 में, जबकि आग में कमी आई है, लेकिन कटाई बढ़ रही है, विशेषकर मवेशी पालन, कृषि, खनन और सड़कों के लिए। यहां अवैध गतिविधियों की चर्चा की जाना जरूरी है, जहां भूमि हड़पना, सोने की अवैध खदानों और अपराधियों द्वारा लगाई जाने वाली आग है। इस कारण वर्षा में कमी और सूखा, जो जंगल को और कमजोर कर रहा है। कुछ हिस्सों में अब जंगल कार्बन उत्सर्जन अधिक कर रहे हैं, जितना अवशोषित, यह पर्यावरणविदों के लिए चिंता का विषय है। हालांकि ब्राजील में कुछ प्रगति हुई है, अगस्त 2024 से जुलाई 2025 तक वनों की कटाई 11 प्रतिशत घटी, जो 11 साल के न्यूनतम स्तर पर है। यह कॉप 30 से पहले एक सकारात्मक संकेत है, जहां अमेजन की सुरक्षा पर फोकस होगा। फिर भी, समग्र खतरा बना हुआ है और वैश्विक सहयोग की ज़रूरत है। कॉप 30, वास्तव में अमेज़न के जंगलों को बचाने की उम्मीद की एक किरण है। कॉप 30 संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन की 30 वीं सम्मेलन ऑफ द पार्टिज है, जो दुनिया के प्रमुख वार्षिक जलवायु शिखर सम्मेलन के रूप में जाना जाता है।

टिपिंग पॉइंट

अमेजन वर्षावन का टिपिंग पॉइंट एक ऐसा महत्वपूर्ण बिंदु है, जहां जंगल अपनी प्राकृतिक पुनरुत्पादन क्षमता खो देगा और अपरिवर्तनीय रूप से सूखी सवाना (घासभूमि) में बदल जाएगा। यह बिंदु पार होने पर जंगल का बड़ा हिस्सा नष्ट हो सकता है, जो वैश्विक जलवायु, जैव विविधता और मानव जीवन को गंभीर खतरे में डाल देगा। वैज्ञानिकों के अनुसार हम इस बिंदु के बहुत करीब पहुंच चुके हैं, वर्तमान में अमेजन का लगभग 18 प्रतिशत हिस्सा कट चुका है और वैश्विक तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। यदि वनों की कटाई 20-25 प्रतिशत तक पहुंच जाती है या तापमान 2-2.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाता है (जो 2050 तक संभव है), तो यह टिपिंग पॉइंट पार हो सकता है। अब सवाल है कि इसका जोखिम क्या है? तो इसका जवाब हमें चिंता में डाल सकता है, क्योंकि यह टिपिंग पॉइंट न केवल अमेजन के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए विनाशकारी होगा। सबसे पहले बात करेंगे जंगल के अपूर्णीय नुकसान की। यदि टिपिंग पॉइंट पार होता है, तो 50-70 प्रतिशत जंगल, जो लगभग 3-4 लाख वर्ग किमी है, खो सकता है, जो इसे कम आर्द्र, आग-संवेदनशील सवाना में बदल देगा। दक्षिण-पूर्वी अमेजन पहले ही कार्बन स्रोत बन चुका है, जहां पेड़ों की मृत्यु बढ़ रही है और अगले 100 वर्षों में पूरा जंगल गायब हो सकता है।

जूनोटिक रोग

जूनोटिक रोग वे बीमारियां हैं, जो जानवरों से इंसानों में फैलती हैं (या कभी-कभी उल्टा भी होता है)। ये विषाणु यानी वायरस, बैक्टीरिया, परजीवी या कवक के कारण होती हैं और अक्सर जंगली जानवरों (जैसे चमगादड़, कृंतक या कीट) से शुरू होकर इंसानों तक पहुंचती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, सभी मानव संक्रामक रोगों में से 60 प्रतिशत से अधिक जूनोटिक हैं, और ये महामारियों (जैसे कोविड-19, एबोला या सार्स) का प्रमुख कारण बनते हैं। अमेजन जैसे वर्षावनों में जैव विविधता अधिक होने से ज़ूनोटिक रोगों का खतरा स्वाभाविक रूप से ज्यादा है, लेकिन वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और मानवीय हस्तक्षेप (जैसे खनन, कृषि विस्तार) से ये खतरे और गंभीर हो जाते हैं। जानवरों का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है, जिससे संक्रामक जीव इंसानों के करीब पहुंचते हैं। एक हालिया अध्ययन के अनुसार, 2001-2019 के बीच अमेजन में आग, वेक्टर-जनित और ज़ूनोटिक रोगों से लगभग 3 करोड़ मामले सामने आए। स्वदेशी भूमियों पर जंगलों की रक्षा से इनमें से 27 रोगों (जैसे चागास, मलेरिया आदि) के फैलाव को 15 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। आज अमेजन के जंगलों को बचाने के लिए ज़ीरो डिफॉरेस्टेशन, पुनर्वनीकरण और जैव-आधारित अर्थव्यवस्था की ज़रूरी है। ये अवधारणाएं एक-दूसरे को पूरक बनाती हैं, जीरो डिफॉरेस्टेशन रोकथाम है, पुनर्वनीकरण बहाली है और जैव-आधारित अर्थव्यवस्था टिकाऊ उपयोग प्रदान करती हैं। कॉप 30 जैसे मंचों पर इन्हें बढ़ावा दिया जा रहा है, लेकिन वैश्विक फेफड़े कहलाने वाले अमेजन के जंगलों पर अभी खतरा मंडरा रहा है।

कार्बन उत्सर्जन विस्फोट

कार्बन उत्सर्जन का विस्फोट से तात्पर्य वैश्विक स्तर पर कार्बन डाईऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों के रिकॉर्ड स्तर पर बढ़ने से है, जो जलवायु परिवर्तन को तेज कर रहा है। 2023-2024 के बीच कार्बन डाईऑक्साइड स्तर में रिकॉर्ड 4.7 भाग प्रति मिलियन (पीपीएम) की वृद्धि हुई, जो मानव इतिहास में सबसे अधिक है। 2024 में जीवाश्म ईंधन (कोयला, तेल, गैस) का उपयोग बढ़ने से उत्सर्जन चरम पर पहुंच गया और 2025 में जंगलों की आगों से कार्बन डाईऑक्साइड 9 प्रतिशत अधिक निकली। यह क्लाइमेट कैओस की ओर ले जा रहा है, जहां 1.5 डिग्री सेल्सियस तापमान सीमा पार होने पर अपरिवर्तनीय क्षति हो सकती है। अमेजन जैसे टिपिंग पॉइंट्स पार होने पर यह विस्फोट और भयावह हो जाएगा, जो 200-250 अरब टन कार्बन डाईऑक्साइड रिलीज कर सकता है, जो वैश्विक उत्सर्जन का 26 प्रतिशत के बराबर है। यह मानव जाति के लिए अस्तित्वगत खतरा है, क्योंकि यह जीवन के हर पहलू को प्रभावित करेगा, जैसे स्वास्थ्य, भोजन, पानी, आवास और शांति। वैज्ञानिकों के अनुसार, 2025 में हम 'डूम्सडे क्लॉक' (मानव-निर्मित आपदाओं का संकेतक) के करीब हैं, जहां जलवायु संकट परमाणु युद्ध जितना खतरनाक है।

कार्बन स्रोत

2025 तक अमेजन का दक्षिण-पूर्वी हिस्सा (ब्राजील का मुख्य भाग) पूरी तरह नेट कार्बन स्रोत बन चुका है, जहां सूखा मौसम लंबा हो गया है। एक अध्ययन के अनुसार पिछले 40 वर्षों में यहां की वनभूमि अब कुल कार्बन फ्लक्स (अवशोषण माइनस उत्सर्जन) से अधिक कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जित कर रही है। समग्र अमेजन में सिंग की भूमिका घट रही है, 2001-2024 के बीच स्वदेशी क्षेत्रों में कार्बन अवशोषण फ्रांस के वार्षिक जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन के बराबर था, लेकिन 2025 में आगे और कटाई से यह संतुलन बिगड़ गया। इसका कारण वनों की कटाई है। इसके अलावा 2025 में ब्राजील के अमेजन में 1.1 मिलियन हेक्टेयर जला, जो 2024 से 70 प्रतिशत कम है, लेकिन फिर भी दक्षिणी क्षेत्रों में कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। जंगलों की आग अब फीडबैक लूप बना रही है, गर्मी से आग बढ़ती है, जो और गर्मी पैदा करती है।

क्या है डूम्सडे क्लॉक

डूम्सडे क्लॉक एक प्रतीकात्मक घड़ी है, जो मानवता को वैश्विक आपदा, जैसे परमाणु युद्ध, जलवायु परिवर्तन या अन्य विनाशकारी घटनाओं, से कितनी निकटता पर दर्शाती है। डूम्सडे क्लॉक के खतरों के अंतर्गत सबसे पहले पहले चरम मौसम घटनाओं की चर्चा करते हैं। इसके चलते तूफान, बाढ़, सूखा और गर्मी की लहरें तेज हो रही हैं। 2024 में 1.5 डिग्री सेल्सियस सीमा पार हो चुकी है, जो हरिकेन और बाढ़ की तीव्रता बढ़ा रही है। इसके प्रभाव से दक्षिणी यूरोप और एशिया में 2025 की गर्मी की लहरों से हजारों मौतें और वैश्विक आपदाओं से 10 करोड़ लोग विस्थापित हुए हैं। इसके चलते समुद्र स्तर वृद्धि पर नजर डालें तो पाएंगे कि ग्लेशियर पिघलने से 2100 तक 1 मीटर तक समुद्र ऊंचा हो सकता है, लेकिन विस्फोट से यह और तेज होगा। इसके प्रभाव से तटीय शहर (जैसे मुंबई, न्यूयॉर्क) डूबने का खतरा है, इससे 10 करोड़ लोग प्रभावित होने के साथ, कृषि भूमि खराब होने का अनुमान है।

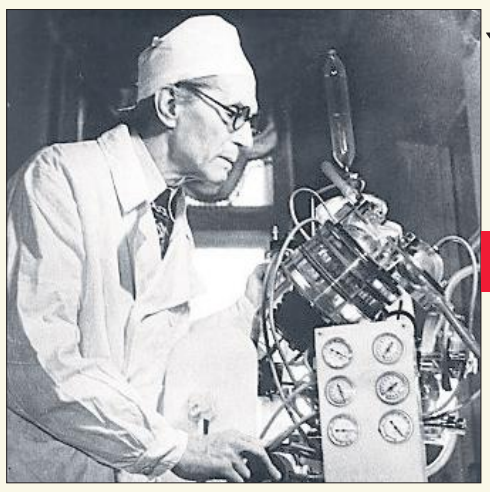

सर्गेई ब्रुखोनेंको

रोचक किस्सा

सोवियत वैज्ञानिक सर्गेई ब्रुखोनेंको को रूसी ओपन-हार्ट सर्जरी में महत्वपूर्ण प्रगति लाने में मदद करने का श्रेय दिया जाता है, लेकिन जानवरों पर उनके भयानक प्रयोग कहीं अधिक परेशान करने वाले थे। ब्रुखोनेंको इंतजार करने वालों में से नहीं थे, वे मरने के बाद जानवरों को काटने से संतुष्ट नहीं थे। अधिक सटीक रूप से, न केवल उन्हें इंतजार करना पसंद था, बल्कि वे जानवरों को मरते हुए भी नहीं देखना चाहते थे, उनके सिर काटने के बाद भी नहीं। 1930 के दशक के उत्तरार्ध में, ब्रुखोनेंको और उनकी टीम ने प्रयोगों की एक श्रृंखला शुरू की, जिसके एक भाग के रूप में उन्होंने एक कुत्ते का सिर काट दिया और उसे हवा और रक्त की आपूर्ति करने वाले उपकरण से जोड़कर उसके शरीर से दूर जीवित रखा। ब्रुखोनेंको द्वारा रची गई यही एकमात्र भयावहता नहीं थी। एक अन्य शिकारी कुत्ते के शरीर से सारा खून निकाल लिया गया, जिसे बाद में इस सोवियत फ्रेंकस्टीन द्वारा वापस जीवित कर दिया गया। ब्रुखोनेंको के भीषण काम को 1940 की फिल्म ' एक्सपेरिमेंट्स इन द रिवाइवल ऑफ ऑर्गेनिज्म्स' में कैमरे में कैद किया गया था।

टेक जानकारी

वोटर-लिस्ट अपडेट का नया दौर

ऑनलाइन सुविधाओं से प्रक्रिया हुई सरल

भारतीय निर्वाचन आयोग ने 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का अगला चरण शुरू किया है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य वोटर-लिस्ट को अपडेट करना, डुप्लीकेट और दिवंगत मतदाताओं के नाम हटाना है। आयोग ने सुविधा बढ़ाने के लिए ऑनलाइन आवेदन की सुविधा भी दी है, जिससे घर बैठे जानकारी में सुधार, नई एंट्री, वोटर-आईडी डाउनलोड और वोटर-लिस्ट में नाम की जांच आसानी से की जा सकती है।

ऐसे डाउन लोड करें वोटर लिस्ट

इसके लिए आप चुनाव आयोग की वेबसाइट (www.eci.gov.in) पर जाना होगा। साइट पर PDF E-Roll का ऑप्शन चुने। फिर अपने राज्य, जिला व निर्वाचन क्षेत्र चुनें और मतदान केंद्र के पास Final Roll ऑप्शन पर क्लिक करें। इसी से आप पूरी वोटर-लिस्ट डाउनलोड कर सकते हैं।

ऐसे चेक करें वोटर लिस्ट में अपना नाम

यदि आप सीधे अपना नाम देखना चाहें, तो वेबसाइट पर Search your name in E-roll ऑप्शन पर क्लिक करें। यहां आपको अपना वोटर-कार्ड पर लिखा संख्या या अन्य जानकारी भरनी होगी। इसके बाद Search पर क्लिक करके पता कर लें कि आपका नाम सूची में शामिल है या नहीं।

ऐसे करें वोटर-आईडी डाउनलोड

NVSP या वोटर सर्विसेज पोर्टल पर मोबाइल नंबर, पासवर्ड और कैप्चा दर्ज करके लॉग-इन करें और OTP वेरिफाई करें। लॉगइन के बाद E-EPIC Download विकल्प चुनें और EPIC नंबर या फॉर्म रेफरेंस नंबर से खोजें। विवरण दिखने पर OTP वेरिफिकेशन पूरा करें और अपना डिजिटल वोटर-आईडी (e-EPIC) डाउनलोड कर लें।

जंगल की दुनिया

लायन-टेल्ड मैकाक

लायन-टेल्ड मैकाक, जिसे हिंदी में सिंह पूंछ बंदर भी कहा जाता है, भारत के पश्चिमी घाटों की जैव-विविधता का अनमोल हिस्सा है। लगभग 60-65 सेंटीमीटर लंबे इन बंदरों का शरीर चमकीले काले फर से ढका होता है, जबकि गर्दन के चारों ओर फैला सिल्वर-व्हाइट अयाल इन्हें एक विशिष्ट और राजसी रूप देता है। पूंछ के सिरे पर मौजूद बाल इन्हें शेर जैसी छवि प्रदान करते हैं, इसी कारण इनका यह नाम पड़ा। ये प्रजाति अत्यंत आर्बोरियल है अर्थात् यह अपना जीवन लगभग पूरी तरह पेड़ों पर बिताती है। वर्षावन की ऊंची छतरी में छलांग लगाते हुए ये बंदर अपने समूह के साथ भोजन की तलाश में घूमते हैं। इनके भोजन में मुख्य रूप से फल, बीज, पत्ते, फूल और छोटे-मोटे कीड़े शामिल होते हैं। इनके सामाजिक समूह आमतौर पर छोटे होते हैं, जिसमें एक प्रमुख नर, कई मादाएं और उनके शावक शामिल होते हैं।

इनका व्यवहार अत्यंत शांत और सतर्क होता है। मानव गतिविधियों से ये दूरी बनाए रखते हैं, इसलिए जंगलों में भी इनका देख जाना बहुत दुर्लभ माना जाता है, लेकिन पिछले कुछ दशकों में तेजी से हो रही वनों की कटाई, सड़क निर्माण और मानव बस्तियों के विस्तार ने इनके प्राकृतिक आवास को गहराई से प्रभावित किया है। International Union for Conservation of Nature (IUCN) ने इन्हें लुप्तप्राय श्रेणी में रखा है, जो बताता है कि इनका अस्तित्व गंभीर खतरे में है। पश्चिमी घाट- दुनिया के आठ "हॉटस्पॉट्स ऑफ बायोडायवर्सिटी" में से एक इनका अंतिम सुरक्षित आश्रय बन चुका है। केरल के साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान, कर्नाटक के कुद्रेमुख और तमिलनाडु के अनामलाई क्षेत्रों में इनके संरक्षण के लिए कई योजनाएं चल रही हैं। स्थानीय जनजातियों, वन विभाग और शोध संस्थानों के संयुक्त प्रयासों से इस प्रजाति को बचाने की कोशिश जारी है। लायन-टेल्ड मैकाक केवल एक बंदर नहीं, बल्कि पश्चिमी घाट की समृद्ध प्राकृतिक धरोहर का प्रतीक है। यह एक ऐसी प्रजाति, जिसे बचाना हमारे पारिस्थितिक संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

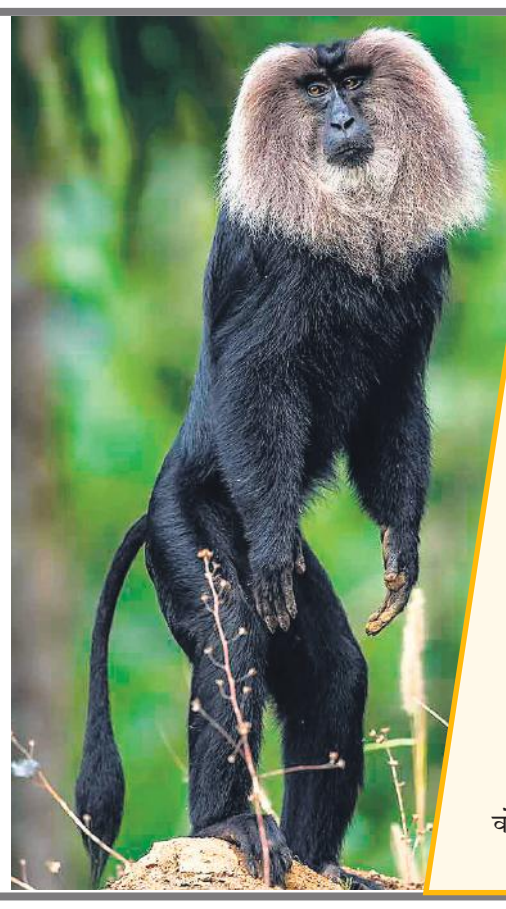

बाजार	सेंसेक्स ↑	निफ्टी ↑
बंद हुआ	85,720.38	26,215.55
बढ़त	110.88	10.25
प्रतिशत में	0.13	0.39

सोना 1,29,460 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,68,200 प्रति किलो

अमृत विचार

मुरादाबाद, शुक्रवार, 28 नवंबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

68 निवेश सलाहकारों का पंजीकरण रद्द

नई दिल्ली। पूंजी बाजार नियामक सेबी ने नवीनीकरण शुल्क का भुगतान करने में विफल रहने पर 68 निवेश सलाहकारों का पंजीकरण रद्द कर दिया। सेबी की नामित प्राधिकारी सोमा मजूमदार ने आदेश में कहा, मध्यवर्ती विनियम, 2008 के तहत, नोटिस संख्या 1 से 68 तक के निवेश सलाहकारों के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र रद्द किया जाता है। रद्द की गई संस्थाओं की सूची में टू नॉर्थ लैब्स प्राइवेट लिमिटेड, इक्विटी मंत्रा, सौरभ मुंद्रा, शीतल अग्रवाल, अतीत हेमंत वाघ, गेटबासिस सिक्योरिटीज एंड टेक्नोलॉजीज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, ल्यूसिड टेक्नोलॉजीज और एवेन्यू वेंचर पार्टनर्स इन्वेस्टमेंट एडवाइजर एलएलपी शामिल हैं।

निवेशक सुरक्षा को करेंगे मजबूत : सेबी प्रमुख

नई दिल्ली। सेबी के चेयरमैन तुहिन कांत पांडेय ने गुरुवार को निवेशकों की सुरक्षा को मजबूत करने की जरूरत बताई। उन्होंने आगाह किया कि गैर-पंजीकृत सलाहकार समूह, लोगों को असुरक्षित कारोबारी माध्यमों की ओर आकर्षित कर रहे हैं और इसलिए अवैध कारोबार के मामले नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। कोयंबटूर में बीएसई द्वारा आयोजित एक क्षेत्रीय निवेशक जागरूकता संगोष्ठी में पांडेय ने कहा कि इस दौर में जहां गलत सूचनाएं तथ्यों से अधिक तेजी से प्रसारित होती हैं। यह चुनौती और भी बढ़ गई है। कारोबार संबंधी धोखाधड़ी वाले एप विश्वसनीय लगते हैं, डिजिटल खाते वैधता का दिखावा करते हैं और पक्के रिटर्न का वादा करने वाली ऐसा योजनाएं पेश करते हैं जो कोई भी विनियमित बाजार नहीं दे सकता।

वायदा बाजार में कच्चे तेल के भाव में तेजी

नई दिल्ली। मजबूत मांग के बीच कारोबारियों के अपने सौदों का आकार बढ़ाने से वायदा कारोबार में कच्चे तेल का भाव बृहस्पतिवार को 28 रुपये चढ़कर 5,221 रुपये प्रति बैरल पर पहुंच गया। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) में दिसंबर में आपूर्ति वाले कच्चे तेल के अनुबंधों का भाव 28 रुपये यानी 0.54 प्रतिशत की बढ़त के साथ 5,221 रुपये प्रति बैरल पर पहुंच गया। इसमें 15,793 लॉट के लिए कारोबार हुआ।

जीएसटी युक्तिसंगत बनाने से खपत में तेजी

वित्त मंत्रालय ने कहा आर्थिक वृद्धि की गति रहेगी बरकरार, खुदरा मुद्रास्फीति अब तक के सबसे निचले स्तर पर

नई दिल्ली, एजेंसी

जीएसटी की दरों को युक्तिसंगत बनाने से खपत को महत्वपूर्ण बढ़ावा मिला है और भारतीय अर्थव्यवस्था चालू वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान जोखिमों से निपटने तथा वृद्धि की गति बनाए रखने के लिए मजबूत स्थिति में है। वित्त मंत्रालय की ओर से गुरुवार को जारी एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई।

वित्त मंत्रालय की अक्टूबर माह की मासिक आर्थिक समीक्षा में कहा गया कि मुद्रास्फीति के दबाव में कमी आने तथा हाल के कर सुधारों से खर्च योग्य घरेलू आय में वृद्धि से निकट भविष्य में उपभोग का परिदृश्य सकारात्मक लग रहा है। खुदरा मुद्रास्फीति अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। यह अक्टूबर 2025 में 0.25 प्रतिशत रह गई है जबकि सितंबर 2025 में यह 1.44 प्रतिशत थी। मंत्रालय ने कहा कि इस गिरावट का मुख्य कारण जीएसटी दरों में कमी, अनुकूल तुलनात्मक आधार प्रभाव और खाद्य मुद्रास्फीति में उल्लेखनीय गिरावट है। अक्टूबर की मासिक आर्थिक समीक्षा में कहा गया, जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने से उपभोग को उल्लेखनीय बढ़ावा मिला है। यह उच्च आवृत्ति संकेतकों (पीएमआई, जीएसटी सग्रह, ई-वे बिल आदि) में मजबूती से पता चलता है।

बिना दावे वाली संपत्तियों के लिए एकीकृत पोर्टल जल्द

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय बैंक जमा, पेंशन, शेयर, लाभांश और अन्य वित्तीय साधनों में फंसी बिना दावे वाली संपत्तियों के लिए दावा प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए आरबीआई के साथ मिलकर एक एकीकृत पोर्टल लाने की प्रक्रिया में है। वित्तीय सेवाओं के सचिव एन. नागराजू ने गुरुवार को पंजाब नेशनल बैंक के एक निवेशक जागरूकता कार्यक्रम में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जल्द ही पेश किए जाने वाले इस पोर्टल के जरिये सभी नियामकों के डेटा को आरबीआई द्वारा समन्वित किया जाएगा।

मुद्रा योजना के तहत 55 करोड़ लोगों को 34 लाख करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृत : चौधरी

नई दिल्ली। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने गुरुवार को कहा कि बैंकों ने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) के तहत 55 करोड़ लाभार्थियों को बिना किसी गारंटी के 34 लाख करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृत किए हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अप्रैल 2015 में की थी। इसका उद्देश्य वंचितों को वित्तपोषित करना है। शुरुआत में इस योजना के तहत अधिकतम ऋण सीमा 10 लाख रुपये थी जिसे 2024-25 के बजट में बढ़ाकर 20 लाख रुपये कर दिया गया। चौधरी ने यहां पंजाब नेशनल बैंक द्वारा 'आपकी पूंजी आपका अधिकार' विषय पर आयोजित शिविर में कहा कि पीएमएमवाई ने अब तक 55 करोड़ लाभार्थियों को बिना किसी गारंटी के ऋण उपलब्ध कराया है। उन्होंने 'आपकी पूंजी आपका अधिकार अभियान' के बारे में बात करते हुए कहा कि सरकार ने निष्क्रिय संपत्तियों पर दावा करने से जुड़े कुछ मुद्दों के समाधान के लिए पहले ही पहल की है, जिसमें दावे की बेहतर संभावना के लिए प्रति बैंक खाते में नामांकित लोगों की संख्या बढ़ाकर चार करना शामिल है। उन्होंने कहा कि इन उपायों के बावजूद अभी और काम किया जाना बाकी है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने वित्तीय क्षेत्र में बिना दावे वाली संपत्तियों पर तीन महीने का राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियान चार अक्टूबर को शुरू किया था। अभियान का शीर्षक 'आपकी पूंजी, आपका अधिकार' है।

भारत व यूएई ने बाजार पहुंच एफटीए प्रगति पर की चर्चा

नई दिल्ली, एजेंसी

- व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता के तहत की बैठक

भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए बाजार पहुंच, डेटा साझाकरण, डंपिंग रोधी मामलों एवं सेवाओं आदि से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की है। वाणिज्य मंत्रालय ने गुरुवार को यह जानकारी दी। भारत-यूएई ने व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (सीईपीए) के तहत संयुक्त समिति की बैठक के दौरान इन मुद्दों पर चर्चा की गई।

सीईपीए एक प्रकार का मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) है। मंत्रालय ने कहा, दोनों पक्षों ने सीईपीए के तहत प्रगति की व्यापक समीक्षा की। साथ ही बाजार पहुंच के मुद्दों, डेटा साझाकरण, स्वर्ण टीआरक्यू (निश्चित मात्रा तक कम शुल्क पर) आवंटन, डंपिंग रोधी मामलों, सेवाओं, उत्पत्ति के नियमों, बीआईएस लाइसेंसिंग पर विस्तृत चर्चा की। भारतीय पक्ष ने यूएई को पारदर्शी प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के माध्यम से स्वर्ण टीआरक्यू आवंटन पर अपने हालिया निर्णय के बारे में भी जानकारी दी। दोनों पक्षों ने औषधि क्षेत्र में विनियामक सहयोग बढ़ाने, उत्पत्ति प्रमाण पत्र से संबंधित मुद्दों के समाधान पर चर्चा की। साथ ही कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), भारत तथा संयुक्त अरब अमीरात के जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण मंत्रालय के बीच खाद्य सुरक्षा तथा तकनीकी आवश्यकताओं पर समझौता ज्ञापन पर शीघ्र हस्ताक्षर करने पर भी विचार-विमर्श किया।

एसबीआई को पांच-छह साल तक इक्विटी पूंजी की जरूरत नहीं : शेट्टी

नई दिल्ली, एजेंसी

- एसबीआई के चेयरमैन बोले- क्यूआईपी के जरिये जुटाई पूंजी से ऋण वृद्धि को मिलेगा समर्थन

भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के चेयरमैन सीएस शेट्टी ने कहा कि इस साल की शुरुआत में पात्र संस्थागत नियोजन (क्यूआईपी) के जरिये जुटाई गई 25,000 करोड़ रुपये की इक्विटी पूंजी से 12 लाख करोड़ रुपये की ऋण वृद्धि को समर्थन मिलेगा। साथ ही पांच से छह साल तक पूंजी पर्याप्तता अनुपात 15 प्रतिशत बना रहेगा। उन्होंने कहा कि ऋण पूंजी के संबंध में बैंक आवधिक प्रक्रिया के तहत बॉन्ड के माध्यम से 12,500 करोड़ रुपये जुटाएगा।

शेट्टी ने कहा, इस क्यूआईपी के शुरू होने से पहले भी, ऋण वृद्धि को वित्तपोषित करने की हमारी क्षमता कभी समस्या नहीं रही। हम पूंजी अनुपात को मजबूत करना चाहते थे, इसलिए हमने ऐसा किया। हमारी दीर्घकालिक रणनीति सीआरएआर को 15 प्रतिशत और 'कॉमन इक्विट टियर-1' को 12 प्रतिशत पर बनाए रखना है। उन्होंने कहा कि इस तरह का पूंजी-जोखिम परिसंपत्ति अनुपात (सीआरएआर) बैंक को 12000 अरब रुपये से अधिक के अग्रिमों को वित्तपोषित करने की क्षमता प्रदान करता है।

एसबीआई के चेयरमैन ने कहा, आज की लाभ दर के साथ, अगर यही लाभप्रदता अगले पांच से छह वर्ष तक बनी रहती है, तो हमें कम से कम सीईटी-1 पर कोई भी पूंजी जुटाने की आवश्यकता नहीं होगी। एसबीआई ने इस साल जुलाई में अपने इक्विटी शेयर के पात्र संस्थागत नियोजन (क्यूआईपी) के जरिये 25,000 करोड़ रुपये जुटाए। इससे यह भारतीय पूंजी बाजारों में अब तक का सबसे बड़ा क्यूआईपी बन गया। इससे पहले बैंक ने जून 2017 में क्यूआईपी के जरिये 15,000 करोड़ रुपये की इक्विटी पूंजी जुटाई थी।

सड़क निर्माण में गुणवत्ता सुनिश्चित करें, वरना कार्रवाई होगी : गडकरी

अहमदाबाद। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने गांधीनगर में एनएचएआई के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की और ठेकेदारों को चेतावनी दी कि सड़क निर्माण में उच्च गुणवत्ता बनाए रखें, अन्यथा कार्रवाई का सामना करने के लिए तैयार रहें।

- गडकरी ने ठेकेदारों को चेताया

बुधवार को हुई समीक्षा बैठक के दौरान सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री ने ठेकेदारों से राजमार्गों के निर्माण के साथ-साथ पुनर्निर्माण में लोगों की सुविधा और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने को भी कहा। राज्य सरकार की एक विज्ञप्ति में बृहस्पतिवार को कहा गया कि गडकरी ने आश्वासन दिया कि केंद्र गुजरात में राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण, पुनर्निर्माण तथा संबंधित परियोजनाओं के लिए 20,000 करोड़ रुपये आवंटित करेगा। गडकरी ने बुधवार को गुजरात के साबरकांठा जिले के हिम्मतनगर शहर में राष्ट्रीय राजमार्ग -48 के निर्माणाधीन खंड का निरीक्षण किया और मोतीपुर फ्लाईओवर तथा राजमार्ग पर एक अंडरपास पर किए जा रहे काम की प्रगति की समीक्षा की। गुजरात के मुख्यमंत्री की उपस्थिति में आयोजित समीक्षा बैठक में गडकरी ने अधिकारियों और ठेकेदारों से कहा, सड़क निर्माण में उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित करें, अन्यथा कार्रवाई का सामना करने के लिए तैयार रहें।

विदेशी संपत्तियों का खुलासा नहीं करने वालों को संदेश भेजेगा आयकर विभाग

नई दिल्ली, एजेंसी

- 28 नवंबर से एसएमएस एवं ईमेल भेजना करेगा शुरू, 31 दिसंबर तक आईटीआर दाखिल करने की सलाह

आयकर विभाग ने गुरुवार को कहा कि लगभग 25,000 करदाताओं के अधिक-जोखिम वाले मामलों को चिन्हित किया गया है जिनमें उन्होंने अपने आयकर रिटर्न में विदेशी परिसंपत्तियों का विवरण नहीं दिया है।

विभाग ने कहा कि इन चिह्नित लोगों को 28 नवंबर से एसएमएस एवं ईमेल भेजना शुरू किया जाएगा और उन्हें दंडात्मक कार्रवाई से बचने के लिए 31 दिसंबर, 2025 तक संशोधित आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल करने की सलाह दी जाएगी। दिसंबर मध्य से शुरू होने वाले अभियान के दूसरे चरण में दूसरे मामलों को भी शामिल करने के लिए इसका दायरा बढ़ाया जाएगा। पिछले साल भी आयकर विभाग ने स्वचालित सूचना आदान-प्रदान (एईओआई) व्यवस्था के तहत विदेशी क्षेत्राधिकारों द्वारा सूचित ऐसे करदाताओं को संदेश भेजे थे, जिन्होंने अपने विदेशी निवेश और खातों का विवरण आईटीआर में नहीं दिया था। इस पहल का परिणाम यह हुआ था कि कुल 24,678 करदाताओं ने अपने रिटर्न में संशोधन किया और 29,208 करोड़ की विदेशी परिसंपत्तियों एवं 1,089.88 करोड़ रुपये की विदेशी आय की जानकारी भी दी। सूत्रों ने कहा कि बड़ी कंपनियों, जिनके कर्मचारियों के पास विदेशी संपत्ति है और उन्होंने इसका खुलासा नहीं किया है, को भी इस पहल का हिस्सा बनाया गया है।

राष्ट्रीय

ऑनलाइन अश्लीलता से निपटने को तटस्थ नियामक जरूरी

सुप्रीम कोर्ट ने मीडिया तथा ओटीटी संस्थाओं द्वारा अपनाए गए मौजूदा स्व-नियमन ढांचे पर किया असंतोष व्यक्त

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने मीडिया तथा ओटीटी संस्थाओं द्वारा अपनाए गए मौजूदा स्व-नियमन ढांचे पर असंतोष व्यक्त किया है और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अश्लील, आपत्तिजनक या अवैध सामग्री की निगरानी के लिए एक तटस्थ, स्वतंत्र और स्वायत्त नियामक निकाय की आवश्यकता पर बल दिया है। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ गुरुवार को पॉडकास्टर रणवीर इलाहाबादिया और अन्य की याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी। इन याचिकाओं में ऑनलाइन शो इंडियाज गॉट लैटेंट से संबंधित कथित अश्लील सामग्री को लेकर दर्ज प्राथमिकी को एक साथ करने की मांग की गयी है।

इससे पहले न्यायालय ने ऑनलाइन अश्लीलता पर व्यापक दिशानिर्देश तैयार करने के लिए मामले के दायरे को बढ़ाया था। अटॉर्नी जनरल आर. वेंकटरमणी और सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने न्यायालय को बताया कि केंद्र सरकार नए दिशानिर्देश तैयार कर रही है और हितधारकों से परामर्श कर रही है। मेहता ने कहा कि यह मामला केवल अश्लीलता से नहीं, बल्कि यूट्यूब और समान प्लेटफॉर्म पर प्रकाशित उपयोगकर्ता-जनित सामग्री में मौजूद विकृति से भी संबंधित है। मुख्य न्यायाधीश ने स्वतंत्र कंटेंट क्रिएटर्स के लिए किसी भी नियामक ढांचे की अनुपस्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए टिप्पणी करते हुए कहा, तो मैं अपना चैनल बनाता हूं, मैं किसी के प्रति जवाबदेह नहीं हूं... किसी को तो जवाबदेह होना चाहिए! उन्होंने कहा कि बोलने की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे विकृति को सही ठहराने के लिए नहीं बढ़ाया जा सकता।

इंडियन ब्रॉडकास्ट एंड डिजिटल फाउंडेशन की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अमित सिब्बल ने कहा कि आईटी नियम, 2021 पहले से ही एक नियामक ढांचा प्रदान करते हैं। उन्होंने बताया कि ओटीटी प्लेटफॉर्म न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) गीता मित्तल की अध्यक्षता वाले निकाय के माध्यम से स्वेच्छा से कंटेंट लेबलिंग, आयु वर्गीकरण और शिकायत निवारण लागू करते हैं। मुख्य न्यायाधीश ने हालांकि इस मॉडल पर गहरी आपत्ति व्यक्त करते हुए कहा, स्व-घोषित निकाय मदद नहीं करेंगे। एक तटस्थ स्वायत्त निकाय की आवश्यकता है। उन्होंने सवाल किया कि अगर स्व-नियमन प्रभावी है, तो उल्लंघन क्यों जारी हैं। न्यायमूर्ति बागची ने भी चिंता को दोहराते हुए हानिकारक कंटेंट के तेजी से फैलने की चेतावनी दी। उन्होंने पूछा, एक बार निंदनीय सामग्री अपलोड हो जाने के बाद, जब तक अधिकारी प्रतिक्रिया करते हैं, तब तक वह लाखों लोगों तक वायरल हो चुकी होती है। आप उसे कैसे नियंत्रित करेंगे? मुख्य न्यायाधीश ने हाशिए पर रहनेवाले समुदायों पर आपत्तिजनक सामग्री के प्रभाव पर भी प्रकाश डाला।

प्रदूषण पर कहा- एक न्यायिक मंच कौन-सी जादुई छड़ी घुमा सकता है

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में लगातार खराब होती वायु गुणवत्ता से संबंधित एक याचिका पर तीन दिसंबर को सुनवाई करने पर गुरुवार को सहमति जताई। न्यायालय ने कहा कि इस मुद्दे की नियमित रूप से निगरानी की आवश्यकता है। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह के उस अभ्यावेदन पर गौर किया कि दिल्ली-एनसीआर में चिंताजनक स्थिति है और यह एक स्वास्थ्य आपातकाल है। अधिवक्ता अपराजिता सिंह वायु प्रदूषण मामले में पीठ के लिए न्यायमित्र की भूमिका निभा रही हैं। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, एक न्यायिक मंच कौन-सी जादुई छड़ी घुमा सकता है? मुझे पता है कि यह दिल्ली-एनसीआर के लिए खतरनाक स्थिति है। हम सब समस्या जानते हैं। मुद्दा यह है कि समाधान क्या है? हमें कारणों की पहचान करनी होगी और समाधान तो केवल विशेषज्ञ ही दे सकते हैं। हमें उम्मीद है और अपेक्षा भी कि दीर्घकालिक समाधान खोजे जाएंगे। उन्होंने कहा, मुझे बताइए कि हम क्या निर्देश दे सकते हैं? हम कुछ दिशानिर्देश जारी करें और तुरंत साफ हवा में सांस लेने लगें। हमें यह भी देखना होगा कि प्रत्येक क्षेत्र में क्या समाधान हो सकते हैं। आइए देखें कि सरकार ने क्या समिति गठित की है। न्यायालय ने 19 नवंबर को वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) से कहा था कि वह दिल्ली-एनसीआर के स्कूलों को नवंबर-दिसंबर में निर्धारित, खुले में होने वाले खेल आयोजनों को जहरीली हवा को देखते हुए स्थगित करने का निर्देश देने पर विचार करे। न्यायालय ने ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) के तहत सालभर पाबंदियां लगाने से इनकार कर दिया था। ग्रैप एक आपातकालीन ढांचा है जिसके तहत प्रदूषण के गंभीर स्तर पर कुछ गतिविधियों पर रोक लगाई जाती है।

कांग्रेस ने आंतरिक कलह और सीट बंटवारे में देरी को बताया हार का कारण

नई दिल्ली, एजेंसी

- खरगे और राहुल ने प्रत्याशियों को दिल्ली बुलाकर जानी हार के पीछे की कहानी
- सरकार द्वारा महिलाओं को 10 हजार रुपये दिए जाने को भी बताया वजह

कांग्रेस नेतृत्व ने बृहस्पतिवार को बिहार विधानसभा में निर्वाचित अपने विधायकों तथा हारे उम्मीदवारों के साथ चुनाव नतीजों पर समीक्षा बैठक की, जिसमें कई नेताओं यह कहा कि महागठबंधन में समय पर सीट बंटवारा नहीं होने, 'आंतरिक कलह' और नीतीश कुमार सरकार द्वारा महिलाओं को 10-10 हजार रुपये दिया जाना करारी हार के मुख्य कारण रहे।

कांग्रेस मुख्यालय 'इंदिरा भवन' में हुई इस बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने नेताओं के साथ 10-10 के समूह में बातचीत की तथा उनसे हार के कारणों के बारे में जाना। इस बैठक में कांग्रेस के बिहार प्रभारी कृष्णा अल्लावरू और प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम भी थे। बैठक के दौरान कांग्रेस के एक उम्मीदवार और सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव के एक समर्थक नेता के बीच पर कहासुनी की भी खबर है। बैठक के बाद अररिया से कांग्रेस के विधायक आबिदुर रहमान ने बताया कि हार के कई कारण थे। पहला कारण है कि आचार संहिता का उल्लंघन करते हुए 10-10 हजार रुपये दिए गए। गठबंधन में सीट बंटवारा सही समय पर नहीं हो सका। 10-11 सीटों पर दोस्ताना मुकाबला हुआ, जिससे जनता में अलग संदेश गया।

खेती के नए तरीके अपनाने के लिए सात किसानों को पुरस्कार

नई दिल्ली। खेती में नवाचार और उद्यमशीलता के लिए सात किसानों को पुरस्कार दिया गया है। किसान ऑफ इंडिया सम्मान के अंतर्गत जैविक/प्राकृतिक खेती, संरक्षित खेती, खाद्य प्रसंस्करण, कृषि स्टार्ट-अप, डेयरी फार्मिंग, मत्स्यपालन और खेती में नई प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बेहतर काम करने वाले किसानों को सम्मानित किया गया। राजस्थान के जोधपुर के एक उद्यमी, अमित सोनी ने बताया कि कैसे संसद में उनके बाजरे से बने चॉकलेट ट्रफल केक को काटा गया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उसकी तारीफ की। सना खान को प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 'मन की बात' प्रोग्राम में वर्मीकम्पोस्ट में उनके प्रयासों की तारीफ किए जाने के बाद ख्याति मिली।

जसीर बिलाल वानी 7 दिन के लिए एनआईए की हिरासत में

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली की एक अदालत ने हाल ही में लाल किले के नजदीक हुए विस्फोट मामले के मुख्य आरोपी जसीर बिलाल वानी को बृहस्पतिवार को सात दिनों के लिए राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) की हिरासत में भेज दिया।

वानी को एनआईए ने इसलिए पेश किया क्योंकि प्रधान सत्र एवं जिला न्यायाधीश अंजू बजाज चंदना द्वारा 18 नवंबर को दी गई 10-दिवसीय हिरासत गुरुवार समाप्त हो रही थी। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग के काजीगुंड निवासी वानी को 17 नवंबर को एनआईए ने श्रीनगर में गिरफ्तार किया था। उस पर 10 नवंबर के धमाके से पहले ड्रोन को संशोधित करके आतंकवादी हमले करने और रॉकेट बनाने का प्रयास करने में तकनीकी सहायता प्रदान करने का आरोप है।

कश्मीर के विभिन्न इलाकों में छापेमारी

श्रीनगर। कश्मीर में प्रतिबंधित संगठन जमात-ए-इस्लामी (जेईआई) के खिलाफ कार्रवाई के तहत पुलिस ने कई जगहों पर छापेमारी की। अधिकारियों ने बताया कि ये छापेमारी श्रीनगर, अनंतनाग, पुलवामा, शोपियां, कुलगाम, बडगाम और कुपवाड़ा जिलों में की गई। आतंकी तंत्र और उसका समर्थन करने वालों को खत्म करने के प्रयासों के तहत जेईआई सदस्यों और उनके सहयोगियों से जुड़े परिसरों व अन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया।

बंगाल में अवैध सुनवाई के दौरान टीएमसी कार्यकर्ता की हत्या

बंगाल। मालदा जिले में कंगारू कोर्ट (अवैध अदालत) में हिंसा हो जाने के बाद बृहस्पतिवार को तृणमूल कांग्रेस के एक कार्यकर्ता की कथित तौर पर हत्या कर दी गई और पांच अन्य घायल हो गए। कालियाचक थाना क्षेत्र के राजनगर में खेत में ट्रैक्टर चलाने को लेकर विवाद को सुलझाने के लिए हो रही कंगारू कोर्ट के दौरान यह घटना हुई। पुलिस के अनुसार, मृतक की पहचान इकरामुल शेख (45) के रूप में हुई है। इकरामुल और टीएमसी बूथ अध्यक्ष समसुल शेख के बीच कई दिनों से विवाद था तथा दोनों ने पहले पुलिस से संपर्क किया था, लेकिन उनके परिवारों का दावा है कि कोई औपचारिक शिकायत दर्ज नहीं की गई।

निर्णायक क्षण था ऑपरेशन सिंदूर की सफलता : मुर्मू

- चाणक्य डिफेंस डायलॉग के तीसरे संस्करण सत्र को राष्ट्रपति ने किया संबोधित

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गुरुवार को कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता देश की आतंकवाद निरोधक और रोकथाम रणनीति के लिए निर्णायक क्षण थी। उन्होंने कहा कि इससे दुनिया ने न सिर्फ भारत की सैन्य क्षमता पर, बल्कि शांति की तलाश में मजबूती से, लेकिन जिम्मेदारी से काम करने की उसकी नैतिक स्पष्टता पर भी ध्यान दिया।

यहां सेना की मेजबानी में आयोजित 'चाणक्य डिफेंस डायलॉग' के तीसरे संस्करण के उद्घाटन सत्र में अपने भाषण में मुर्मू ने इस बात पर जोर दिया कि भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सभ्यतागत लोकाचारों से निर्देशित होकर हमने दिखाया है कि वैश्विक जिम्मेदारी के साथ रणनीतिक स्वायत्तता अस्तित्व में रह सकती है। मुर्मू ने कहा, 'हमारी कूटनीति, हमारी अर्थव्यवस्था और हमारे सशस्त्र बल मिलकर ऐसा भारत प्रस्तुत करते हैं जो शांति चाहता है, लेकिन अपनी सीमाओं और अपने नागरिकों की मजबूती और दृढ़संकल्प के साथ रक्षा करने के लिए तैयार है। राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय सशस्त्र बलों ने भारत की संप्रभुता की रक्षा में पेशेवर तरीके और देशभक्ति की मिसाल पेश की है। मुर्मू ने कहा, हर सुरक्षा चुनौती के दौरान, चाहे वह परंपरागत हो, उग्रवाद रोधी हो या मानवीयता से जुड़ी हो, हमारी सेनाओं ने उल्लेखनीय तरीके से अनुकूलनशीलता और संकल्प प्रदर्शित किया है। मंचासीन सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने भी इस मौके पर संबोधन दिया। राष्ट्रपति मुर्मू ने अपने भाषण में ऑपरेशन सिंदूर का उल्लेख किया, जो मई में पहलगाम हमले के बाद भारत की अहम सैन्य कार्रवाई थी। उन्होंने कहा, ऑपरेशन सिंदूर की हालिया सफलता हमारी आतंकवाद निरोधक और रोकथाम रणनीति में एक अहम मोड़ है।

नेपाल ने 100 रुपये के जारी नए नोट में भारतीय क्षेत्रों को अपना बताया

- भारत ने जताया विरोध, मानचित्र में विवादास्पद कालापानी, लिपुलेख व लिंपियाधुरा क्षेत्र शामिल

काठमांडू, एजेंसी

नेपाल के केंद्रीय बैंक ने गुरुवार को 100 रुपये के नए नोट जारी किए, जिन पर देश का संशोधित मानचित्र छपा है, जिसमें विवादास्पद कालापानी, लिपुलेख और लिंपियाधुरा क्षेत्र भी शामिल हैं। भारत ने इस कदम को कृत्रिम विस्तार करार दिया है।

नेपाल राष्ट्र बैंक (एनआरबी) के नए नोट पर पूर्व गवर्नर महाप्रसाद अधिकारी के हस्ताक्षर हैं। बैंक नोट पर जारी करने की तिथि 2081 बीएस अंकित है, जो गत वर्ष 2024 को दर्शाती है। तत्कालीन प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली के नेतृत्व वाली सरकार के दौरान, नेपाल ने मई 2020 में संसद के अनुमोदन के माध्यम से कालापानी, लिपुलेख और लिंपियाधुरा क्षेत्रों को शामिल करते हुए मानचित्र को अद्यतन किया था। मानचित्र के अद्यतन संस्करण के बारे में स्पष्टीकरण देते हुए, एनआरबी के एक प्रवक्ता ने कहा कि यह मानचित्र पुराने 100 रुपये के बैंक नोट में पहले से ही मौजूद है और सरकार के निर्णय के अनुसार इसे संशोधित किया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि 10 रुपये, 50 रुपये, 500 रुपये और 1,000 रुपये जैसे विभिन्न नोटों में से केवल 100 रुपये के बैंक नोट पर ही नेपाल का मानचित्र अंकित है।

भारत का कहना है कि लिपुलेख, कालापानी और लिंपियाधुरा उसके क्षेत्र हैं। नेपाल पांच भारतीय राज्यों - सिक्किम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के साथ 1850 किलोमीटर से अधिक लंबी सीमा साझा करता है।

कमजोर प्रवासन नीतियां राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा: ट्रंप

अमेरिकी राष्ट्रपति ने व्हाइट हाउस के पास नेशनल गार्ड के दो कर्मियों पर हुए हमले के बाद की टिप्पणी

वॉशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि बुधवार को व्हाइट हाउस के पास नेशनल गार्ड के दो कर्मियों पर हुआ 'जघन्य हमला' यह साबित करता है कि कमजोर प्रवासन नीतियां हमारे राष्ट्र के समक्ष सबसे बड़ा राष्ट्रीय सुरक्षा खतरा हैं। ट्रंप ने कहा कि कोई भी देश अपनी अस्तित्व के लिए ऐसे खतरे को बर्दाश्त नहीं कर सकता। सोशल मीडिया पर जारी एक वीडियो में ट्रंप ने यह बात कही। ट्रंप की यह टिप्पणी इस बात को रेखांकित करती है कि वह देश की आव्रजन प्रणाली में बदलाव लाने और यहां पहले से मौजूद प्रवासियों की जांच-पड़ताल को और सख्त करने का इरादा रखते हैं। अमेरिका में पहले ही आक्रामक निर्वासन कार्रवाइयां

जारी हैं और गोलीबारी की घटना पर उनकी इस कड़ी प्रतिक्रिया से माना जा रहा है कि इस मुद्दे से उनका ध्यान नहीं हटेगा। ट्रंप और दो कानून प्रवर्तन अधिकारियों के अनुसार गोलीबारी का संदिग्ध एक अफगान नागरिक माना जा रहा है। वह 2021 में 'ऑपरेशन अलाइज वेलकम' के तहत अमेरिका पहुंचा था। यह बाइडन प्रशासन का कार्यक्रम था जिसके तहत अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना की वापसी के बाद वहां से निकाले गए हजारों अफगान नागरिकों को यहां बसाया गया था। इस पहल के तहत करीब 76,000 लोग अमेरिका लाए गए।

कहा- हर उस व्यक्ति को हटाना चाहते हैं जो बाहरी

राष्ट्रपति ने कहा कि वह हर उस व्यक्ति को हटाना चाहते हैं 'जो यहां का नहीं है या जो हमारे देश के लिए लाभकारी नहीं है। ट्रंप ने कहा, अगर वे हमारे देश से प्यार नहीं कर सकते, तो हमें उनकी जरूरत नहीं है।

मियामी में 2026 के जी20 शिखर सम्मेलन में दक्षिण अफ्रीका को नहीं किया जाएगा आमंत्रित

न्यूयॉर्क। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका को अगले वर्ष फ्लोरिडा में उनके देश की अध्यक्षता में आयोजित होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण नहीं मिलेगा। उन्होंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका कहीं भी सदस्यता के लिए योग्य नहीं है। अमेरिका ने दक्षिण अफ्रीका से जी-20 की अध्यक्षता ग्रहण की है और वह एक दिसंबर, 2025 से 30 नवंबर, 2026 तक इस समूह का नेतृत्व करेगा। ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया मंच 'ट्रुथ सोशल' पर लिखा, अमेरिका ने दक्षिण अफ्रीका में जी-20 में भाग नहीं लिया क्योंकि दक्षिण अफ्रीकी सरकार अफ्रीकी लोगों और पुर्तगाली, फ्रांसीसी तथा जर्मन प्रवासियों के वंशजों द्वारा झेले गए भयावह मानवाधिकार हनन को स्वीकार करने या उस पर ध्यान देने से इनकार करती है। उन्होंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका ने दुनिया को दिखा दिया है कि वे इस योग्य नहीं हैं कि उन्हें कहीं भी सदस्यता दी जाए और हम तुरंत प्रभाव से उन्हें दिए जाने वाले सभी भुगतान और रियायत बंद कर रहे हैं। ट्रंप ने कहा, दक्षिण अफ्रीका ने शिखर सम्मेलन के समाप्त होने पर जी-20 की अध्यक्षता हमारे अमेरिकी दूतावास के एक वरिष्ठ प्रतिनिधि को सौंपने से इनकार कर दिया था। इसलिए मेरे निर्देश पर दक्षिण अफ्रीका को 2026 जी-20 के लिए निमंत्रण नहीं मिलेगा, जिसकी मेजबानी अगले साल फ्लोरिडा के बड़े शहर मियामी में की जाएगी।

वर्ल्ड ब्रीफ

चीन में ट्रेन दुर्घटना में 11 की मौत, दो घायल

बीजिंग। चीन के दक्षिण-पश्चिमी शहर कुनमिंग में बृहस्पतिवार तड़के रेल पटरी पर काम कर रहे कर्मचारी एक ट्रेन की चपेट में आ गए जिससे 11 लोगों की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। रेलवे अधिकारियों ने यह जानकारी दी। चीन रेलवे कुनमिंग ग्रुप कंपनी लिमिटेड के अनुसार, यह दुर्घटना युन्नान प्रांत की राजधानी कुनमिंग के लुयांगझेन स्टेशन पर हुई। सरकारी समाचार एजेंसी 'शिन्हुआ' के अनुसार, दुर्घटना के कारणों की जांच की जा रही है और रेलवे स्टेशन पर परिचालन बहाल हो गया है।

बारिश, भूस्खलन से श्रीलंका में 31 की मौत

कोलंबो। श्रीलंका में बीते 11 दिन में मूसलाधार बारिश, बाढ़ और भूस्खलन के कारण 31 लोगों की मौत हो गई जबकि करीब 4,000 लोग प्रभावित हुए हैं। श्रीलंका के आपदा प्रबंधन केंद्र ने बृहस्पतिवार को कहा कि अकेले मध्य पर्वतीय जिलों में 18 लोगों की मौत होने की जानकारी मिली है। डेली मिरर ऑनलाइन की खबर के अनुसार एक भयावह घटना में, कुंबुक्कना में बढ़ते जलस्तर के बीच एक यात्री बस फंस गई, जिसके बाद आपात दलों ने 23 यात्रियों को सफलतापूर्वक बचा लिया।

गिनी बिसाऊ को सैन्य शासक किया घोषित

बिसाऊ। गिनी-बिसाऊ के सैनिकों ने राष्ट्रपति चुनाव के बाद सत्ता पर अपने जबरन कब्जे को मजबूत करते हुए बृहस्पतिवार को देश के नए सैन्य शासक की घोषणा की। सेना के शीर्ष नेतृत्व ने जनरल होर्ता एनटा को सैन्य शासन का प्रमुख घोषित किया।

भारत-इंडोनेशिया मुक्त, शांतिपूर्ण व समृद्ध हिन्द प्रशांत के लिए प्रतिबद्ध

रक्षा मंत्री राजनाथ ने इंडोनेशिया के समकक्ष संग की बैठक, दोनों देशों ने रक्षा संबंधों पर सहमति जताई

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली में इंडोनेशिया के समकक्ष के साथ बैठक करते केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह। एजेंसी

भारत और इंडोनेशिया ने अंतर्राष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के अधिकार पर आधारित मुक्त, खुले, शांतिपूर्ण और समृद्ध हिन्द प्रशांत के महत्व को दोहराते हुए इसके लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है। दोनों देशों ने रक्षा संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने पर भी सहमति व्यक्त की है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को यहां इंडोनेशिया के रक्षा मंत्री सजाफरी सजामसोएद्दीन के साथ तीसरे भारत-इंडोनेशिया रक्षा मंत्री संवाद की सह-अध्यक्षता की। बैठक में दोनों देशों ने दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी और द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को और मजबूत करने की पुष्टि की।

रक्षा मंत्रालय ने एक वक्तव्य जारी कर कहा कि दोनों पक्षों ने हिंद-प्रशांत में शांति और सुरक्षा पर रणनीतिक दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा कि भारत और इंडोनेशिया ऐसे मुक्त, खुले, शांतिपूर्ण, स्थिर और समृद्ध हिंद-प्रशांत के पक्षधर हैं जो अंतर्राष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के सम्मान पर आधारित हो। इंडोनेशिया ने 'हिन्द प्रशांत पर आसियान के दृष्टिकोण' और भारत के 'हिन्द प्रशांत महासागर पहल' के साझा सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए क्षेत्र में शांति और सहयोग को बढ़ावा देने में भारत को एक प्रमुख भागीदार बताया। दोनों पक्षों ने 'इंडियन ओसियन रिम एसोसिएशन' सहित बहुपक्षीय ढांचों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। दोनों देशों ने समुद्री क्षेत्र जागरूकता, साइबर और संयुक्त संचालन तैयारी में व्यवहारिक सहयोग बढ़ाने का संकल्प जताया। दोनों देशों ने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग की मजबूत नींव, रक्षा सहयोग समझौता और संयुक्त रक्षा सहयोग समिति के प्रति वचनबद्धता को दोहराया। इंडोनेशिया ने रक्षा उद्योग सहयोग समिति बनाने के भारत के प्रस्ताव का स्वागत किया, जिसका उद्देश्य तकनीक हस्तांतरण, संयुक्त अनुसंधान एवं विकास, समन्वयन और आपूर्ति श्रृंखला संबंधों को मजबूत करना है। उन्होंने सुपर गरुड़ शील्ड, गरुड़ शक्ति, समुद्र शक्ति, मिलन और एयर मैन्यूवर जैसे अभ्यासों की सराहना की।

दोनों देशों ने समुद्री सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई

दोनों पक्षों ने अधिकारी आदान-प्रदान, संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों और रक्षा शिक्षा संस्थानों के दौरे जारी रखने पर भी सहमति व्यक्त की। दोनों देशों ने हिंद महासागर में समन्वय सहित समुद्री सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने फिलिस्तीन में न्यायपूर्ण और स्थायी शांति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और मानवीय सहायता, संघर्षोत्तर पुनर्निर्माण और बहुपक्षीय शांति प्रयासों में सहयोग की संभावनाओं पर विचार किया। इंडोनेशिया ने संयुक्त राष्ट्र के कानूनों के तहत गाजा में शांति सैनिक भेजने की अपनी तत्परता व्यक्त की। भारत ने सेना की रिमाउंट वेटरनरी कोर द्वारा इंडोनेशिया को घोड़े और एक पारंपरिक बग्गी भी भेंट करने की घोषणा की। दोनों मंत्रियों ने कहा कि उनके बीच उच्च स्तरीय संवाद से हिंद-प्रशांत क्षेत्र की शांति, स्थिरता और समृद्धि में योगदान मिलेगा।

भ्रष्टाचार के 3 मामलों में हसीना को 21 साल सजा

ढाका, एजेंसी

- बांग्लादेश की एक अदालत ने भूमि आवंटन में गड़बड़ी से जुड़े मामले में सुनाई सजा
- हसीना के बेटे जॉय और बेटी साइमा को भी पांच-पांच साल कैद की सजा

बांग्लादेश की एक अदालत ने अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना को एक सरकारी आवास परियोजना के लिए भूमि आवंटन में अनियमितताओं से जुड़े भ्रष्टाचार के तीन मामलों में गुरुवार को 21 साल की जेल की सजा सुनाई। ढाका विशेष न्यायाधीश न्यायालय-5 के न्यायाधीश मोहम्मद अब्दुल्ला अल मामून ने हसीना (78) को पूर्वांचल स्थित राजुक न्यू टाउन परियोजना में भ्रष्टाचार के तीन मामलों में सात-सात साल की सजा सुनाई। न्यायाधीश ने कहा कि हसीना को ये सजाएं एक के बाद एक काटनी होंगी और कुल सजा 21 साल की होगी। न्यायाधीश ने हसीना पर प्रत्येक मामले में एक लाख टका का जुर्माना भी लगाया और राशि जमा न करने पर 18 महीने अतिरिक्त जेल में रहने की सजा सुनाई। न्यायाधीश मामून ने हसीना के बेटे साजिब वाजेद जॉय और बेटी साइमा वाजेद पुतुल को भी राजधानी के पास स्थित आवासीय परियोजना में उनके खिलाफ दर्ज मामलों में पांच-पांच साल कैद की सजा सुनाई। जॉय और पुतुल पर एक-एक लाख टका का जुर्माना लगाया गया और इसका भुगतान न करने पर एक महीने अतिरिक्त जेल की सजा सुनाई गई। न्यायाधीश ने अपने फैसले में कहा, भूखंड शेख हसीना को बिना किसी आवेदन के और गैरकानूनी तरीके से आवंटित किया गया था। दस दिन पहले एक विशेष न्यायाधिकरण ने पिछले वर्ष छात्रों के नेतृत्व वाले विरोध प्रदर्शनों पर हसीना सरकार की क्रूर कार्रवाई को लेकर 'मानवता के विरुद्ध अपराध' के लिए पूर्व प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति में उन्हें मौत की सजा सुनाई थी। हसीना ने आरोपों को पक्षपातपूर्ण और राजनीति से प्रेरित बताया था। हसीना पिछले साल हुए विरोध प्रदर्शनों के चलते अपनी पार्टी की सरकार गिरने के बाद अगस्त में भारत चली गई थीं।

वहीं, भारत ने कहा था कि वह हसीना के प्रत्यर्पण के अंतरिम सरकार के अनुरोध पर गौर कर रहा है। वह बांग्लादेश के लोगों के सर्वोत्तम हितों को सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

19 अन्य को भी सुनाई सजा

हसीना परिवार के अलावा, पूर्व आवास राज्य मंत्री शरीफ अहमद तथा आवास मंत्रालय और राजधानी उन्नयन कर्तीपक्का के अधिकारियों सहित कुल 20 अन्य लोगों के खिलाफ भी मुकदमा चलाया गया। इनमें से एक को छोड़कर सभी को विभिन्न अवधि के कारावास की सजा सुनाई गई। इस मामले में मंत्रालय के एक कनिष्ठ अधिकारी को बरी किया गया। केवल एक आरोपी ने अदालत में व्यक्तिगत रूप से मुकदमे का सामना किया और उसे तीन वर्ष की सजा सुनाई गई।

हांगकांग: इमारत में आग से मरने वालों की संख्या 65 हुई

हांगकांग, एजेंसी

- 279 अब भी लापता, शहर के आधुनिक इतिहास की सबसे भयावह घटनाओं में से एक

हांगकांग के एक बहुमंजिला आवासीय परिसर में लगी भीषण आग में मरने वालों की संख्या बढ़कर 65 हो गई है। दमकलकर्मी दूसरे दिन भी बहुमंजिला आवासीय परिसर लगी आग को बुझाने में जुटे रहे। इस अग्निकांड को शहर के आधुनिक इतिहास की सबसे भयानक आग की घटनाओं में से एक बताया जा रहा है।

ताई पो जिले में हांगकांग की सीमा से सटे उत्तरी उपनगर में स्थित वांग फुक कोर्ट परिसर के कुछ फ्लैट से गुरुवार शाम तक घना धुआं उठता देखा गया। इमारतों के अंदर आग की लपटें भी दिखाई दे रही थीं। इस परिसर में कई बहुमंजिला इमारतें हैं जहां हजारों लोग रहते हैं। हांगकांग के नेता जॉन ली ने बताया कि गुरुवार सुबह तक 279 लोगों के लापता होने की सूचना थी। कुछ इमारतों में बचाव कार्य जारी है, लेकिन संवाददाता सम्मेलन में अधिकारियों ने यह नहीं बताया कि कितने लोग अभी भी लापता हैं या कितने अंदर फंसे हुए हैं। दमकलकर्मी बुधवार दोपहर से ही आग पर काबू पाने की कोशिश कर रहे हैं। आग सबसे पहले बांस की मचान और निर्माण जालियों में लगी जिसके बाद परिसर की आठ में से सात इमारतों में तेजी से फैल गई। चार इमारतों में आग लगभग बुझाई जा चुकी है।

शंघाई में भारतीय राजदूत ने चीनी प्रोफेसर के साथ की बैठक

बीजिंग। शंघाई में भारतीय राजदूत प्रतीक माथुर ने संस्कृत, पाली और भारतीय संस्कृति में विशेषज्ञता रखने वाले चीनी शिक्षाविदों से मुलाकात की तथा सहयोग के अवसरों पर चर्चा की। वाणिज्य दूतावास ने बताया कि माथुर ने बीजिंग फॉरेन स्टडीज विवि में संस्कृत और पाली के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. झोउ लीकुन तथा नरसिंह वर्कशॉप के संस्थापक ली हांसी के साथ बैठक की। बैठक में संस्कृत अध्ययन, बौद्ध साहित्य और नवीन सांस्कृतिक परियोजनाओं को बढ़ावा देने में सहयोग के अवसरों पर चर्चा हुई। डॉ. झोउ ने भारतीय खगोल विज्ञान, कैलेंडर और साहित्य पर अपने शोध से प्राप्त अंतर्दृष्टि साझा की।

रूस से भ्रामक झंडों वाले 30 जहाजों के जरिये भारत को 2.1 अरब यूरो का तेल हुआ निर्यात

नई दिल्ली, एजेंसी

- यूरोपीय शोध संस्थान सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयरने दी जानकारी

भारत ने वर्ष 2025 के पहले नौ महीनों में रूस से 54 लाख टन कच्चे तेल का आयात किया, जिसका मूल्य 2.1 अरब यूरो रहा। यह तेल पहचान छुपाने के मकसद से भ्रामक झंडों के तहत संचालित 30 जहाजों के जरिये भेजा गया था। यूरोपीय शोध संस्थान 'सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर' (सीआरईए) ने बृहस्पतिवार को अपनी एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी।

भ्रामक झंडे का मतलब है कि जहाज अपने असली देश का झंडा न लगाकर किसी दूसरे देश का झंडा लगाकर चलता है, ताकि उसकी पहचान एवं स्वामित्व का पता न चल सके। रिपोर्ट के मुताबिक, रूस का लगातार बढ़ता हुआ 'छद्म जहाजी बेड़ा' अब उसके तेल निर्यात का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। हेलसिंकी स्थित सीआरईए ने कहा कि जनवरी-सितंबर, 2025 के दौरान 113 रूसी जहाजों ने इन गलत झंडों का इस्तेमाल किया।

सितंबर में 90 रूसी छद्म जहाज नकली झंडों के तहत हुए संचालित

सितंबर 2025 के अंत में 90 रूसी छद्म जहाज नकली झंडों के तहत संचालित हो रहे थे। यह संख्या दिसंबर 2024 के मुकाबले छह गुना है। सीआरईए ने कच्चा तेल लेकर भारत आने वाले जहाजों की संख्या के बारे में पूछे जाने पर कहा कि इनमें से 30 जहाज भारत तेल लेकर आए। भारत को 2.1 अरब यूरो मूल्य का तेल भेजा गया, जो इस श्रेणी में सबसे बड़ा आयात है। फरवरी, 2022 में यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद रूस पर लगे प्रतिबंधों और यूरोपीय मांग कम होने से भारतीय कंपनियों को तेल काफी रियायती दरों पर मिलने लगा।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 28 नवंबर, शुक्रवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- मार्गशीर्ष, पक्ष-शुक्ल पक्ष, अष्टमी 29 नवंबर 00.15 तक तत्पश्चात नवमी।

आज का पंचांग

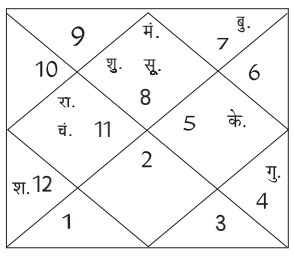

दिशाशूल- पश्चिम, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल- मेष, वृषभ, सिंह, कन्या, धनु, कुंभ।
ताराबल- अश्विनी, कृतिका, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र- शतभिषा 29 नवंबर 02.49 तक तत्पश्चात पूर्व भाद्रपद।

मेष आज धर्म-कर्म के प्रति आपकी आस्था बढ़ेगी। परिजनों का भरपूर सहयोग मिलेगा। दांपत्य संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। कार्यक्षेत्र में आप महत्वपूर्ण मीटिंग में सम्मिलित हो सकते हैं। रचनात्मक कार्यों में आप रुचि लेंगे।

वृष आज कारोबार में अपेक्षा से अधिक धन लाभ मिलेगा। आय के नए स्रोत विकसित होंगे। युवा जातक अपने करियर को लेकर अत्यंत सक्रिय रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी रहेगी। परिवार में सुख-शांति का वातावरण रहेगा।

मिथुन आज बड़े बुजुर्ग लोगों की सलाह आपके लिए अत्यंत शुभ रहेगी। नई उपलब्धियां मिलने से आप उत्साहित रहेंगे। जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में उत्तम परिणाम मिलेंगे। आपके काम की गुणवत्ता में वृद्धि होगी। घर में मांगलिक कार्यक्रम हो सकते हैं।

कर्क आज आपके काम समय पर पूरे न होने से नुकसान होगा। रुका हुआ धन आपको वापस मिलने में परेशानी होगी। नया कार्य आरंभ करने में जल्दबाजी न करें। मन में नकारात्मक विचार उत्पन्न होंगे। बच्चे पढ़ाई को लेकर लापरवाही कर सकते हैं।

सिंह आज विदेश में रहने वाले लोगों को अच्छी जॉब मिल सकती है। सरकारी कार्यों में आपको सफलता मिलने की संभावना है। दांपत्य संबंधों के लिए दिन बहुत ही अच्छा है। रिश्तेदारों के माध्यम से आपको धन लाभ हो सकता है।

कन्या आज काम की अधिकता के बावजूद आप परिवार को समय देंगे। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। रचनात्मक कार्यों में मन लगेगा। आपका स्वास्थ्य बेहतर रहेगा। घर की मरम्मत की योजना बना सकते हैं। आपकी प्रतिभा की कार्यक्षेत्र में प्रशंसा होगी।

तुला आज पैतृक धन-संपदा में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में आपका विश्वास बढ़ेगा। कानूनी मामलों में आपको विजय मिलने की संभावना है। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी रहेगी। संतान की उन्नति से आपका मन प्रसन्न होगा।

वृश्चिक आज अपना व्यवहार किसी के प्रति खराब न करें। अपनी कार्यक्षमता पर विश्वास रखें। माता की सेहत को लेकर चिंता हो सकती है। आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए। छात्र पढ़ाई को लेकर थोड़ी लापरवाही कर सकते हैं।

धनु आज जॉब कर रहे लोगों को उच्च पद प्राप्त होगा। आपकी कोई महत्वाकांक्षा पूर्ण हो सकती है। आप काफी मेहनत करेंगे। धार्मिक विषयों पर आप विशेष रुचि लेंगे। आप अपने काम को लेकर समर्पित रहेंगे। ऑनलाइन शॉपिंग में धन खर्च कर सकते हैं।

मकर आज खर्चीली वृत्ति के कारण आपकी बचत पर बुरा असर पड़ेगा। मित्रों के साथ छोटी सी बात पर झगड़ा हो सकता है। पारिवारिक सदस्यों के साथ पर्यटन की योजना बनाएंगे। रिश्तेदारों के ऊपर आपको धन खर्च करना पड़ सकता है।

कुंभ आज नौकरीपेशा लोगों को यात्रा करनी पड़ेगी। मनोरंजन में आप काफी समय बिताएंगे। समाज में आपका सम्मान बढ़ेगा। पैतृक संपत्ति को लेकर विवाद कम होंगे। रुकी हुई धनराशि आपको वापस मिल सकती है। प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी।

मीन आज बेरोजगारों के ऊपर परिवार का दबाव बढ़ेगा। अति-आत्मविश्वास के कारण आप परिस्थितियों का आकलन करने में चूक कर सकते हैं। सरकारी जॉब करने वाले लोगों को परेशानी होगी। सहकर्मी आपको नीचा दिखाने का प्रयास करेंगे।

सुडोकू-174

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

			2					
							5	
3								
		7		3				
				1				
					5			
								4
	2				8			

सुडोकू - 173 का हल

1	2	3	9	8	7	6	4	5
8	6	7	4	5	1	3	2	9
5	9	4	6	3	2	1	7	8
2	3	5	8	1	4	7	9	6
9	8	6	3	7	5	2	1	4
4	7	1	2	9	6	5	8	3
7	1	8	5	6	9	4	3	2
6	4	9	1	2	3	8	5	7
3	5	2	7	4	8	9	6	1

मुख्य कोच केवल टीम को तैयार कर सकता है । कोच टीम को तैयार कर सकता है और वह अपने अनुभव से खिलाड़ियों को बता सकता है । लेकिन मैदान में जाकर प्रदर्शन करना खिलाड़ियों का ही काम है ।
–सुनील गावस्कर

स्टेडियम

मुरादाबाद, शुक्रवार ,28 नवंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में भारतीय महिला बधिर क्रिकेट टीम की सदस्यों को मिठाई खिलाई, जिन्होंने हाल ही में पहला टी-20 वर्ल्ड कप जीता था। एजेंसी

गृहमंत्री ने बधिर टीम को बधाई दी

नई दिल्ली : गृहमंत्री अमित शाह ने बृहस्पतिवार को भारतीय टीम को तोक्यो में 25वें ग्रीष्मकालीन बधिर ओलंपिक 2025 में नौ स्वर्ण समेत 20 पदक जीतने पर बधाई दी है । शाह ने एक्स पर लिखा हमारे बधिर ओलंपियनों का शानदार प्रदर्शन। भारतीय टीम को तोक्यो में 25वें ग्रीष्मकालीन बधिर ओलंपिक 2025 में नौ स्वर्ण, सात रजत और चार कांस्य समेत 20 पदक जीतने पर बधाई। उन्होंने लिखा आपकी अप्रतिम सफलता से हमारे खिलाड़ियों में नये उत्साह का संचार होगा। भविष्य के लिये मेरी शुभकामनायें।

भव्या ने तैराकी में जीता सातवां स्वर्ण पदक

जयपुर : जैन यूनिवर्सिटी की भव्या सचदेवा ने बृहस्पतिवार को यहां खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी खेलों (केआईयूजी) में व्यक्तिगत तैराकी स्पर्धाओं में दो स्वर्ण पदक जीतने के बाद महिलाओं की चार गुणा 100 मीटर मेडले रिले में एक और सोने का तमगा जीता जिससे उनके कुल पदकों की संख्या सात हो गई। भव्या ने पहले दो दिनों में एक व्यक्तिगत व एक रिले स्वर्ण पदक जीता था। उन्होंने सवाई मानसिंह स्टेडियम में महिलाओं के 800 मी फ्रीस्टाइल वर्ग में 9 :37 .41 सेकेंड के समय से स्वर्ण जीतने की शुरुआत की।

घरेलू स्तर के सीनियर खिलाड़ियों को टेस्ट टीम में मिल सकती है जगह

दक्षिण अफ्रीका से दोनों मैचों में करारी हार के बाद चल रहा मंथन, तीसरे नंबर की बल्लेबाजी पर सबसे ज्यादा चिंता

नई दिल्ली, एजेंसी

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ श्रृंखला में दोनों मैच में करारी पराजय झेलने के बाद घरेलू स्तर के कुछ विशेषज्ञ खिलाड़ियों को भारतीय टेस्ट टीम में जगह मिल सकती है क्योंकि अजीत अगरकर की अगुवाई वाली चयन समिति बल्लेबाजी क्रम में तीसरे नंबर जैसे महत्वपूर्ण स्थान के प्रति अपने रवैये में बदलाव करने के लिए तैयार है। पिछले तीन दशक में राहुल द्रविड़ और चेतेश्वर पुजारा जैसे बल्लेबाजों ने नंबर तीन पर अपनी भूमिका बखूबी निभाई थी लेकिन अब यह स्थान दांव पर लगा है।

करुण नायर इंग्लैंड में चार टेस्ट मैच खेलने के बावजूद प्रभाव छोड़ने में नाकाम रहे जबकि बी साई सुदर्शन ने 11 पारियों में 27 की औसत से यह दिखा दिया है कि वह अभी भी प्रगति की राह पर हैं। सुदर्शन के साथ तकनीक से जुड़ी कुछ समस्याएं हैं विशेष कर उपमहाद्वीप की पिचों पर स्पिन गेंदबाजों के सामने उनकी कमजोरी खुलकर उजागर हो गई है। उन्हें टेस्ट मैचों के लिए तैयार होने के लिए घरेलू क्रिकेट और भारत ए के साथ समय बिताने की जरूरत है। टेस्ट क्रिकेट ऐसी जगह नहीं है जहां प्राथमिक स्तर की छोटी-छोटी गलतियों को सुधारा जाए और यह खिलाड़ी लगातार गलतियों को दोहरा रहे हैं जिसके कारण बदलाव जरूरी हो गया है।

इस बात की प्रबल संभावना है कि चयन समिति अब बल्लेबाजी को मजबूत करने के लिए घरेलू स्तर के कुछ सीनियर खिलाड़ियों के नाम पर गंभीरता से विचार करेगी। सरफराज खान और अभिमन्यु ईश्वरन के लिए दरवाजे लगभग बंद हो चुके हैं, लेकिन घरेलू क्रिकेट में अनुभवी तीन खिलाड़ी रुतुराज गायकवाड़, रजत पाटीदार और रिंकू सिंह टीम प्रबंधन का ध्यान अपनी तरफ खींच सकते हैं। लाल गेंद के नए खिलाड़ियों में स्मरण रविचंद्रन (प्रथम श्रेणी औसत 78) और यश राठौड़ (पिछले रणजी सत्र में 960 रन) ने मध्यक्रम में अच्छा प्रदर्शन किया है।

पीटीआई ने इसके बारे में जानकारी रखने वाले एक पूर्व चयनकर्ता से जब इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा लोग अभिमन्यु और सरफराज को नहीं चुनने के लिए अजीत और उनकी समिति को दोषी ठहरा सकते हैं, लेकिन क्या मुख्य कोच (गौतम गंभीर) और नए कप्तान (शुभमन गिल) को उनकी क्षमता पर भरोसा है। अगर नहीं, तो अकेले अजीत क्या करेंगे। लेकिन संभवतः अब समय आ गया है कि एक बार फिर से रणनीति बनाई जाए और ऑलराउंडरों के बजाय विशेषज्ञ खिलाड़ियों पर भरोसा किया जाए। उन्होंने कहा 'एक बात स्पष्ट कर दूं कि कपिल देव अंतिम विश्वस्तरीय ऑलराउंडर थे और टेस्ट स्तर पर अंतिम सक्षम ऑलराउंडर मनोज प्रभाकर थे जो बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों में आगाज कर सकते थे। जहां तक हार्दिक पांड्या का सवाल है तो उनका शरीर उन्हें टेस्ट क्रिकेट में खेलने की अनुमति नहीं दे रहा है। उन्होंने कहा लेकिन नितीश रेड्डी टुकड़ों में खेलने वाले खिलाड़ी हैं। वह ज़्यादा से ज़्यादा टी20 खेल सकते हैं, वनडे नहीं और गौतम को यह बात समझने की ज़रूरत है। रेड्डी का 10 टेस्ट मैचों में बल्लेबाजी औसत 26 है, जो मुख्य रूप से ऑस्ट्रेलिया में लगाए गए शतक के कारण है। उन्होंने 15 पारियों में केवल 86 ओवर गेंदबाजी की है, जो औसतन छह ओवर प्रति पारी भी नहीं है। वर्तमान में भारत को नंबर तीन पर एक मजबूत बल्लेबाज की जरूरत है। इसके अलावा उसे नंबर पांच पर भी एक अच्छे रिजर्व बल्लेबाज की जरूरत है। जहां तक नंबर तीन का सवाल है तो रुतुराज गायकवाड इस स्थान के लिए अच्छे विकल्प हो सकते हैं। उन्होंने अभी तक 43 प्रथम श्रेणी मैच में 45 से अधिक की औसत से रन बनाए हैं। वह इस सत्र में पहले ही दो शतक और रणजी ट्रॉफी में 90 से अधिक की औसत से रन बना चुके हैं। वह तीसरे स्थान के लिए सही मानसिकता वाले खिलाड़ी नजर आते हैं। दूसरा नाम रजत पाटीदार का है, जिनका टेस्ट मैचों में पहला प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में उनका औसत भी 45 से अधिक है और वह भारतीय मध्य क्रम को मजबूती प्रदान कर सकते हैं। एक और खिलाड़ी रिंकू सिंह है जिन्होंने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में लगभग 60 की औसत से रन बनाए हैं। दक्षिण अफ्रीका से हारने के बाद भारतीय टेस्ट टीम में काफी बदलाव की संभावना है और यह देखना दिलचस्प होगा की टीम प्रबंधन किन खिलाड़ियों पर अपना भरोसा जताता है।

पंत ने दक्षिण अफ्रीका से हार के लिए माफी मांगी

नई दिल्ली। भारतीय टेस्ट टीम के उपकप्तान ऋषभ पंत ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खिलाड़ियों के खराब प्रदर्शन के लिए माफी मांगी और वादा किया कि टीम मजबूत वापसी के लिए फिर से संगठित होगी, अपना ध्यान केंद्रित करेगी और खुद को फिर से व्यवस्थित करेगी। भारत को मंगलवार को गुवाहाटी में दूसरे टेस्ट के साथ समाप्त हुई सीरीज में 0-2 से हार का सामना करना पड़ा। इस मैच में पंत ने भारतीय टीम की अगुवाई की क्योंकि नियमित कप्तान शुभमन गिल गर्दन की चोट के कारण इस मैच में नहीं खेल पाए थे। भारत यह मैच रिकॉर्ड 408 रन से हार गया था जिससे उसकी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचने की संभावना को भी करारा झटका लगा है। पंत को इस सीरीज के दौरान शॉट चयन में लापरवाही बरतने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा था। पंत ने एक्स पर अपनी एक पोस्ट में कहा इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि पिछले दो सप्ताह में हमने अच्छी क्रिकेट नहीं खेली। एक टीम और व्यक्तिगत खिलाड़ी के रूप में हम हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहते हैं और करोड़ों भारतीयों के चेहरे पर मुस्कान लाना चाहते हैं। उन्होंने कहा माफी चाहता हूं कि हम इस बार उम्मीदों पर खरे नहीं उतर सके, लेकिन खेल आपको एक टीम और खिलाड़ी के तौर पर सीख देता है, परिस्थितियों से सामंजस्य से बिठाना और आगे बढ़ना सिखाता है। हम जानते हैं कि यह टीम क्या करने में सक्षम है। हम एक टीम और एक खिलाड़ी के रूप में मजबूत और बेहतर वापसी करने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे, फिर से संगठित होंगे, फिर से ध्यान केंद्रित करेंगे और फिर से तैयार होंगे। पंत ने कहा कि भारत का प्रतिनिधित्व करना खिलाड़ियों के जीवन का सबसे बड़ा सम्मान है। भारत को अब अगले साल तक कोई टेस्ट मैच नहीं खेलना है।

गंभीर के बचाव में उतरे अश्विन, कहा- कोच क्या कर सकता है?

नई दिल्ली : पूर्व ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में 0-2 से मिली हार के बाद आलोचनाओं से घिरे भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर का बचाव करते हुए कहा कि ऐसे समय में उन्हें बर्खास्त करने की मांग करना सही नहीं है, जब खिलाड़ियों ने पर्याप्त जिम्मेदारी नहीं उठाई है। भारत को मंगलवार को गुवाहाटी में समाप्त हुए दूसरे टेस्ट मैच में रिकॉर्ड 408 रन से हार का सामना करना पड़ा। गंभीर की आलोचना टीम में अधिक से अधिक ऑलराउंडर को शामिल करने को लेकर हो रही है जिससे टीम का संतुलन प्रभावित हो रहा है। अश्विन ने हालांकि इस पूर्व सलामी बल्लेबाज का समर्थन करते हुए कहा कि उन्हें हटाया नहीं जाना चाहिए। गंभीर का कार्यकाल 2027 तक है। अश्विन ने अपने यूट्यूब कार्यक्रम 'ऐश की बात' में कहा हम ऐसा क्यों कर रहे हैं। यह एक खेल है। टीम का प्रबंधन करना इतना आसान नहीं होता है और उन्हें भी इस परिणाम से निराशा है। हमें यह समझना होगा। किसी को बर्खास्त करना अच्छा लग सकता है, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए।

रांची के जेएससीए इंटरनेशनल स्टेडियम में भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच एकदिवसीय सीरीज़ से पहले मैच के लिए अभ्यास करते विराट कोहली। एजेंसी

श्रीकांत और उन्नति अंतिम आठ में

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप

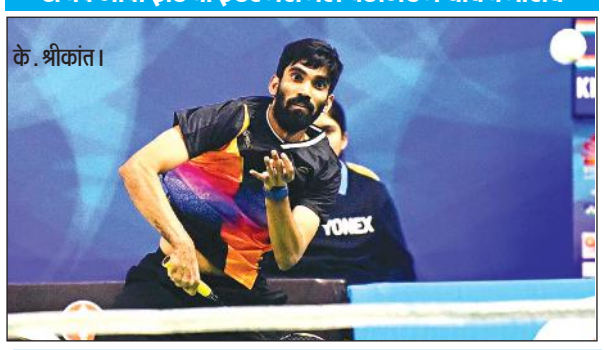

के. श्रीकांत।

- तन्वी शर्मा और मनराज सिंह ने किया बड़ा उलटफेर
- प्रियांशु ने भी क्वार्टर फाइनल में स्थान पक्का किया

अमृत विचार : सैयद मोदी बैडमिंटन चैंपियनशिप में गुरुवार भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। पूर्व चैंपियन के. श्रीकांत, प्रियांशु राजावत और शीर्ष वरीय उन्नति हुड्डा जहां क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए वहीं तन्वी शर्मा और मनराज सिंह ने बड़ा उलटफेर कर दिया। तन्वी ने जापान की नोजोमी ओकुहारा और मनराज ने हमवतन एचएस प्रणय पराजित कर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया।

पांचवीं वरीयता प्राप्त के. श्रीकांत ने प्री-क्वार्टर फाइनल मुकाबले में हमवतन सनीथ दयानंद को एकतरफा मुकाबले में 21-6, 21-16 से हराया। 2016 के चैंपियन श्रीकांत ने नेट पर बेहतरीन नियंत्रण और आक्रामक खेल दिखाया। क्वार्टर फाइनल में उनका मुकाबला प्रियांशु राजावत से होगा। प्रियांशु ने कड़े संघर्ष में बीएम राहुल भारद्वाज को 21-16, 10-21, 21-12 से मात दी। दिन का सबसे बड़ा उलटफेर उभरते भारतीय खिलाड़ी मनराज सिंह ने किया। युगांडा इंटरनेशनल चैलेंज के विजेता मनराज ने तीसरी वरीयता प्राप्त 2023 विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता एचएस प्रणय को 21-15, 21-18 से हराकर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया।

इसी तरह भारतीय युवा स्टार तन्वी शर्मा ने रोमांचक मुकाबले में 2023 की चैंपियन दूसरी वरीयता प्राप्त जापान की नोजोमी ओकुहारा को 13-21, 21-16, 21-19 से शिकस्त दी। जूनियर विश्व चैंपियनशिप 2025 और यूएस ओपन की उपविजेता तन्वी ने आक्रामक सर्विस और सटीक शॉट्स से ओकुहारा को लगातार दबाव में रखा। शीर्ष वरीय भारतीय खिलाड़ी उन्नति हुड्डा ने भारत की तस्नीम मीर को आसानी से 21-15, 21-10 से हराकर अंतिम आठ में जगह पक्की की। हांगकांग की लो सिन यान हैप्पी ने भारत की अनुपमा उपाध्याय को हराया।

उन्नति हुड्डा। अमृत विचार

नवी मुंबई व वडोदरा में नौ जनवरी से आयोजित होगा डब्ल्यूपीएल

नई दिल्ली : महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) का चौथा चरण नौ जनवरी से नवी मुंबई और वडोदरा में आयोजित किया जाएगा। आमतौर पर फरवरी-मार्च की विंडो में होने वाली इस लीग को सात फरवरी से शुरू होने वाले पुरुषों के टी-20 विश्व कप के कारण इस साल आगे बढ़ा दिया गया है। डब्ल्यूपीएल अध्यक्ष जयेश जॉर्ज ने यहां नीलामी के पहले भाषण में घोषणा की आगामी डब्ल्यूपीएल नवी मुंबई में खेली जाएगी और फाइनल वडोदरा में आयोजित होगा। लीग एक बार फिर कारवां मॉडल में खेली जाएगी। टूर्नामेंट का पहला चरण डी वाई पाटिल स्टेडियम में होगा जहां इस महीने की शुरुआत में भारत ने महिला वनडे विश्व कप जीता था। उसके बाद मुकाबले वडोदरा में होंगे और पांच फरवरी को फाइनल खेला जाएगा। डब्ल्यूपीएल के अभी तक तीन चरण खेले गए हैं जिसमें मुंबई इंडियंस मौजूदा चैंपियन है।

दीप्ति तीन करोड़ 20 लाख रुपये में यूपी वारियर्स में लौटीं

नई दिल्ली, एजेंसी

डब्ल्यूपीएल नीलामी

- चरणी, एमेलिया केर और लैनिंग को भी अच्छे दाम मिले

भारत की स्टार हरफनमौला दीप्ति शर्मा बृहस्पतिवार को महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) की नीलामी में सबसे महंगी खिलाड़ी बनी जबकि वनडे विश्व कप स्टार श्री चरणी और लौरा वोल्वार्ट को भी अच्छे दाम मिले।

यूपी वारियर्स ने 'राइट टू मैच' कार्ड का इस्तेमाल करके तीन करोड़ 20 लाख रुपये में खरीदा। अब वह डब्ल्यूपीएल के इतिहास में स्मृति मंधाना के बाद सबसे महंगी भारतीय खिलाड़ी हैं। मंधाना को उनसे 20 लाख रूपये अधिक मिले थे। यूपी वारियर्स के क्रिकेट संचालन निदेशक क्षेमल वैंगनकर ने कहा हमें इसी के आसपास बोली लगने की उम्मीद थी। इसमे कोई शक नहीं था कि हम दीप्ति को वापिस चाहते थे। मुंबई इंडियंस ने पिछले साल संयुक्त रूप से सर्वाधिक विकेट लेने वाली न्यूजीलैंड की हरफनमौला एमेलिया केर को तीन करोड़ रूपये में खरीदा। केर 2023 और 2025 में खिताब जीतने वाली मुंबई टीम का हिस्सा थी। यूपी वारियर्स ने अनुभवी हरफनमौला शिखा पांडे को दो करोड़ 40 लाख रूपये में खरीदा जिन्होंने आखिरी बार भारत के लिये 2023 में खेला था। विश्व कप में भारत की खिताबी जीत की सूत्रधारों में रही लेग स्पिनर श्री चरणी को दिल्ली कैपिटल्स ने 30 लाख रूपये के उनके बेसप्राइज से कई गुना अधिक एक करोड़ 30 लाख रूपये में खरीदा। विश्व कप उपविजेता दक्षिण अफ्रीका की सलामी बल्लेबाज लौरा वोल्वार्ट को दिल्ली कैपिटल्स ने एक करोड़ 10 लाख रूपये में खरीदा। दिल्ली ने वेस्टइंडीज की बल्लेबाज चिनेले हेनरी को एक करोड़ 30 लाख रूपये में और भारतीय हरफनमौला स्नेह राणा को 50 लाख रूपये में खरीदा। आस्ट्रेलिया की मेग लैनिंग को यूपी वारियर्स ने एक करोड़ 90 लाख रूपये में खरीदा जबकि गुजरात टाइटंस ने न्यूजीलैंड की सोफी डेवाइन को गुजरात टाइटंस ने दो करोड़ रूपये में खरीदा । वारियर्स के पास नीलामी के लिये 14 करोड़ 50 लाख रूपये का पर्स था। उन्होंने एक बार फिर 'राइट टू मैच' कार्ड का इस्तेमाल करके इंग्लैंड की स्पिनर सोफी एक्सेलेटन को 85 लाख और तेज गेंदबाज क्रांति गौड़ को 50 लाख में खरीदा।

एमबाप्पे के चार गोलों से रियल मैड्रिड जीता

पेरिस, एजेंसी

चैंपियंस लीग

काइलियन एमबाप्पे ने अपने जादुई खेल का शानदार नजारा पेश करते हुए चैंपियंस लीग फुटबाल टूर्नामेंट में दूसरी सबसे तेज हैट्रिक सहित चार गोल दागकर अपनी टीम रियल मैड्रिड को जीत दिलाई। जबकि पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) और आर्सेनल भी जीत हासिल करने में सफल रहे।

एमबाप्पे ने रियल मैड्रिड की ओलंपियाकोस पर 4-3 की जीत में 22वें और 29वें मिनट के बीच तीन गोल किए। उन्होंने 60वें मिनट में अपना चौथा गोल किया। एमबाप्पे ने छह मिनट 42 सेकंड के अंतराल में तीन गोल किए लेकिन वह मामूली अंतर से चैंपियंस लीग की सबसे तेज हैट्रिक बनाने से चूक गए। रिकॉर्ड लिवरपूल के मोहम्मद सलाह के नाम है जिन्होंने अक्टूबर 2022 में रेंजर्स के खिलाफ छह मिनट 12 सेकंड में तीन गोल किए थे। एमबाप्पे की मौजूदा सत्र में चैंपियंस लीग में यह दूसरी हैट्रिक है।

वह वर्तमान सत्र में इस प्रतियोगिता में नौ गोल कर चुके हैं जो सर्वाधिक हैं। आर्सेनल ने बायर्न म्यूनिख को 3-1 से हराकर तालिका में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया है। मौजूदा चैंपियन पेरिस सेंट जर्मेन ने विटिना की हैट्रिक की मदद से टॉटेनहैम को 5-3 से हराया लेकिन लिवरपूल को एनफील्ड में पीएसवी आइंडहोवन के हाथों 4-1 से हार का सामना करना पड़ा। इंटर मिलान को भी एटलेटिको मैड्रिड के हाथों 2-1 से हार का सामना करना पड़ा, जिसके बाद केवल आर्सेनल ऐसी टीम रह गई है जिसने चैंपियंस लीग में अभी तक अपने सभी पांच मैच जीते हैं।

डब्ल्यूबीबीएल के बचे सत्र में नहीं खेलेंगी जेमिमा

ब्रिसबेन । भारत की महिला विश्व कप विजेता स्टार जेमिमा रोड्रिग्स ने अपनी साथी खिलाड़ी स्मृति मंधाना के साथ रहने के लिए ऑस्ट्रेलिया में चल रही डब्ल्यूबीबीएल (महिला बिग बैश लीग) के बचे हुए सत्र में नहीं खेलने का फैसला किया है। मंधाना की शादी टल गई है।

जेमिमा कुछ दिन पहले मंधाना की शादी में शामिल होने के लिए भारत लौटी थीं। उन्हें शादी में शामिल होने के बाद ब्रिसबेन हीट के साथ अपना सत्र पूरा करने के लिए वापस जाना था। लेकिन शादी से ठीक पहले मंधाना के पिता की तबीयत खराब हो गई जिसके कारण शादी को टालना पड़ा। इसके बाद जेमिमा ने उनके साथ रुकने का फैसला किया। ब्रिसबेन हीट ने एक बयान में कहा ब्रिसबेन हीट ने जेमिमा रोड्रिग्स के डब्ल्यूबीबीएल के बचे हुए सत्र से रिलीज करने के अनुरोध को स्वीकार कर लिया है।

जूनियर हॉकी विश्व कप दो बार की चैंपियन भारतीय टीम पहले पूल मैच में चिली के खिलाफ आज बड़ी जीत दर्ज करना चाहेगी

नौ साल बाद घरेलू धरती पर खिताब जीतने उतरेगा भारत

चेन्नई, एजेंसी

टूर्नामेंट के इतिहास में संयुक्त रूप से दूसरी सबसे सफल टीम मेजबान भारत शुक्रवार को यहां पुरुष जूनियर हॉकी विश्व कप के अपने पहले पूल मैच में चिली के खिलाफ बड़ी जीत दर्ज करके नौ साल बाद घरेलू धरती पर खिताब हासिल करने के अपने अभियान का शानदार आगाज करने की कोशिश करेगा। दो बार के चैंपियन भारत ने पिछली बार 2016 में लखनऊ में वर्तमान में सीनियर महिला टीम के कोच हरेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में यह टूर्नामेंट जीता था। मौजूदा टूर्नामेंट में भारत को पूल बी में रखा गया है और वह इस ग्रुप से आगे बढ़ने का प्रबल दावेदार है।

भारत और चिली के अलावा, ओमान और स्विट्जरलैंड पूल बी में शामिल अन्य टीमें हैं। पाकिस्तान ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए भारत का दौरा करने से इनकार कर दिया था जिसके बाद उसकी जगह पर ओमान को शामिल किया गया था।

भारत ने 2001 में होबार्ट में और 2016 में लखनऊ में खिताब जीता था। 46 साल पहले 1979 में शुरू हुए इस टूर्नामेंट में जर्मनी सबसे सफल टीम है, जिसने सात खिताब जीते हैं। भारत के अलावा अर्जेंटीना ने भी दो बार 2005 और 2021 में जूनियर विश्व कप जीता था। पाकिस्तान ने 1979 में वर्सेल्स (फ्रांस) में खेला गया पहला विश्व कप अपने नाम किया था, जबकि ऑस्ट्रेलिया ने 1997 में मिल्टन कीन्स में भारत को हराकर यह खिताब जीता था। भारत 2023 में कुआलालंपुर में खेले गए पिछले जूनियर विश्व कप में चौथे स्थान पर रहा था। वह कांस्य पदक के मैच में स्पेन से 1-3 से हार गया था। जर्मनी तब चैंपियन बना था।

इस बार विश्व कप चेन्नई और मदुरै में खेला जाएगा जिसमें रिकॉर्ड 24 टीम खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी। टीमों को छह ग्रुप में बांटा गया है। प्रत्येक ग्रुप में चार टीमों को रखा गया है जो राउंड रोबिन आधार पर एक दूसरे का सामना करेंगी। प्रत्येक ग्रुप से शीर्ष पर रहने वाली टीम तथा दूसरे स्थान पर रहने वाली दो सर्वश्रेष्ठ टीम क्वार्टर फाइनल में जगह बनाएंगी। विश्व रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज भारत खिताब का प्रबल दावेदार है। जर्मनी अंडर-21 वर्ग में दुनिया की शीर्ष रैंकिंग वाली टीम है। श्रीजेश टीम की इस कमजोरी से वाकिफ हैं और उन्होंने इसके लिए उचित कदम भी उठाए हैं। श्रीजेश ने मलेशिया से लौटने पर कहा था, ''मलेशिया में पेनल्टी कॉर्नर पर गोल नहीं कर पाना चिंता का विषय था, लेकिन हमने इस समस्या का समाधान कर लिया है। हमने पेनल्टी कॉर्नर और पेनल्टी कॉर्नर डिफेंस, दोनों पर विशेष ध्यान दिया है। हमारे पास अच्छे ड्रैग-फ्लिकर हैं, जो दिन में 200-300 बार फ़्लिक करते हैं। उन्होंने टूर्नामेंट से अनुभव हासिल किया है और अब बेहतर तरीके से तैयार हैं।'' भारतीय कप्तान रोहित को पेनल्टी कॉर्नर पर अतिरिक्त जिम्मेदारी लेनी होगी, क्योंकि सबसे अनुभवी ड्रैग फ्लिकर अरिजीत सिंह हुंडल कंधे की चोट के कारण बाहर हैं। लंबे कद के फारवर्ड हुंडल ने सीनियर स्तर पर 21 मैच खेले हैं और पांच गोल किए हैं। वह जूनियर स्तर पर भी गोल करने वाले खिलाड़ी रहे हैं।

हमें अपना स्वाभाविक खेल दिखाना होगा : श्रीजेश

चेन्नई : भारत के मुख्य कोच पी आर श्रीजेश ने एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप से पहले अपनी टीम की कमियों को स्वीकार किया, लेकिन कहा कि नौ साल बाद अपनी धरती पर खिताब जीतने के लिये टीम को अपना स्वाभाविक खेल दिखाना होगा। अर्जेंटीना के साथ टूर्नामेंट की दूसरी सबसे कामयाब टीम भारत ने होबर्ट में 2001 के बाद लखनऊ में 2016 में खिताब जीता था। भारत को पूल बी के पहले मैच में शुक्रवार को चिली से खेलना है। अंडर 21 वर्ग में भारत दूसरी रैंकिंग वाली टीम है जबकि सात बार की और पिछली चैम्पियन जर्मनी शीर्ष पर है। चिली विश्व रैंकिंग में 18वें स्थान पर है। उन्होंने कहा रैंकिंग से कुछ पता नहीं चलता और मैच के दिन प्रदर्शन ही मायने रखता है।